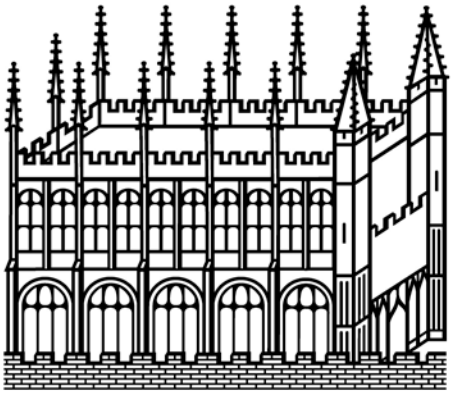


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13 F 29

Hindi

Sans 2



Jataka candrika · 13 F 29

ज्ञानचन्द्रिका

श्रीमद्राजा शत्रुशल्यसिंह की आज्ञानुसार श्रीशम्भुनाथ कवि कृत

ज्ञानचन्द्रिका

नामक ग्रंथ

जिसमें ज्ञानके साधनोंका तथा ज्ञानके स्वरूपका और ज्ञानके साधनोंसे उत्पन्न हुई ज्ञानकी स्थितिका वर्णन है

श्रीयुत मुंशी नवलकिशोर प्रेसीडेन्सी यन्त्रालय में छपी

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथ जातक चंद्रिका लिख्यते ॥ दोहा ॥ एकरदन गज वरवदन सुखमा सद-
नसुरेश ॥ विकट कोटि संकट हरन अमरन सरन गनेश ॥ १ ॥ गणपति चरन सरोज रज सदा रहौं अ-
नुरक्त ॥ मनवचकायक द्योस निशि मो मन मधुकर भक्त ॥ २ ॥ जड़ता आतप सौं रही मो मति लता सु-
खाय ॥ तुव प्रसाद पावस लहैं हरी हरी ह्वै जाय ॥ ३ ॥ निपट गंभीर पयोधि निधि ग्रंथ रचन के काज
॥ ताहि तरन कौं एक जग तेरे चरन जहाज़ ॥ ४ ॥ कविजस पावन कौं करन मो मति मंद उपाय ॥ ऊँचे
फल कौं पर्व ज्यौं उचकत बाँह उठाय ॥ ५ ॥ अथ राज वंश वर्णनं ॥ हरि गीत छंद ॥ सालिवा-
हन वंश वारिधि तें भयो सुख कंद ॥ धरनि को धुव धरनि हार त्रिलोक चंदन रिंद ॥ कहि क्यौं सकै
तिन कै तऊ जस भूरि पुण्य प्रभाउ ॥ जो धरै रसन अनेक कहुं हज़ार पन्नग राउ ॥ ६ ॥ दोहा ॥
तिन के सारद चंद सौं प्रगट्यो पृथ्वी चंद ॥ निज कुल कै रवि कुलन कौं दीन्हों अमित अनंद ॥ ७ ॥ दे-
वराय तिन के भये देवराय अनुरूप ॥ सेवहिं जाहि गुमान तजि भूमि लोक के भूप ॥ ८ ॥ प्रगट
भयो तिनके बहुरि भूपति भैरौं दास ॥ महा वाह गुमरह मद मरदन भैरव दास ॥ ९ ॥ प्रगट भ-
यो मृगराज सो तिन कैं तारा चंद ॥ निज प्रताप अरि करिन कौं जिन कीन्हे मद मंद ॥ १० ॥ तिनके
भौ धुव धरन कौं ज्यौं दसरथ के राम ॥ जेतवार संग्राम के विदित राव संग्राम ॥ ११ ॥ महावीर अरि-
ल दलन गुन गन को दरियाउ ॥ कनक सिंह जाहिर भयो जग में रैया राउ ॥ १२ ॥ पुहमी पालन कौं
भयो तिनकें पृथ्वी राज ॥ धरम धुरंधर धीर अति बड़ो गरीब निवाज ॥ १३ ॥ महा वाह वगि सर धनी जा को

जानकी चंद्रका

जो चं भूरि प्रभाउ ॥ देव पुरंदरतें बड़ो भयो पुरंदर राउ ॥ १४ ॥ महा वीर गंभीर अति दान दया दरियाउ ॥
तिन के जग जाहिर भयो सर दन रैया राउ ॥ १५ ॥ परम धरम को धाम ध्रुव विदित दान किरवान ॥ जीति
जीति अरि दल प्रबल कीरति करी जहान ॥ १६ ॥ ताके पंचानन सरिस प्रगटे पंच कुमार ॥ श्री रघुनाथ १
उदोत २ पुनि तीजो अचल उदार ३ ॥ १७ ॥ बहुरि जोरावर ४ सिंह जू ५ लोक पाल अन रूप ॥ भूषित पाँचो सु
तनि सों भो सर दानो भूप ॥ १८ ॥ अरि दल गंजन सुजन मन रंजन भये अपार ॥ मनों पाँच हू पंडव निलियो
आनि अवतार ॥ १९ ॥ आहि वहै रघुनाथ यह उपमा दीजे काहि ॥ देव दनुज मुनि गंधरब वरनत जाहि स-
राहि ॥ २० ॥ रन में अरजुन करन सो दान समै में होत ॥ महा वीर गंभीर मति जाहिर सिंह उदोत ॥ २१ ॥ वा-
रू कन गन गनि सकै उड़ गन गने सिराहि ॥ अचल सिंह सिर मोर के गुन गन गनेन जाहि ॥ २२ ॥ सुजस जो
रावर सिंह को वरनि सकै नहि सेस ॥ जिन जीते अरि दल प्रबल करयो अकंटक देश ॥ २३ ॥ दलि मलि
डारत दपटि कै उरद उवन के मन्य ॥ महा बली यह सिंह सो राजत सिंह समत्थ ॥ २४ ॥ लक्ष्मन कों रघु
नाथ ज्यों करि राख्यो निज यार ॥ त्यों दई रघुनाथ को अचल सिंह पर प्यार ॥ २५ ॥ विदित दान किर
वान सों अचल सिंह सिर मोर ॥ जाकी सम को दूसरो जग में लख्यो न और ॥ २६ ॥ शस्त्र शास्त्र विधि में वि-
दित काव्य कला में दक्ष ॥ जाहि लखत रन रंग में होत वि पक्ष अकक्ष ॥ २७ ॥ दीन बंधु निज बंधु को वि-
दित दया दरियाउ ॥ जाको रन में दान में चढत चौगुनों चाउ ॥ २८ ॥ तिन कवि शंभू नाथ सो मान्यो
निपट सनेह ॥ कह्यो कछु ज्योतिष हमें भाषा में करि देहु ॥ २९ ॥ तिन को आयसु पाइ कै हिये

जानकी चंद्रिका

हरषि कविशंभु ॥ भाषाजातक चंद्रिका को तब कर्यो अरंभु ॥ ३० ॥ संवत ठारह सै गये माघ मास सर
दार ॥ चौथ उज्यारी पंचमी शुभद सोम को वार ॥ ३१ ॥ इति श्री महाराज कुमार अचल सिंहाज्ञ-
या त्रिपाठी शंभुनाथ विनिर्मितायां जातक चंद्रिकायां राजवंश वर्णनं नाम प्रथमःप्रका-
शः १ ॥ दंडक ॥ मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धन मकर कुंभ मीन जानिऐं ॥ क्रमही
तैं जानियैं चर स्थिर द्विस्व भाव एक है पुरुष एक नारी पहि चानिऐं ॥ अरुन १ सित हरित पाटल पि-
डोर चारु असित पिसंग अवलखु उर आनिऐं ॥ नकुल वरन ओमलीन रसी मेषादिक क्रमतें विचारि
करि प्रगट वखानिऐं ॥ १ ॥ दोहा ॥ क्रूर एक अक्रूर क्रम जानि वार हो लेहु ॥ विषम एक सम एक पुनि
यहो रीति कहि देहु ॥ २ ॥ कुज भृगु बुधससि सूर बुध भृगु भसुत गुरु मंद ॥ मंद जीव मेषादि के ईशक
हत कवि वृंद ॥ ३ ॥ स्वगृही कन्या राशि को मिथुन राशि को तुंग ॥ ससि मरदन मुनिवर कहैं जेसव ही
के पुंग ॥ ४ ॥ अजवृष मृग कन्या कर्क मीन तुला ए सात ॥ उच्च कहे व्यादितें जिन की मति अवदात ॥
५ ॥ दिसा १० अगिनि ३ अद्वाद सौ २८ तिथि १५ सर ५ तारा २७ वीस २० ॥ दून अंसनि में भानुतें पर
म उच्च कहिर्द्स ॥ ६ ॥ सिंह वृषभ अज कन्य का चाप तुला घट जानु ॥ मूल त्रिकोनी भानुतें पंडित क-
रत वखानु ॥ ७ ॥ जौन राशि में खेट है लहे न वांसा वाहि ॥ वर्गोत्तमता को कहैं सब ज्योतिषी सराहि ॥
८ ॥ अथ द्वादश भावः ॥ दोहा ॥ प्रात बुद्ध दिन मध्य रवि पहर तीसरें मंद ॥ सदा बृहस्पति अति व-
ली होत निशा मुख चंद ॥ ९ ॥ आधी निसि उसना बली भौम निसा के अंत ॥ कालबली दून को कहैं

जाच्चं ५

जेहैं गनक महंत ॥ १० ॥ तन धन सहज सुहृद् सुतौ रिपु तिय मर नौठाउं ॥ धर्म कर्म पुनि आय व्यय कहे वार हो भाउं ॥ ११ ॥ केंद्र प्रथम घर दूसरो पन फर कहत उदार ॥ आपो क्लिम है तीसरो चौथे वही प्रकार ॥ १२ ॥

मेष	वृष	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
चर	थि	द्वि	च०	थि	द्वि	च०	थि	द्वि	च०	थि	द्वि
पु०	स्त्री	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री
रक्त	श्वे०	ह०	पा०	पां०	वि०	श्या	पी०	चि०	आ०	न०	म०
क्रूर	आ	क्रू०	आ०	क्रू०	आ०	क्रू०	आ०	क्रू०	आ०	क्रू०	आ०
मंग०	शु०	बु०	चं०	सू०	कु०	भृ०	भौ०	गु०	श०	श०	गु०

द्रव्य कहत धन भाव को औ कुटुंब कवि राद् ॥ सहज परा क्रम नीसरो याप प्रगट पुनि भाद् ॥ १३ ॥ मातृ भौन सु ख मित्र कहि चौथो बंधु पताल ॥ पंचम को सुत बुद्धि घर भाषत गुनी रसाल ॥ १४ ॥ छठें भौन को कहत हैं जहं लौं रिपु पर जाद् ॥ बहुरि लोग मातुल कहत बड़े बड़े कविराद् ॥ १५ ॥ द्यून मदन जामित्र कहि अस्त सातवों भौन ॥ रंध्र अरिष्टो छिद्र कहि भौन आठवों जान ॥ १६ ॥ भाग्य धर्म अरु पुनि कहि नवएं को कविराद् ॥ तात राज कहि कर्म पुनि दसएं को सुख पाद् ॥ १७ ॥ लाभ ग्यारहें को कहत बारह वो जो गेह ॥ खरचनाम ताके कहत पंडित सहित सनेह ॥ १८ ॥ तिहिं चतुरस्र व- खानिएं चौथो अयुम जोन ॥ नवम पांचएं भौंन को पंडित कहत त्रिकोंन ॥ १९ ॥ छठों तीसरो ग्यारहों जो दसवों है गेह ॥ नाको उपचय कहत हैं पंडित राज सनेह ॥ २० ॥ पहिलो चौथो सातवों दसवों भौंन वि- चारि ॥ केंद्र कहत तिहि कंट को सब पंडित निरधारि ॥ २१ ॥ दूजो पंचम आठवों बहुरि गेर हो धाम ॥ नाहि कहत पन फर सुकवि जिन की मति अभिराम ॥ २२ ॥ नवम तीसरो बारहों छठवों गेह जु आहि

५



जा-चं-

आपोक्लिम मता कों कहे सब ज्यो-
तिषी सराहि ॥ २३ ॥ अथ ग्र-
हाणां मित्रामित्रचक्रम् ॥
शुक्र शनी चर शत्रु हैं सम हिम क
रको नंद ॥ ये सूरज के मित्र हैं भौ
म बृहस्पति चंद ॥ २४ ॥ शशि

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	ग्रहाः
मं-बृ-चं०	बुध सू०	सू-चं-बृ०	सूर्य शु०	सू-चं-मं०	बुध श०	शुक्र बु०	मित्र
बुध	म-बृ-शुक्र	शु-बृ-श०	श-बृ-मं०	शनि	गुरु मं०	गुरु	सम
शु-श-नि	शुक्र	बुध	चंद्र	बुध शु०	सूचं-द्र	सू-चं-मं	शत्रु

के बुध रवि मित्र हैं और सबै सम ठौर ॥ सम सित सनि बुध शत्रु हैं मंगल के-
हित और ॥ २५ ॥ बुध के सूरज शुक्र हित अन हित कहिये चन्द ॥ ये तीनों सम ठौर हैं मंद जीव भूनंद ॥ २६
॥ गुरु के रवि शशि भौम हित सम दिने श को पूत ॥ वैरी बुध और शुक्र हैं कहत सुकवि करि कूत ॥ २७ ॥
मित्र मंद बुध शुक्र के शत्रु दिवाकर चंद ॥ सर गुरु मंगल सम कहैं सकल सुकविसा नंद ॥ २८ ॥ शनि
के वैरी सूर शशि और धरनि को तात ॥ हित सित बुध पंडित कहैं जिन की मति अवदात ॥ २९ ॥ प्रथम
द्वितीय तृतीय सुरवद सम ग्यारहों ठौर ॥ द्वादश हित तत काल में शत्रु होत गृह और ॥ ३० ॥ जो नि सर्ग
में मित्र हैं तत काल हु में मित्र ॥ ताहि कहत अधि मित्र हैं पंडित राज विचित्र ॥ ३१ ॥ वैरी होइ नि सर्ग में
तत काल हु में शत्रु ॥ ताहि कहत अधि शत्रु हैं जे बांचत हैं पत्र ॥ ३२ ॥ शनि बुध ये खंड पति नारी सित
अरु सोम ॥ रवि कुज गुरु ये पुरुष हैं कहत कविन के सोम ॥ ३३ ॥ राहु केतु रवि भौम शनि बहुरि दूवरो चंद

जालंक चंद्रका

ये पाप ग्रह साधु एवुध गुरु ओभ गुनंद ॥ ३४ ॥ सित आठै तैं कुल लोक हिये पूरन चंद ॥ कृष्णा तें सितलौं अ-
वल कहत सुक विसा नंद ॥ ३५ ॥ रवि सित कुज तम अनि ससी वुध सुर गुरु सुखपाद ॥ पूर्वादिक दिशि दृश्या
य कहत सुकवि समुदाइ ॥ ३६ ॥ अथ गृहाणां दृष्टिः ॥ कवित्त ॥ तीसरें औ दशम सकल देखें रवि सुत
औरन की एक ही चरन अनुमानी हैं ॥ देखत सुरेश गुरु पंचम नवम पूरी औरन की अरध जगत जिय
जानी हैं ॥ चौथे अरु आठयें विलोकें कुजपूरी डीठि औरन की त्रिपद यों विदित कहानी हैं ॥ पूरन स-
कल ग्रह सातयें विलोकत हैं राजन के काज कवि राजन बखानी हैं ॥ ३७ ॥ अथ षड्वर्गाणि ॥ दोहा
॥ भीतर पंद्रह अंश में विषम राशि ग्रह कोइ ॥ सो रवि कैं होरा वसै अधिक चंद के होइ ॥ ३८ ॥ सम को
पंद्रह अंश लौं हिम कर होरा तीन ॥ अधिक भयैं तैं करतु हैं रवि होरा को गौन ॥ ३९ ॥ अथ द्रेष्काण
॥ भीतर जो दश अंश के सोन तजै निज गेह ॥ करै पांच दै राशि सों बीस अंश लों नेह ॥ ४० ॥ खेट आ-
पनी राशितें नवदै करै पयान ॥ तीस अंश लों होइ जो वरनत सकल सुजान ॥ ४१ ॥ अथ सप्तमां-
शाः ॥ चारि अंश सत्रह कला विषम राशि जो कोइ ॥ सो नतजै निज राशि ग्रह अधिक दूसरी होइ
॥ ४२ ॥ उन अंशन उन ही कलनि खेट होइ समगेह ॥ तीन सात दै राशि सो परगट करै सनेह ॥ ४३
॥ चारि अंश सत्रह कला बढै और ग्रह जात ॥ याही विधि सब जानि हैं जिन की मति अवदात ॥ ४४ ॥
अथ नवांशाः ॥ मेष मकर बहुरो तुला कर्क कहत निरधारि ॥ मेषादिक रासीन को आदिक हीये चारि
॥ ४५ ॥ तीनि अंश विंशति कला या विधि के नव अंश ॥ जानन वारे जानि हैं कहत कविन के बंश ॥

॥ ४६ ॥ अथ द्वादशांशाः ॥ तीसकला दै अंस लों तजै नअपनों गेह ॥ अधिक भये गृह दूसरी सौंमि-
लिकरै सनेह ॥ ४७ ॥ पांचअंसतें अधिक जो कोऊ वेचर होइ ॥ दौरि तीसरी राशि में परगट रहै सबो
इ ॥ ४८ ॥ एक राशि बढ़िजात है गयें अढ़ाई अंश ॥ याही क्रमसों जानियो सुकविन के अवतंश ॥ ४९
॥ अथ त्रिंशांशाः ॥ कुज शनि गुरु बुध शुक्र धरि तातर धरिये अंक ॥ पंच ५ पंच ५ वसु ८ मुनि ७ वि
शि ५ क्रमतें कहे निसंक ॥ ५० ॥ विषम राशि को होइ जो क्रमतें गनिये ताहि ॥ सम को उलटो जा-
निये पंडित कहत सराहि ॥ ५१ ॥ पुनि अंसनि की रीति सोटि कै जानु तर आइ ॥ याही गृह की राशि कों सो
परगट ह्वै जाइ ॥ ५२ ॥ विषम राशि को होइ जो विषम राशि को लेइ ॥ सम को जो गृह होइ तौ सम
ही मे मनु देइ ॥ ५३ ॥ इति श्री महाराजकुमार अचल सिंह कृत बात्रिंशपाठे शंभुनाथ विनिर्मितायां
जातक चंद्रिकायां षड्वर्गप्रकाशः द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥ दोहा ॥ मुदित स्वस्थ दीपित बहुरि शांत
सक्त कहि देहु ॥ विकल दीन पीडित लखौ नव प्रकार गनि लेहु ॥ १ ॥ मुदित मित्र के भवन में स्वस्थ आ
पनो धाम ॥ दीपित भावत उच्च को जे पंडित अभिराम ॥ २ ॥ होइ शुभ गृह वर्ग में शांत कहत हैं ताहि ॥ स-
क्त कहत गृह उदित को पंडित राज सराहि ॥ ३ ॥ जो ग्रह हार्यो युद्ध में पीडित कहिये ताहि ॥ दीन नीच को अ
स्त जो विकल वहै ग्रह आहि ॥ ४ ॥ पाप वर्ग में होइ जो दुष्ट कहावै सोइ ॥ मैं बरने नव भेद ये जानि ले-
हु सबकोइ ॥ ५ ॥ अथ योगावयोग कथनम् ॥ दोहा ॥ होत चन्द्र तें प्रगट ये पंडित कहत विचारि ॥
अनफा सुनफा दुरधरा के द्रुम ये चारि ॥ ६ ॥ अनफा ॥ रवि बिन शशि तें बारहें जो कोऊ गृह होइ ८

जातक चंद्रिका

अनफा ताको कहत हैं कवि पंडित सब कोइ ॥७॥ फलम् ॥ गुन उदारता कीर्त्ति युत शीलवंत अति रूप ॥ काम कला पर वीन अति अनफा में नर भूप ॥८॥ अथ सुनफा ॥ होइ चंद्र ते दूसरे रवि बिन कोउ खेट ॥ सो सुनफा सुख संपदा पुहमी देत अमेट ॥ ९ ॥ फलम् ॥ श्री उपराजै निज भुजनि सुखी जसी मतिवंत ॥ जो सुनफा में होइ तो कृपा करै भूकंत ॥ १० ॥ अथ दुरधरा ॥ आगे पीछे चंद्र के जो ग्रह होइ समेत ॥ ताहि दुरधरा कहत हैं सकल संपदा देत ॥ ११ ॥ फलम् ॥ धन वाहन भूषन सहित वनिता वसु मतिमान ॥ अरिगन जेता दुर धरा करै मही पसमान ॥ १२ ॥ अथ केमद्रुम योगः ॥ आगे पीछे चंद्र कै जौन परे ग्रह आइ ॥ केमद्रुम ताको कहैं सुकविन के समुदाइ ॥ १३ ॥ फलम् ॥ मलिन कुवेषी धन रहित धरनी सुत सुख हीन ॥ केमद्रुम यह अति प्रबल करै राज सुत दीन ॥ १४ ॥ अथ केमद्रुमभंगयोगः ॥ रवितें चौथे सातयें जो दशये शशि होइ ॥ तो नीके फल को करै केमद्रुम को खोइ ॥ १५ ॥ जो देखै खेचर सबै निशिनायक को अंग ॥ तो केमद्रुम योग को होत आशुहीं भंग ॥ १६ ॥ जो कंटक में सकल युत अथवा देखत होइ ॥ कल्पद्रुम ह्वै जात है केमद्रुम को खोइ ॥ १७ ॥ होइ तुला को जीव कुज कन्या के दिन नाथ ॥ रजनी नायक सबल ह्वै करै मेष सो साथ ॥ १८ ॥ शेखन देखैं चंद को केमद्रुम हि न साइ ॥ तब सुख संपति दै सकल भूपजोग ह्वै जाइ ॥ १९ ॥ अथ रवियोगः ॥ वोसि वेसि पुनि तीसरो उभयचरी यह योग ॥ जातक ग्रंथ विलोकि कै वरनत पंडित लोग ॥ २० ॥ वोसियोगाः ॥ ससि विन रवि के बार हैं भौन परे ग्रह कोइ ॥ भावत ज्योतिष राजत है वोसि योग तब होइ ॥ २१ ॥ फलम् ॥ मंदडीठि वह

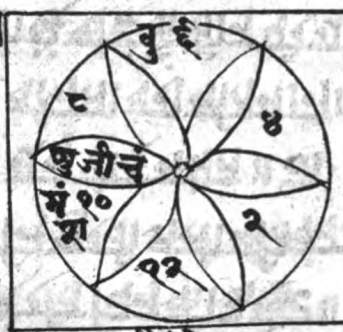
कषयुत नीच विलोकिन होइ ॥ ऊपर को धरनतर है वोसि जनम को लोइ ॥ २२ ॥ वोसियोगाः ॥ शशि
विन रवि के दूसरे वेसि वरवानत ताहि ॥ उभय चरी दुइ ओर जो सतकवि कहत सराहि ॥ २३ ॥ फलम् ॥
मृदु भाषी ती खें लखैं सात्विक दया समेत ॥ होत वेसि मे सत्य सों आलस दया निकेत ॥ २४ ॥ उभय चरी को
फल ॥ सम शरीर थिर चित्त सो सदा रहै सानंद ॥ उभय चरी में होत नर महाजसी ज्यों चंद ॥ २५ ॥ इति श्री
महाराज कुमार श्री चल सिंहात्मजया त्रिपाठि शंभुनाथ विनिर्मितायां जातक चंद्रिकायां चंद्र सूर्य योगो
नामत्रतीयश्चकाशः ३ अथ राजयोगाः ॥ तनुके शशि वर गौत्तमी दूसे एकौ कोइ ॥ चारि आदि गृह योंल-
खैं चंद विना नृप होइ ॥ १ ॥ पंच उच्च जाकें परें सर्व भूमि पति सोइ ॥ होत मही पति तीनि सों भूप वंश मेंलोइ
॥ २ ॥ अन्य वंश जातक न के तीनि परें गृह तुंग ॥ मंत्री होइ नरेश को धीर मंत्र वित पुंग ॥ ३ ॥ होत वडो नृप
चारि सों धनी सु कीर्त्ति निकेत ॥ महा न दिन के तरन में करै करिन के सेत ॥ ४ ॥ परै लग्न वुध उच्च है पंचयें मंग-
लमंद ॥ चौथे भाव वि



राजहीं
भूमिप
न ॥ क
जतजे
षकोक



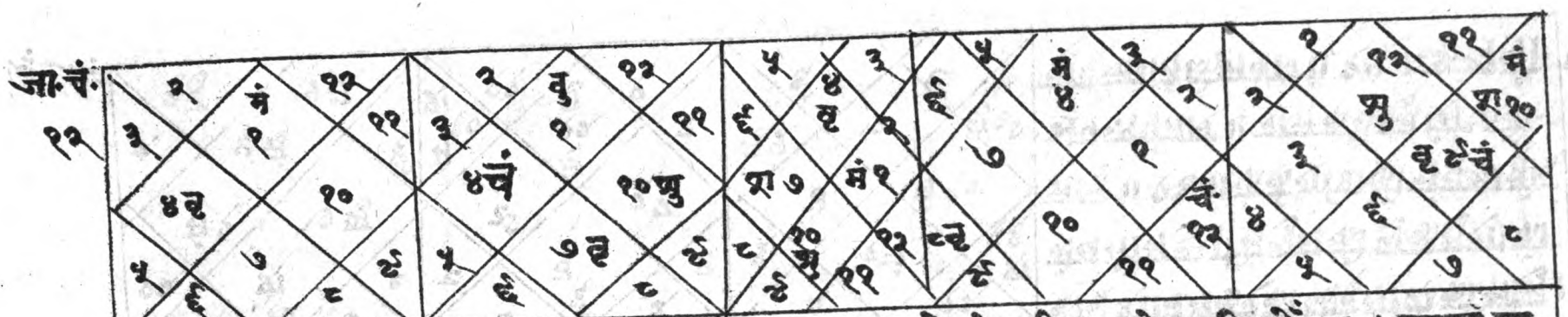
जीवभा
तियोग
सहलैं
गुमान॥
र्कटकेवा



रगव चंद ॥ ४ ॥ होइ
य हि जाके करनपथा
अहि तल मलैं दिग
ई ॥ मंगल होइ जुमें
गीश ॥ परै लगन में आइ के निहचैं होइ महीश ॥ ७ ॥ अन्य योगाः ॥ शशि तीजें गुरु वार है जो वुधनव



ब्रत भूजे राज सो बड़ो संपदा पाइ ॥ ९ ॥ ग्रथ राजयोगः ॥ जाके सूरज सिंह को होइ कुंभ को मंद ॥ मकर रा
शि को भूमि सुत होइ मीन को चंद ॥ १० ॥ जन्म होइ यहि जोग नृप बड़ो प्रतापी होइ ॥ रण भूमि में ग्राइ ग्रारि
जंग जुरै नहि कोइ ॥ ११ ॥ लगन बृहस्पति कर्क के मेष राशि के भान ॥ लाभ भौन में मंद बुध शुक्र करैं प्रस्था
न ॥ १२ ॥ ऐसे जो गाँहे पाइ कै जनम लेइ जो कोइ ॥ निहचें सकल वसुंधरा तासौं भूषित होइ ॥ १३ ॥ लग्न
होइ शनि मकर को सिंह राशि को भानु ।
मेष भौम बुध मिथुन को शुक्र तुला को
जानु ॥ १४ ॥ कर्क राशि को चंद्रमा होइ
भूप ग्रवतार ॥ राज करै बहु सिंधु लौं
होइ जगत जितवार ॥ १५ ॥ ग्रन्ययो॰



गः॥ लगन होइ जो भूमि सुत मेष राशि को पाइ॥ अथवा गुरु निज उच्च के परै लगन में आइ॥ १६॥ कहत योग हैं भांति ये जे सुख विन में दक्ष॥ नीतिवंत भूकंत है करै विपक्ष अकक्ष॥ १७॥ अन्ययोगः॥ कन्या को बुध लगन में मकर मही सुत मंद॥ नि धुन भार गव मीन को होइ जीव औ चंद॥ १८॥ उपजै जो या जोग में महाबली नृप होइ॥ वैरि वृंद करि वरन को होइ सिंह सम सोइ॥ १९॥ अन्य॥ चंद मेष रवि सिंह के धन सुरेश गुरु जानि॥ मंद कुंभ कुज मकर को भूपति योग बखानि॥ २०॥ लगन परे बुध मेष को जीव सातयें गेह॥ भृगु दशयें शशि सुहृद में जाके परे सनेह॥ २१॥ निहचें नरपति होइ सो ऐसे जोग हिपाइ॥ कीरत जासु दिगंत लौं रहै मही तल छाइ॥ २२॥ अन्य योगः॥ सुर गुरु होंहिं कुलीर के शुक्र भामिनी भौंन॥ शनि चौथे कुज कर्म गृह परे हो-





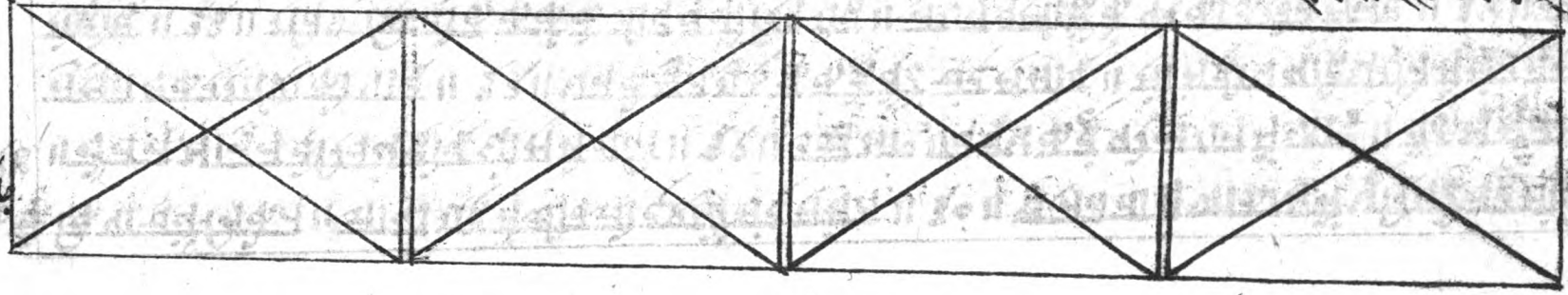
जो दं
१३

दू नृपतौन ॥ २३ ॥ ताके डरअरिवर विपिनि वाके वजत निसान ॥ व्याकुल ह्वै उठ-
लै जलधि सहजें करत पयान ॥ २४ ॥ अथ अन्ययोगः ॥ मित्र गेहनिज गेह मंहो
दू तुंग को गेह ॥ छठू वर्ग में इष्टू करै त्रिकोण सनेह ॥ २५ ॥ जाके उपपति के समें



यावि धिजो ग्रह होद् ।
सोपुनि किं नरदीपलों
धरनी लै नृप होद् ॥
१३

२६ ॥ याही विधि सों जो परैं वर्ग होद् ग्रह दोय सकल मही भरतार वह होद् मही पति सोद् ॥ २७ ॥ तुंगादि-
क अधिकार तजि छठूं वर्ग में शुद्ध ॥ होद् तीनि ग्रह जो कहूं मंत्री होद् सुबुद्ध ॥ २८ ॥ भूप होद् ग्रह चारिसों
पांच होंहिं यहि रीति ॥ तौ सब लेहि वसुंधरा निज भुज बलसों जीति ॥ २९ ॥ रवि को हिमकर लगन मेंर

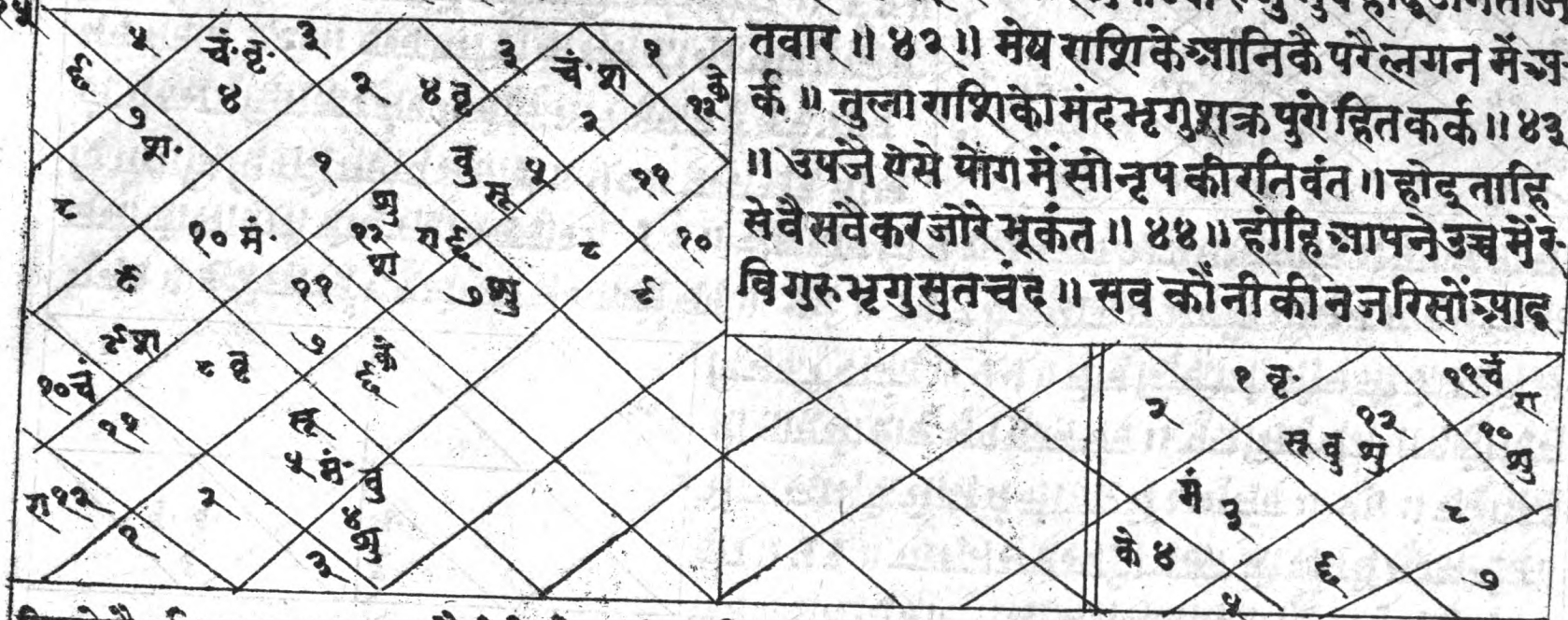


जानक चन्द्र का

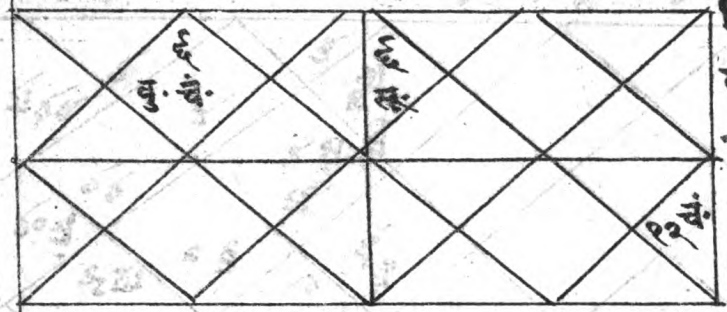
वि पाचवैं निकेत ॥ जाया गृह मेंजीवजो दशवैं मंद समेत ॥ ३० ॥ चलत तासु आकास में धूरिमहै बहु भांति ॥ नैनन भानुन देखिये होइ द्योस मे राति ॥ ३१ ॥ उच्च भार्गव बुध कहूं परे लगन में आइ ॥ बैठे भूसुत भानुसुत मकर राशि कों पाइ ॥ ३२ ॥ धन के सुत गुरु है कहूं बैठें चंद समोइ ॥ सो महीप यहि धरनि में इंद्र दूसरो होइ ॥ ३३ ॥ रवि शशि दोऊ कर्क के जीव बुधौ रिपु गेह ॥ लगन वली है कै परे कोऊ खेट सनेह ॥ ३४ ॥ उप

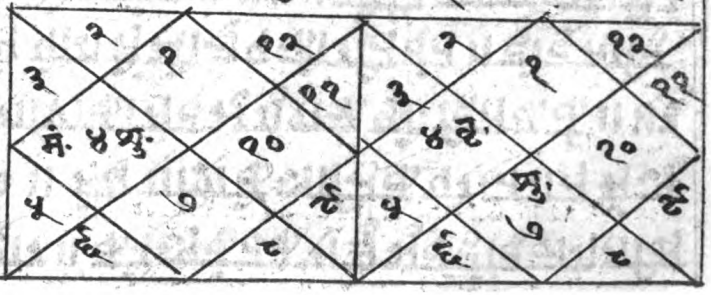


जैसे ऐसे योग में लैके सुभट समाज ॥ होइ भूमि पालक बड़ो सब राजनि को राज ॥ ३५ ॥ बैठे सुर गुरु कर्क वढि केंद्र भौन में आइ ॥ राज्य भौन में बैठि करि भृगु सुत करै सहाइ ॥ ३६ ॥ निहचैं ऐसे जोग में होइ भूप सरदार ॥ जाको गज सिक्का चलै चारि सिंधु के पार ॥ ३७ ॥ रवि गुरु दोऊ मेष के कर्म मही सुत होइ ॥ बुध भृगु शशि नवये परै जन मत्त है जो कोइ ॥ ३८ ॥ ता नृप के दिग विजय में चलत सैन चतुरंग ॥ सिंधु उच्छलै नगह लै दलै शेष उतमंग ॥ ३९ ॥ जो पूरन शशि मीन को देखै सब गृह ताहि ॥ इंद्र तुल्य नृप होइ सो सब कहि कहत सराहि ॥ ४० ॥ बुध बृहस्पति भार्गव रवि तें दूजे होइ ॥ युद्ध होइ नहिं साथ में वैरी लखै न



॥ ४९ ॥ ताकी सासनि माथ धरि सेवें भूपति भूरि ॥ सुजससेत दिशि दिशि रहै देश देश में पूरि ॥ ५० ॥ मीन राशि को होइ भृगु कर्कट के गुरु चंद ॥ सूरज भूसुत मे के घास करै सानंद ॥ ५१ ॥ उपजै ऐसे योग में संपति होइ अनेक ॥ इंद्रन सरवरि करि सकै तिहि नरपति की नेक ॥ ५२ ॥ लगन होइ वरगो त्रमी के निशि नायक होइ ॥ चारि आदि ग्रह जो लखै बड़ो मही पति सोइ ॥ राजजोग एते कहे निरखि गंथ व्यवहार ॥ नीच वंस जातक तहूं होइ मही प उदार ॥ ५३ ॥ लगन बृहस्पति मकर को सतवें सूरज चंद ॥ भौम लाभ के भौन में जो अठवें भृगु नंद ॥ ५४ ॥ बड़ो प्रतापी साहसी होइ भूप कुल चंद ॥ पुत्र मित्र धन धाम सों दिन दिन करै अनंद ॥ ५५ ॥ होइ त्रिकोनी जीव जो कंटक में भृगुनंद ॥ छठें बारहें राहु जो सहज ग्यारहें चंद ॥ ५६ ॥ उपजै ऐसे योग में भूपति भौन कुमार ॥ निपुन जसीलो साहसी होइ मही प उदार ॥ ५७ ॥ चंद होइ निज उच्च में गुरु भृगु देखै ताहि ॥ उपजै जो यहि योग ति हि गनै मही प सगहि ॥ ५८ ॥ पूरन चंद जो लखै गुरु भृगु हिमकर नंद ॥ सो कुमार भूकंत ह्वै करै शत्रु मद मंद ॥ ५९ ॥ देखै राशि के सूनु कों गुरु पारि पूरन दीठि ॥ सो मही प ह्वै समर में हनै अरिन की पीठि ॥ ६० ॥





जा-च चंद होद अधि मित्र गृह शुक्र विलोकै ताहि ॥ होद भूप यहि योग मे संत कवि कहै सराहि ॥ ६१ ॥ भानु
२७ भाग अधि मित्र गृह होद विलोकै चंद ॥ भूप होद जस करन को सील वंत सुख कंद ॥ ६२ ॥ जो बुध
अपने उच्च में बैठे चंद समोद ॥ सो सुत मागध देश मे बड़ो महीपति होद ॥ ६३ ॥ जो परिपूरन चंद्र-
मा होद शुभ गृह धाम ॥ ऐसे जोग हि पाद के होद भूप अभिराम ॥ ६४ ॥ बलील



गन पति राशि पति होद चंद्र के भौन ॥ नीच हू को सुत होद
नृप भूप अचंभो कौन ॥ ६५ ॥ मेष राशि के होहिं जो जनम
समै राशि भानु ॥ कारनाट के रत्नद्रविड नृप को होद दिवा-
नु ॥ ६६ ॥ जीव भार गव आपनी उच्च राशि के होद ॥ नव-
मपांचमें केंद्र घर वास करै सुख सोद ॥ ६७ ॥ बड़ो महीपति
होद सो भूप वंस को तात ॥ होद सुमंत्री मंत्र वित बड़ो अन्य कु-
लजात ॥ ६८ ॥ लगन दूसरें सातयें बहुरि बारहें गेह ॥ इन हीं
भावन में कहूं सब ग्रह बसै सनेह ॥ ६९ ॥ छत्र नाम याको कहैं
जेज्योतिषी महंत ॥ उपजै ऐसो जोग जो होद महीको कंत ॥
७० ॥ पाप ग्रह जो लगन में लखै बृहस्पति ताहि ॥ कर्क शुक्र
नृप योग यह सब कवि कहत सराहि ॥ ७१ ॥ भूप भवन मे जन-



जानक चंद्रका



मजो होइ जसी लो भूप ॥ धवल धाम श्रारम सर करै वावरी कूप ॥ ७२ ॥ एक वली शुभ तुंग मे केंद्र भवन मे भानु ॥ वली जीव सुत भवन के करै दृष्टि को दानु ॥ ७३ ॥ जो पावै यहि योग कों जनम समे में कोइ ॥ तुरग नाग लक्ष्मी सहित बड़ो महीपति होइ ॥ ७४ ॥ लगन वृहस्पति होइ जो मकर राशि श्रपहाइ ॥ होइ महीपति गज घर हय हाथिन कों पाइ ॥ ७५ ॥ लगन छोडि जो चंद्रमा परै केंद्र के धाम ॥ के स्वगृही के उच्च ह्वै होइ भूप श्रभिराम ॥ ७६ ॥ कंटक जो सुर गुरु शशि ताहि देइ भृगु दृष्टि ॥ सो महीपधन सों करै सलिल कनक की दृष्टि ॥ ७७ ॥ मंद चंद कुज सातयें गुरु बुध भृगु धन भाव ॥ है महीप श्ररिकरिन कों होइ श्रबल मृगराव ॥ ७८ ॥ वली बहुरि वर्गोत्तमी जो रजनी को नाथ ॥ पुष्य कृत्तिका श्रश्वनी सों मिलि करै जु साथ ॥ ७९ ॥ होइ भूप उतपति समे परै जु ऐसो योग ॥ होइ त्रिपुष्कर योग में भूपक हैं सबलोग ॥ ८० ॥ श्रथ त्रिपुष्कर योग ॥ विषम चरन नक्षत्र गुरु मंगल श्रो शनिवारु ॥ भद्रा तिथि मिलि होत यह योग त्रिपुष्कर चारु ॥ ८१ ॥ भौम श्रश्वनी मैत्र को तुंग श्रापनो होइ ॥ बहुरि होइ वरगोत्तमी यों भाषत सब कोइ ॥ ८२ ॥ होइ भूप नृपवंस को मंत्री बालक श्रन्य ॥ कीरति लक्ष्मी सों सहित होइ धरा में धन्य ॥ ८३ ॥ नवम धाम में भारगव दसयें पूरन चंद ॥ लाभ भौन मे श्रोर ग्रह भूप होइ सानंद ॥ ८४ ॥ राशितें उपचय भौन में परै सबै ग्रह श्राइ ॥ भूप योग सब कहत तिहि



जा-चं
१८९

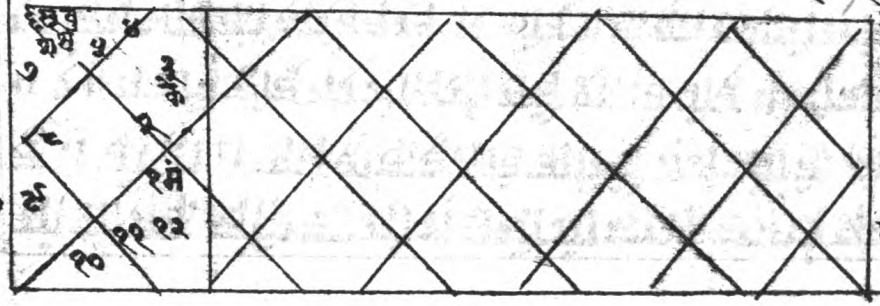
कवि कोविद समुदाइ ॥ ८५ ॥ होइ भूपया योग में महा देव की तुल्य ॥ गज रथ तुरंग समेत है हाथक रै महि कुल्य ॥ ८६ ॥ चौथे जावे शुक्र बुध सहज भवन में भानु ॥ शशिगुरु शनि भू को तनय पंचम भौ नवखानु ॥ ८७ ॥ नीचराशि निजपरि हरै उपजै ऐसे योग ॥ एक छत्र सों भूप वह करै भूमि को भोग ॥ ८८ ॥ सूरचंद निजराशि के लखै वृहस्पति ताहि ॥ निहचै होइ महीप सो सत कवि कहैं सराहि



॥ ८९ ॥ जीव होइ जो चाप के बुध निजपति के धाम ॥ देखै कुजसूरजति हैं भूप होइ अभिराम ॥ ९० ॥ मीन मेष को चंद्र मा कर्कट के वागीश ॥ होइ भारगव कुंभ को निहचै होइ महीश ॥ ९१ ॥ असुरपुरोहित जो लखै कुंभराशि में मंद ॥ भानु होइ जो

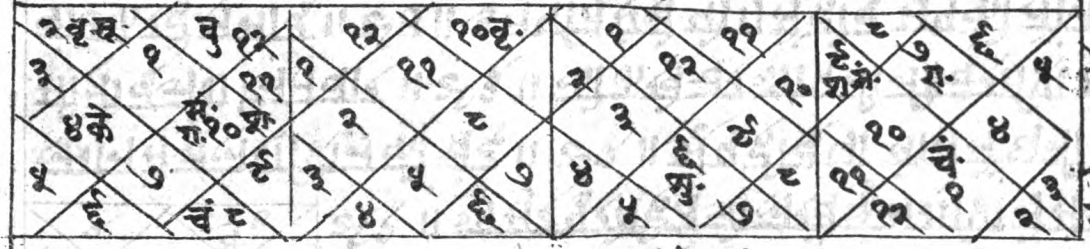


१९ लगन मे जलराशिन को चंद ॥ ९२ ॥ भूप होइ पा योग मैं धनी सुबुद्धि अपार ॥ दाता ज्ञाता साहसी होइ जंग जितवार ॥ ९३ ॥ कोऊ खेचर आपनी नीचराशि में होइ ॥ तिन को पति अरु तुंग पति कंटक रहै समोइ ॥ ९४ ॥ उतपति ऐसे योग में होइ भूप को तौन ॥ भूपति वाही जानियै जानन वा रे जौन ॥ ९५ ॥ पुष्य कृत्तिका रेवती स्वाति अश्व्नी पांच ॥ होइ शुक्र तव जानियो भूप योग जिय सांच ॥ ९६ ॥ इति श्री महा राज कुमार अच्छ सिंहा ज्या त्रिपाठि शंभुनाथ विनिर्मिता



जातक चंद्रिका

यो जातक चंद्रिकायां राजयोगो नाम चतुर्थ प्रकाशः ॥ ४ ॥ अथ राज योग भंग विचार मा
ह ॥ दोहा ॥ अब हों कहत विचारिकै राज भंग के योग ॥ जाके जानत जानि हैं सबै ज्योतिषी लोग
॥ १ ॥ यद्यपि होइ वर गोत्रमी सबै शत्रु के गेह ॥ नीच राशि के जो करैं राज योग कों खेह ॥ २ ॥ द्विग
र कों तनु भाव कों लखै न खेचर कोइ ॥ कहत सयाने राज को योग भं

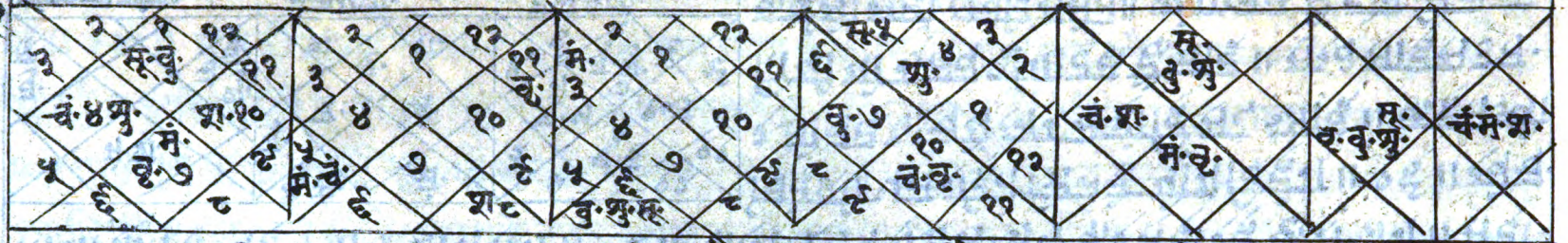




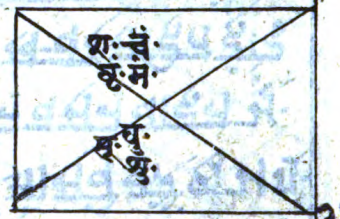
ग तब होइ ॥ ३ ॥ हंस होहिं निज
अंश में अस्त चंद्रमा होइ ॥ पाप खेट देखैं तिहै सुभन विलोकै कोइ ॥ ४ ॥ छूटि जाइ जहं क्षणक मैं क
रत होइ जो राजु ॥ देश देश दिशि दिशि फिरै लीन्हे सोक समाजु ॥ ५ ॥ केतु उदय उनका पतन व्यतीपा
त नि र्घात ॥ उपजै ऐसे योग में भूप योग मिटि जात ॥ ६ ॥ परम नीच रवि होइ जो मिलै मही पति योग ॥ सुं
रता मिटि जाति है ज्यों उपजै तनु रोग ॥ ७ ॥ अस्त जीव भृगु शशि बुधौ नीच राशि के होइ ॥ दशम पाप
ग्रह कुंभ मे जनम लहै जो कोइ ॥ ८ ॥ नाश होत दृष्टि योग में भूप योग के साज ॥ ज्यों गरजत मृग राज के
भाजि जात मृग राज ॥ ९ ॥ जाकें उत पति के समैं परम नीच गुरु होइ ॥ बड़ो दरिद्री होइ सो राज योग को
खोइ ॥ १० ॥ परम नीच भृगु होइ तो मिटै मही पति योग ॥ ज्यों चित में चिंता भये भूलि जात सब भोग ॥

जा॰ चं॰ ३०

होइ लगन में राहु जो ताहि विलोके चंद ॥ सहज भाव में होहिं जो भानु नंद भूनंद ॥ १३ ॥ अस्त होहिं शुभ केंद्र में



कोऊ शुभ न समेत ॥ राज योग मिटि जात हैं होहिं दरिद्र निकेत ॥ १३ ॥ कै अरि घर कै नीच घर केंद्र रहित शुभ जासु ॥ अथ वा अरि घर चारि गृह भूपति योग विनासु ॥ १४ ॥ क्रूर गृह अरि नीच गृह कंटक करै निवासु ॥ सहित न कोऊ शुभ रक्षक लखै न कोऊ तासु ॥ १५ ॥ नीच शत्रु गृह बारहैं सबै शुभ गृह होइ ॥ होत विपति को योगु है भूपति योग विलोइ ॥ १६ ॥ इति श्री महा राज कुमार अचल सिंह ज्या त्रिपाठि शंभु नाथ विनिर्मितायां जातक चंद्रिकायां राज भंग योगो नाम पंचम प्रकाशः ॥ ५ ॥ अथ नाभस योग कथनम् ॥ दोहा ॥ चर राशिन के योग कहुं सिगरे परैं न भोग ॥ रज्जु योग ताको कहैं सज्जन पंडित लोग ॥ १ ॥ फलम् ॥ चपल कुटिल उत साह युत क्रूर कर्म में होइ ॥ रज्जु योग में भ्रमन को देश न वाँचे कोइ ॥ २ ॥ करैं सबै गृह आइ जो थिर राशिन में वास ॥ मुसल योग ताको कहैं पंडित सुकवि प्रकाश ॥ ३ ॥ फल ॥ मान ज्ञान धन धान्य सो रहै पुत्र सुख पूरि ॥ कृपा करै महि पालति हिं मुसल जोग में भूरि ॥ ४ ॥ द्वि स्वभाव



जातक चंद्रिका

में जो परै सवै गगन चर ग्राद्द ॥ ताहि कहत नल योग है जेहें ज्योतिषराद्द ॥ ५ ॥ हेम रतन की रति धरम नेह वंत ग्रभिराम ॥ देव भक्त नल योग में उपजे तें गुन ग्राम ॥ ६ ॥ तीनि केंद्र में जो सवै करैं शुभग्रह थान ॥ माला योग सराहि कै भाषत ताहि सुजान ॥ ७ ॥ फल म्॥ पुत्र मित्र भूषन वसन वाहन भूरि प्रकार ॥ जातक माला योग कों कामी कुसल उदार ॥ ८ ॥ तिहुं केंद्र मे खल खचर सहित होंद्द जो ग्राद्द ॥ व्याल यो ग ताकों कहैं गन कन के समुदाद्द ॥ ९ ॥ फल म्॥ रोग दोष निद्रा ग्रलस होंद्द दरिद्र निकेत ॥ व्याल योग में होत जे ते नर हैथिर चेत ॥ १० ॥ खेट सवै द्वै केंद्र में जहां विराजत होंद्द ॥ मन विचारि ताकों कहैं गदा योग सब कोद्द ॥ ११ ॥ गीत वाद्य रत मंत्र में रोग दोष सों हीन ॥ गदा योग जातक न के वैरी रहैं ग्रधीन ॥ १२ ॥ सवै खेट जो मिलि परैं लगन सातयें ठौर ॥ सकट योग ता

कों कहैं सकल सु कवि सिर मौर ॥ १३ ॥ फल म्॥ दीन छीन तन मित्र विन चिंतित रहै मलीन ॥ प्रीति कुनारी सों करै सकट जन्म जिन लीन ॥ १४ ॥ चौथें दसयें जो सवै खेचर करै ग्रराम ॥ कहत ज्योतिषी होत है विहंग योग ग्रभिराम ॥ १५ ॥ फल म्॥ उपराजे भोजन करै सदा रहै कृषग्रंग ॥ सदा विदेशी धन रहित जिन के योग विहंग ॥ १६ ॥ खेचर जो नव पाचयें लगन होहिं सद ग्राद्द ॥ कहत ज्योतिषी योग तव शृंगाटक है जाद्द ॥ सुख साहस उतकर्ष सों सदा सुबुद्धि समेत ॥ शृंगाटक में होद्द निज ना-



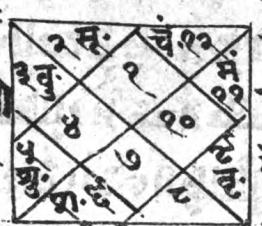
जा-चं
२३

रिन मानै हेत॥ १८॥ दूजे दशमें अरि भवन औ तीजे तिय आद॥ चौथे अठयें बारहें खेट परै सुखपा·
द॥ १९॥ दून हीं ठौरन के परें उपजत है हल योग॥ याहि विचारें जानि हैं जानन वारे लोग॥ २०॥
फलं॥ कृषिजीवी दुःखित रहै बहु भक्षक धनहीन॥ मित्र साधुसों रहित हल जातक होत मलीन॥
२१॥ लगन सातयें होहिं शुभ चौथे दशमें पाप॥ वज्र योग याको कहैं जिन की बुद्धि अमाप॥ २२॥ फलम्
आदि अंत सुखसों रहै मध्य करै दुख भोग॥ काम क्रोध जुत जन्म में होद वज्र जो जोग॥ २३॥ वज्र



कमलयोगः

जु उलटो बूझिये होत तहीं
श्रित परें कमल कहैं तिहि लो
तिधन सुख सुजससों धर्मक
२३ चिंतित रहै जन्म समै जव हो



वापीयोगः

जव योग॥ यही रीति मि·
ग॥ २४॥ फलम्॥ संप
रै दुख खोद॥ आदि अंत
द॥ २५॥ सहित हर्ष उत



जूपयोगः

कर्ष सो वली चारु जुत ओज॥ भूमिपाल सेवीज सी जाके योग सरोज॥ २६॥ केंद्र भवन कों छोडिकै
अन्य भवन गृह होद॥ वापी योग विचारिकै ताहि कहैं सब कोद॥ २७॥ फलम्॥ बहु जीवी सु·
रव धर्म रत वक्ता सुमति सुधीर॥ होद वंस नायक बड़ो
वापी योग गंभीर॥ २८॥ होद लगन तें सुहृद लौं जाकें
शनि विन भोग॥ जूप योग जाको कहैं सिगरे पंडित लो·
ग॥ २९॥ फलम्॥ विद्याधन युत यज्ञ रत मंत्री धीर उदार



सरयोगः



शक्तियोगः

जातक चंद्रका



दंडयोग:

॥ जूप योग में होइ जो धरे वंस को भार ॥ ३० ॥ चौथे तें तिय भौन लों परे सबे गृह आइ ॥ ताहि कहत सर योग हैं जे हैं ज्योतिष राइ ॥ ३१ ॥ फलम् ॥ हिंसा दुःख दरिद्र सों रहै सहित गत भोग ॥ मारे गृह उछाह सो जाही के सर योग ॥ ३२ ॥ सतयें तें पुनि दशम लों जाके खेचर आइ ॥ शक्ति योग ताको कहैं सिगरे पंडित राइ ॥ ३३ ॥ फलम् ॥ ऊँचे नीचे नरनि सों प्रीति करै बल हीन ॥ शक्ति योग में धन रहित युद्ध वाद परवीन ॥ ३४ ॥ तन गृह लों जो दशम तें करैं सबे गृह वास ॥ दंड योग ताको कहैं पंडित बुद्धि प्रकाश ॥ ३५ ॥ फलम् ॥ पुत्र दार धन सों रहित दोषी होइ प्रचंड ॥ मूरख वैरी वंस को जन्म समे जो दंड ॥ ३६ ॥ तनतें सुखतें धूनतें जो दशयेंतें

खेट ॥ पूरव विधि गृह सात जो उपजत योग अमेट ॥ ३७ ॥ नौपुनि कहि ए कूट औ छत्र धनु यस चारि ॥ क्रम ही तें ए होत हैं पंडित कहत विचारि ॥ ३८ ॥ फलम् ॥ लोभी सुख अरु भोग सों हीन चपल चित होइ ॥ वृत्ति होइ जल धान्य तें नो में क्रोधी लोइ ॥ ३९ ॥ कूट को

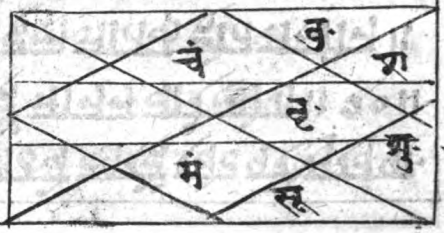


कूड योग:



फलम् ॥ विपन कोट वासी वली नीच कर्म रत चोर ॥ होत निर्धनी कूदमें छल अधर्म सिर मोर ॥ ४० ॥ छत्र को फलम् ॥ आदि अंत नृप सम रहै पंडित दया निकेत ॥ छत्र योग में होत ते करत धर्म सों हेत ॥ ४१ ॥ धनुष को फलम् ॥ आदि अंत सुख सों रहै पति कानन वास ॥ होत कार्मुक योग में गरबी मत्त सहास ॥ ४२ ॥ वाही वि

छत्रयोग:



धि सौं केंद्र तजि परैं सात गृह आइ ॥ पंडित सतकवि कहत तब अई चंद्र के जाइ ॥ ४३॥
फलम् ॥ लहै बडाई भूप सौं सैना भूषन होइ ॥ अई चंद्र में जनन कौं देइ सकल सुख
सोइ ॥ ४४ ॥ पहिले तीजें पांचयें सतयें नवएं धाम ॥ गेरहए गृह होइ तौ चक्र योग अ-
भिराम ॥ ४५ ॥ फलम् ॥ रूपवंत निःपाप मति होइ भूप ज्यों चक्र
॥ महा जसी लोजो कहूं जनम समै में चक्र ॥ ४६ ॥ दूजें चौथें औछ-
ठें अठए दशएं गेह ॥ बारहए जो गृह कहैं ताहि समुद्र सनेह ॥ ४७॥



धनुयोगः



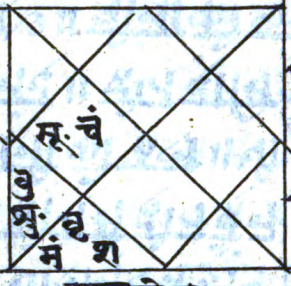
समुद्रयोगः



गोलयोगः



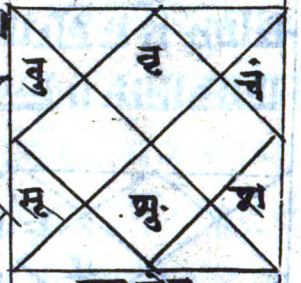
युगयोगः



शूलयोगः

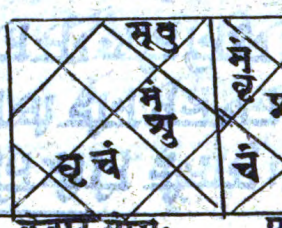


अर्द्धचंद्रयोगः

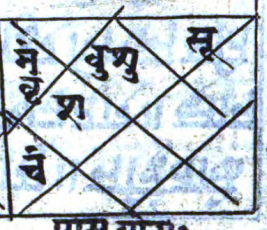


चक्रयोगः

फलम् ॥ दाता धीर दयालु अ-
तिज्ञाता भूप स
मान ॥ जो समुद्र में होइ सो कमल वंश को भानु ॥ ४८ ॥ एक भौंन में सब खचर गोल कहत हैं ताहि
दूघर में जो होइ तिहि जुग कवि कहत सराहि ॥ ४९ ॥ तीन भौंन में सूल
कहि चारि भौंन केदार ॥ पांचठौर में पास तिहि भाषत बुद्धि उदार ॥ ५० ॥
यद गृह में गृह होहिं सब कहत दामिनी ताहि ॥ सातठौर में होहिं तिहि



केदारयोगः



पासयोगः

वीना कहत सराहि ॥ ५१ ॥ गोलकोफलम् ॥ विद्या सत्य उदारता नीति प्रीति हैं तासु ॥ नहिं ताके तनछेदसकै गोल जोग है जासु ॥ ५२ ॥ जुग फलम् ॥ दंभी कपटी निरजसी हीन पुत्र धन दार ॥ ज्ञान हीन जुग जोग में करत मही को भार ॥ ५३ ॥ शूल को फल ॥ युद्ध वाद रत सूर अति निठुर निधन मति हीन ॥ शूल जोग में तरुनि सों होत न कबहूं लीन ॥ ५४ ॥ केदार को फल ॥ धन औ सत्य विनीतता धीरकृषी आचार ॥ उपकारी अति होत है जाके जोग केदार ॥ ५५ ॥ मलिन वेष रूप





कार युत दंत सहित वा चाल पास योग में होत हैं नर अनर्थ के जाल ॥ ५६ ॥ दामिनी को फल ॥ धीर सधन पंडित जसी सुधी सदा सानंद ॥ होत दामिनी योग में पुत्र वंत कुल चंद ॥ ५७ ॥ वीना को फल ॥ ज्ञाता ज्ञाता शास्त्र वित गीत कला पर वीन ॥ जातक वीना योग के होत धनी गुन लीन ॥ ५८ ॥ जा ग्रह तें ये योग सब उपजत हैं जिहिरी नि ॥ देत दसा में अशुभ शुभ फल कवि कहत सप्रीति ॥ ५९ ॥ इति श्रीमहाराज कुमार अचल मिश्र ज्ञया त्रिपाठि प्रभुनाथ विनिर्मितायां जातक चंद्रिकायां नाभस योगो नाम षष्ठः प्रकाशः ॥ ६ ॥ अथ द्विग्रह योग फलं ॥ क्रोधी पाप रवि क्रयी कामी लोभ समेत ॥ रवी कुटिल दिनेश शशि दोऊ कनि केत ॥ १ ॥ सू-चं ॥ तेज वंत साहस सबल हिंसा रत अति सूर ॥ मूढ अनृत भाषी सदा सहित भौम अरु सूर ॥ २ ॥ सू-मं ॥ प्रिय वक्ता मंत्री कुशल सकल कलनि में होइ ॥

جانک چندر کا

जा·चं पंडित धनी उदार रवि वुध सों रहै समोद ॥ ३ ॥ सू·वु· ॥ पर उपकारी निपुण अति धनी चतुर सविवेक ॥
२७ होइ पुरोहित भानु गुरु जो होऊ घर एक ॥ सू·वृ·॥ ४ ॥ गीत वाद्य आयुध कुशल होइ नेत्र बल हीन ॥
जो रवि सित एक राशि में होइ जुवति आधीन ॥ सू·शु·॥ ५ ॥ धातु क्रिया रत पुरुषमति सुखी सहित
सुत दार ॥ होइ भानु शनि एक घर धरमी धनी उदार ॥ सू·श·॥ ६ ॥ चं·मं·॥ कुटिल प्रतापी कलहरत
रोगी हीन आचार ॥ होइ जगाती जननि रिपु जो समेत शशि आर ॥ ७ ॥ चं·बु ॥ धनी चारु पर नारि
रत वक्ता नक्र दयाल ॥ धर्मवंत वुध शशि सहित होइ वंस प्रतिपाल ॥ ८ ॥ चं·गु·॥ पुष्ट गूढ निजधर्म
रत विनय सहित उपकार ॥ एक गेह गुरु चंद्रमा होइ धनी सुकुमार ॥ ९ ॥ चं·शु·॥ वसन विक्रयी व्यसन
रत बित सुगंध सों हेत ॥ रसिक एक घर होइ जो हिम कर शुक्र समेत ॥ १० ॥ चं·श·॥ करे तियन की चा·
२८ करी वनिक चालि गत सील ॥ चंद मंद दूक ठौर जो निधन पातरो डील ॥ ११ ॥ हेम लोह विधि शोध धी
वाहु युद्ध परवीन ॥ भूमि नंद सुत चंद सुत सदा जुवान नु पीन ॥ १२ ॥ मं·बु·॥ ग्राम पुरेश नरेश के के
सेनापति होइ ॥ साधु विवेकी मंत्र वित गुरु कुज रहैं समोद ॥ १३ ॥ मं·शु·॥ ज्वारी झूठो गर्व रत करे भूरि
तिय भोग ॥ वहु वैरी पर पंच मय भयें शुक्र कुज योग ॥ १४ ॥ मं·श·॥ शास्त्र अर्थ वित युद्ध रत तेजवंत
सुख हीन ॥ भौम भानु सुत जो मिलै होइ झठार्द्र लीन ॥ १५ ॥ बु·बृ·॥ गीत नीति सुख सों सहित सुंदर धीर·
उदार ॥ रहै प्रीति सुगंध सों गुरु वुध एक अगार ॥ १६ ॥ बु·शु·॥ वक्ता कुल नायक रुचिर वहु नायक
जोतक चंद्रका गुनवान ॥ शुक्र चंद्र सुत एक घर सदा सदृश समान ॥ १७ ॥ बु·श·॥ चलस्वभाव क्रोधी कला कुशल २७

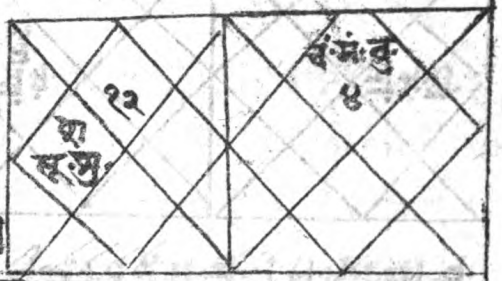
सुशील उदार ॥ परि पालक बहु नरनि को बुध शनि एक शगार ॥ १७ ॥ रु·शु· ॥ बहु पंडित पंडितन सो नित उठि करै शठान ॥ पुत्र मित्र सुख धन सहित गुरु भृगु जो इक थान ॥ १८ ॥ बृ·शु· ॥ सूर धनी पुर ग्राम पति बनिता बस जस बंत ॥ होइ जीव शनि जोग तौ जानै कला शनंत ॥ १९ ॥ शु·शु· ॥ होइ ज्ञ· बाहिर पारखी लिखे चित्र शुभ वर्न ॥ चपल चित्त भृगु शनि मिलें सुजसी पर दुख हर्न ॥ २० ॥ इति श्री महाराज कुमार शचल सिंहात्मजया त्रिपाठि शंभुनाथ विनिर्मितायां जातक चंद्रिकायां हि गृह जोगाध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥ शथ त्रिग्रहयोगाः ॥ शस्म यंत्र विधि में विदित सूर दया सों हीन ॥ सूरज शशि कुज एक घर भए होत तनु छीन ॥ १ ॥ सू·चं·मं· ॥ तेज बंत नृप काज कर शशस्त्र कला में दक्ष ॥ सूर चंद बुध जो मिलैं होइ महा मन स्वक्ष ॥ २ ॥ सू·चं·बु· ॥ सेवा कर पंडित कुशल चंचल नि· रत विदेश ॥ धूरत शशि गुरु कों मिलै जो कहुं शाइ दिनेश ॥ ३ ॥ सू·चं·बृ· ॥ पर धन हर व्यसनी रहि त सत करम न तें मंद ॥ एक भौन मे जो परै सूरज सित शरु चंद ॥ ४ ॥ सू·चं·शु· ॥ इंगित लछ विधि धातकी जानै निर धन मंद ॥ व्यर्थ प्रवासी एक घर भानु मंद शरु चंद ॥ ५ ॥ सू·चं·शं· ॥ कुशल मंत्र विधि में नि· दुर तिय सुत शर्थ विमुक्त ॥ त्रिया रहित घर एक में भानु भौम बुध युक्त ॥ ६ ॥ सू·बु·मं· ॥ सेना पति वक्ता धनी जाने नीति विधान ॥ रुचिर विलासी सहित जो होइ जीव कुज भानु ॥ ७ ॥ सू·बृ·मं· ॥ चतुर शल्प वकता धनी सुमति विनीत उदार ॥ शील वंत इक ठौर में होइ भानु भृगु शार ॥ ८ ॥ सू·मं·शु· ॥ निधनी रोगी कलह रत तजे रहे पितु भाइ ॥ शवि वेकी जावें सहित शनि मंगल दिन राइ ॥ ९ ॥ सू·मं·शं· ॥

पंडित चतुर सु संगही वली शील धन वंत ॥ इग रोगी जाकें सहित बुध गुरु नलिनी कंत ॥ १०॥ सू·बु·वृ·॥
साधु द्वेष रत निंद्य तिय होत रहित वाचाल ॥ सूर शुक्र बुध सहित जो भ्रमन करै बहु काल ॥ ११॥ सू·बु·शु
॥ द्वेष सहित जन आपने ताहि तजे अन स्वाद ॥ होद नपुंसक रूप जुत शशि ज मंद दिन राद ॥ १२॥ सू·
बु·शु·॥ सूर निधन से बीसदों चतुरर्द सों हीन ॥ रवि गुरु भृगु इक ठौर जो रहै सदा आधीन ॥ १३॥ सू·
वृ·शु·॥ नृप प्रिय तिय सुत सों सहित सुंदर दानि दयाल ॥ जीव अनी चर सों सहित होद कमलिनी पाल
॥ १४॥ सू·वृ·शु·॥ रिपु भय कदं सों सहित काव्य कथा रत माहि ॥ रवि भृगु शनि इक ठौर जो निरधनर
है सदा हि ॥ १५॥ सू·शु·शु·॥ दीन हीन धन धान्य सों सदा सहित अपमान ॥ शशि बुध कुज इक ठौर जो
२९ होद हीन जन ज्ञान ॥ १६॥ चं·बु·मे·॥ कलही वनिता रत सदा तस्कर सुन्दर देह ॥ छल समेत जो चं·

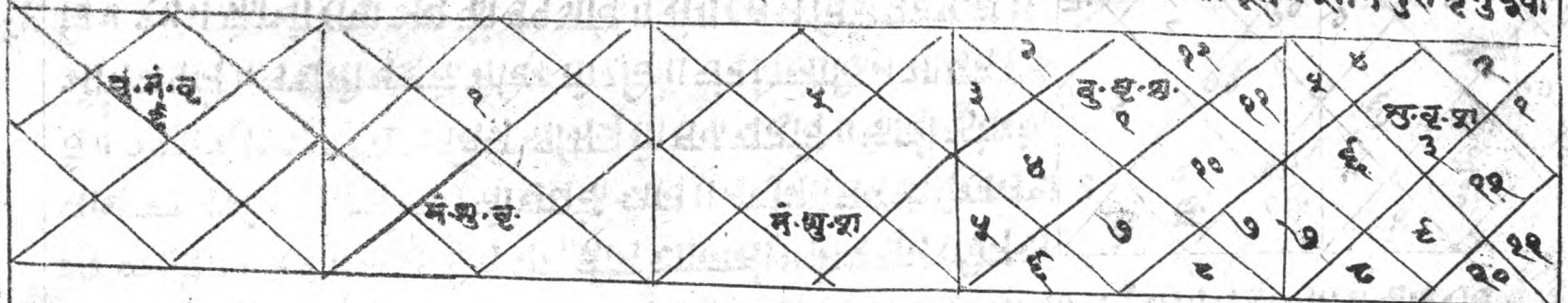


वृ कुज सुर गुरु जोद कगेह ॥ १७ ॥ चं·
मं·वृ·॥ चपल कर्क सा नारि अति हो-
द पुत्र धन हीन ॥ सीत भानु कुज शुक्र
जो एक भाव सों लीन ॥ १८ ॥ चं·मं·शु·
॥ सिसु नामें जननी मरै सहित कलह
फर फंद ॥ निंदित होद जु एक घर चंद भूमि सुत मंद ॥ १९॥ चं·मं·शु·॥
जसी·शो जसी भाग्य जुत विद्या सुख धन वंत ॥ होद एक घर सोम सुत जीव

जा·चं कुमुदिनीकंत ॥ २० ॥ बु·शु·चं·॥ लोभी पंडित नीच अति वृति करै दिन राति ॥ शशि बुध भृगुजो एक घर हो
३० इ जगत अराति ॥ २१ ॥ चं·बु·शु·॥ कला कलित बुधवंत अति नृप को वल्लभ होइ ॥ विनई पुर पति चंद
जो बुध शनि रहै समोइ ॥ २२ ॥ चं·बु·श·॥ भाग्य वंत की रति सहित वृत्ति वंत धनवंत ॥ एक ठौर में शुक्र
जो जीव कुमुदिनी कंत ॥ २३ ॥ शु·शु·चं·॥ नृप प्रिय सुंदर ओजसी जसी मंत्र वित दानि ॥ चंद मंद गुरु एक घर होइ गुननि की खानि ॥ २४ ॥ चं·श·शु·॥ होइ पुरोहित वेद वित पुण्य वान साचार ॥ लिखे पढ़े बहु जो शशी भृगु शनि एक अगार ॥ २५ ॥ चं·शु·श·॥ निज कुल भूप कवित्र त परउपकारी चारु ॥ कुज बुध
३५ गुरु जो एक घर पालै सब परिवार ॥ २६ ॥ मं·बु·शु·॥ धनी छीन तन चतुर चित चपल
परवा चाल बुध भृगु मंगल एक घर आएं होइ कृपाल ॥ २७ ॥ बु·शु·मं·॥ छीन शरीर कृतो चनी सदा विदेशी दूत
॥ अपराधी दृक ठौर जो शनि कुज शशि को पूत ॥ २८ ॥ मं·श·बु·॥ वनिता सुख सुत सों सहित राज मित्र धनवान ॥
कुज बुध गुरु दृक ठौर जो सुकृती होइ अमान ॥ २९ ॥ मं·कु·शु·॥ नृप अधिकारी होइ छल करै कुवृत्ति अनेक ॥ प्री
तिरीति करुना रहित कुज गुरु शनि घर एक ३० मं·शु·श·॥ कल हा जननी तिय लहै सदा रहै परदेश ॥ भौम मंद भृ
गु एक घर लहै न सुख को लेश ॥ ३१ ॥ मं·श·शु·॥ सत्य धर्म की रति सहित करै अरिन को नास ॥ भूप मित्र गुरु बु·
धभृगुज करै एक घर वास ॥ ३२ ॥ शु·बु·शु·॥ धन धरनी संपति सहित चारु जसी लो धीर ॥ बुध गुरु शनि दृक
ठौर जो सदा करै अधीर ॥ ३३ ॥ बु·शु·श·॥ धूर्त्त विदेशी चतुर बहु वक्ता चपल असाधु ॥ बुध गुरु शनि ३०



दूक ठौर जो करै सदा अपराधु ॥ ३४ ॥ वु·शु·श्र·॥ भूप जसी लो साहसी यदपि नीच को पूत ॥ शनि गुरु भृगु दूक

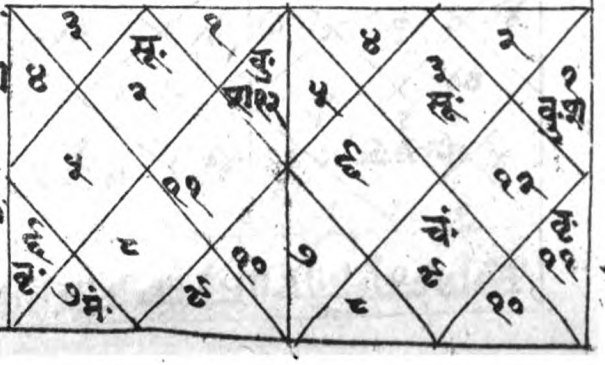


ठौर जो होद् पुहमि पुरंदर ॥ ३५ ॥ श्र·चृ·शु·॥ पाप सहित शशि होद् जो करै जननि को नासु ॥ त्योंहीं पाप
समेत रवि पिता विनासै अासु ॥ ३६ ॥ जसी अोजसी साहसी निज कुल विमल प्रदीप ॥ सुभस मेत शशि होद्
जो कृपा करै अवनीप ॥ ३७ ॥ इति श्री महाराज कुमार अचल सिंह आज्ञया त्रिपाठि शंभुनाथ विनिर्मि-
नायां जातक चंद्रिकायां त्रिग्रहयोगो नामाष्टमः प्रकाशः ॥ ८ ॥ अतो नंतरं संन्यास योगः ॥ अथ रव्या
दीनां दृष्टि फलानि ॥ अथ सूर्यस्यो परि दृष्टिः ॥ जाको है गन नाथ के चरन पोत अाधार ॥ तेक विकाथ समुद्र
को सुख सों पावत पार ॥ २ ॥ पद्धटिका ॥ मद् विमल अंग सुंदर उदार ॥ निज धर्म कृत्य सुंदर अपार ॥ गृह
काज करत माने अनंद ॥ रवि होद् नेत्र में लखै चंद ॥ २ ॥ जिय को कठोर संग्राम धीर ॥ हृग चरन अरु -
न मति को गंभीर ॥ बल वंत होद् जो भौम गेह ॥ रवि होद् लखैं जो कुज सनेह ॥ ३ ॥ सुख सत्व द्र-
व्य सों होद् हीन ॥ ल धूर्त कर्म अति मलिन दीन ॥ भरमें विदेश सो जनम पाद् ॥ ४ ॥ दिन नाथ

जंतक चंद्रका

जो चं ३२ तुंग बुध लखहिं आइ ॥ ४ ॥ दाता दयाल अति द्रव्यवंत ॥ नृप सचिव कुल पालक अनंत ॥ रवि होहिं तुंग निज जन्म काल ॥ जो लखै जीव जब है कृपाल ॥ ५ ॥ निज नारि नेह सों हीन होइ ॥ धन हीन दीन रत कुमति लोइ ॥ रवि को जु मेष में आनि थान ॥ उश्ना जु देइ तिहिं दृष्टि दान ॥ ६ ॥ उत्साह हीन तन मलिन दीन ॥ उर सहित होइ शुचि बुद्धि हीन ॥ रवि जो स्वतुंग में जन्म काल ॥ शनि लखै ताहि जो है कृपाल ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ जल जीवी बहु तिय को कंत ॥ राखै वाखधू सों तंत ॥ जो वृष में रवि रहै समोइ ॥ तारानाथ विलोकत होइ ॥ ८ ॥ तेजवंत साहसी उदार ॥ समरधीर रनवंत अपार ॥ छीन अंग सों की रति वंत ॥ लखै जो कुज वृष के भगवंत ॥ ९ ॥ होइ काव्य संगीत प्रवीन ॥ क्रियावंत सुंदर तन पीन ॥ जो जनि समै वृषभ के भान ॥ शशिसुत करै डीठि को दान ॥ १० ॥ कुल अनुमान नहीं पति होइ ॥ के मंत्री धन रहै समोइ ॥ रतन सहित भूषन तन धरै ॥ वृष के भानु नजरि गुरु करै ॥ ११ ॥ ह्वैं हिं नैन सब अंग मनोहर ॥ सहित अहित सब सों प्रधान वर ॥ रहै सचिंत मनुज जनि तहीं नित ॥ वृष रवि देखै अ सुर पुरोहित ॥ १२ ॥ होइ हीन धन हीन आलसी ॥ तिय सुत रहित अ साधु लाल सी ॥ सरुज भानु जो वृष के आवै ॥ नर नित नय जो देख न पावै ॥ १३ ॥ दोधक छंद ॥ मित्र अमित्र सो सक बढावै ॥ कोडी कुबेर के भौन न पावै ॥ उद्यमी वृद्ध के मंदिर जो रवि ॥ चंदु विलोकित भाषत है कवि ॥ १४ ॥ क्रोधी सदा भय को उपजावै ॥ संगर में न विजै पद पावै ॥





३२

जा तक चंद्रका

दीन महा वुध के घर संजुत ॥ सूरज कों निरखैं अवनी सुत ॥ १५ ॥ मान लहै धन भूपछपा सों ॥ संगर में नजितैरि पुजासों ॥ नीति सुमित्र समेत कला धर ॥ वुद्ध लखे रविजो वुध के घर ॥ १६ ॥ पुत्र कलत्र समेत समंत्री ॥ गूढ मनोरथ भूप को मंत्री ॥ जो वुध के घर सूरज आवे ॥ देव पुरोहित देखन पावै ॥ १७ ॥ शस्त्र विद्या नल है क्षत अंगा वासविदेश करै वहु रंगा ॥ दीन महा वुध के घर आवै ॥ सूरज कों भृगु डीठि चलावै ॥ १८ ॥ धूर्त्त सभृत्य विभुद्ध उदासी ॥ होइ सदा हीं विदेश को वासी ॥ जो वुध मंदिर सूरज गाजै ॥ मंद विलोक हि प्रीति समाजै ॥ १९ ॥ मालिनी छन्द ॥ वहु धन उपराजै दाट तैं तोय दूतैं ॥ नृपति समविराजै आपने वाहु वूतैं ॥ सचिव सदृश के तौ क्रोध सों हेतु लेखै ॥ रवि अग्नि घर गामी जो निशानाथ देखै ॥ २० ॥ निज कुल जन जे हैं आपने कै न जानै ॥ रिस मय गुरु रोगी देव विप्रे न मानै ॥ जल जपति कहूं जो नंद के भौंन आवै ॥ धरनि तनय को जो है कहूं डीठि पावै ॥ २१ ॥ सुज समय सविद्या सों सदा द्रव्य ल्यावै ॥ अरि करिनि निहंता सूर जो कर्क गामी ॥ अग्नि तनय निहारै होइ सो जंतु नामी ॥ २२ ॥ निज कुल जन स्वामी स्वसजी को जसी लो ॥ वहु धन नरपति सों लेइ ज्ञाता रसी लो ॥ रवि हिमकर गे है आपनो थान लेखैं ॥ सुरनिकर पुरोधा जो कहूं आनि देखै ॥ २३ ॥ वदन दृग कहूं की देखियै मंजु शोभा ॥ नर निकर मही को देखि कै कौन लोभा ॥ परजुवति विलासी सूरजो चंद गेही ॥ भृगुतनय निहारैं जो कहूं है सनेही ॥ २४ ॥ कफ अनि लस पेटा होइ सो दुष्ट जी को ॥ चपलक लह कारी प्रान हारी सती को ॥ अग्नि भवन विलासी सूरजो जन्म जाके ॥ जल जपनितनै को सासु है नेक ताके ॥ २५ ॥ स्वंगम छंद ॥ धरत धीर गंभीर प्रसिद्ध जहां न मे ॥ भूपति सों धन भूरि लहै



राधहिय धीर नृपति सों गरुता पावै ॥ समर भीर सो जानि चंद कुज गेह विराजै ॥ नलिन विपिनि को कंत आनि कै डीठि समाजै ॥ ४४ ॥ अनल अनिल विष शस्त्र भीति सों संकित जानौ ॥ जो हिम कर कुज गेह आद निज आसन ठानै ॥ अवनि नंद जो ताहि देखि वे में कछु आनै ॥ ४५ ॥ विद्यन में पर वीन विमल जग कीरति ताकी ॥ धनी सकल गुन सहित साधु सुंदर वपु जाकी ॥ जनम समै जो चंदु अवनि नंदन घर सो है ॥ ताहि रोहिनी पुत्र आनि आदर सो जोहै ॥ ४६ ॥ नर पति मंत्री होइ अबल सेनापति केतौ ॥ निजकुल के अनुमान रहै वसुनिकर स मेतौ ॥ जो कुज घर को चंदु वास करिवे कौं दौरै ॥ अमर पुरोहित नेक आइ तासों दृग जोरै ॥ ४७ ॥ धन आभूषन तरुनि तन सुख को अतिभोगी ॥ वक्ता गुन गन वंत देह को सदा अरोगी ॥ अवनि नंद के गेह चंद जनि समय जु आवै ॥ भृगु मुनीश को पूत कहूं जो देखन पावै ॥ ४८ ॥ मन मलीन तन दीन रहै रोगन सों घेरो ॥ करै असत सुख दुष्ट रहित धन जै सो चेरो ॥ जो कुमुदिनि पति आनि भौम गृह सों रति मानै ॥ ताहि दिवाकर नंद कहूं लखिवो मन आनै ॥ ४९ ॥ विप्रोत्थक ॥ कीवो करै कृषिकर्म सदा विधि जानन वारि ॥ वाहन सों धन अन्न समेत महीपति प्यारि ॥ होइ स्वकारज दक्ष निशाकर जो कहुं आवै ॥ शुक्र के मंदिर माह दिवाकर देखन पावै ॥ ५० ॥ चेत हरै वनिता जन के पर वीन महा ॥ सुंदर सरस सुमित्र रहै तन में नद हा ॥ जो भृगु नंदन के घर में निशि नाथ वसै ॥ ताहि मही सुत जो लखि कै हिय में हुल





जा·चं· १७

सै ॥ ५१ ॥ पंडित होइ गुणाढ्य हित सब भूतन को ॥ आनंद वंत विधिज्ञ सुसाथी सपूतन को ॥ जो भृगु मंदि र आइ निशाकर थान करैं ॥ बुध विलोकन कों तिहि कों कहु आनि धरैं ॥ ५२ ॥ पुत्र कलत्र सुखी धनु की· रति पावतु है ॥ सेवतु मातु पिते करुना उपजावतु है ॥ जो कबहूं भृगु मंदिर में शशि आवतु है ॥ देव पुरोहि त आनिजु डीढि चलावतु है ॥ ५३ ॥ भूषन अंबर भौंन भले ले पावतु सो ॥ सुंदरि सेज सुगंध सुखै उपजा वतु सो ॥ जा जन के जनि कालु तृषा सन आवतु सो ॥ चंदु कहूं उसना उठि डीढि देखन धावतु सो ॥ ५४ ॥ जो दृष पूरब अंस शशीष गुढारतु है ॥ तौ नहिं जीवति मातु जु मंद निहारतु है ॥ जो पर भाग अभागतें



३८

चंद सिधारतु है ॥ मंद विलोकन तें पितु को चितु नारतु है ॥ ५५ ॥ तोटक ॥ मतिवंत सुशील विना धन सों ॥ सकलेसर है तनसों मन सों ॥ निशिनायक जो बुध गेह वसै ॥ दिननायक जो लखि कै हुलसै ॥ ५६ ॥ धन वाहन वंत उदार वली ॥ हिय सूर लसै मति पाद भली ॥ अति पंडित सुनद्ध जो चंद कहूं ॥ बुध भौंन मही सुत देखत हूं ॥ ५७ ॥ मन धीर उदार क्रिया करसों ॥ सहशील धनी अति सुंदर सों ॥ निज मंदिर पाद निशापति को ॥ बुध देखनि कै हिय में रति को ॥ ५८ ॥ जग जाहिर सत्य विवेक लियें ॥ धनवंत विनीत प्रवीन हिये ॥ शशि जो बुध गेह में वास करै ॥ गुरु की कहु पूरन डीढि परै ॥ ५९ ॥ गनि कारत अंग सुवस्त्र धरै ॥ धन वाहन सों सुख भूरि करै ॥ बुध के घर में शशि गेहु करै ॥ भृगु नंदन की कहु डीढि परै ॥ ६० ॥ धन वाहन पुत्र कलत्र विना ॥ हिय दान दया कछु जानतिना ॥ शशि नेहु करै बुध के घर सों ॥

जा·चं· चंद्र का

॥ दोहा ॥ जन्मपत्री मनहर्ष की ॥ १२ ॥ जन्मपत्री कहिये तासु ॥ मनहर्ष नाम ॥ १३ ॥ जन्मपत्री
कहिये तासु ॥ मनहर्ष नाम ॥ १४ ॥ जन्मपत्री कहिये तासु ॥ मनहर्ष नाम ॥ १५ ॥ जन्मपत्री
कहिये तासु ॥ मनहर्ष नाम ॥

मालती सहित मंगल ॥ मालती दोहा विषय के रसमें सदाही मंगल ॥ माया समेत मीत मंत्र ॥ चंद्रमा में वसु हैं गुरु मीत ऊंच ॥ संसार में चंद्रमा ॥ चंद्रमा ॥ ऊंच ॥ तातें ॥ मंत्र ॥ मीत ॥ मालती ॥ दोहा ॥ विषय ॥ के ॥ रसमें ॥ सदाही ॥ मंगल ॥ माया ॥ समेत ॥ मीत ॥ मंत्र ॥

छिद्र ॥ तातें ॥ मंत्र ॥ मीत ॥ सौख्य ॥ विहीन ॥ नारी ॥ सो ॥ शत्रु ॥ मित्र ॥ जानत ॥ तातें ॥ तातें ॥ शत्रु ॥ छिद्र ॥ तातें ॥ मंत्र ॥ मीत ॥ सौख्य ॥ विहीन ॥ नारी ॥ सो ॥ शत्रु ॥ मित्र ॥ जानत ॥ तातें ॥

॥ जो चंद्रमा जाकी जानि काल शशि ॥ मूलिन भोजन किये निश्चय मोन ताकें ॥ ताकी ॥ रानी ॥ चर ॥ तनु ॥ वैरिष ॥ पावै ॥ ॥ ॥

छंद किया रस सुवादन रंगाना ताकी हैं धनु तिया तिनु केन गेहैं ॥ जो कीट गेह राशि मार्गवि स्थानि हैं

नमंडन संजु चारी ॥ जो कीट में राशि लवे सुरु सोम कारी ॥ २५ ॥ ढाला मनी हद जानी धन वन ज्ञाता

तेनि तनु दीव पावे ॥ ८८ ॥ कंदर्प रूप नृपके उन मान सोहै ॥ जाकी धन समूह कुवेर की पहै ॥ सप्त संवतन

को प्रकासी ॥ जो कीट गेह निधि नायक स्थान गावे ॥ ताको निश्चा कर

२७ ॥ संगीत रंग कलानिधि वादित्र कासी ॥ ज्ञाता सस्थान लग्न कर्मन

ग भूमि पिछु नीति सुकीर्ति पावे ॥ ज्ञाता गम्भीर गुरु ताहि जहान गावे ॥ ८९ ॥ सोई

पसंसाहै लहि इस्थ ग्रंथनि की ॥ जो कीट में राशि की कुज नीक कीजे ॥

लि मंदिर में विराजे ॥ ताकी कहुं नलिनी पति डीठि साजे ॥ ९० ॥ सोई

दृष्टि सिद्ध कवि वर्णहि लोगा जाकी ॥ जो ग्रन्थ देखि तुली महं चंद्रमा की ॥ ९१ ॥ ग्रन्थनादि इस्थ वहु वादान

पाला सिद्ध कवि वर्णहि लोगा जाकी ॥ जो ग्रन्थ देखि तुली महं चंद्रमा की ॥ ९१ ॥ ग्रन्थनादि इस्थ वहु वादान

मूरि भोगी ॥ ज्ञाता दीठ विषय के वसमें नियोगी ॥ ९२ ॥ सोई पुनि चंद्र की डीठि होई ॥ काहू कि वातन सहि न सोई ॥

दृ ॥ ९३ ॥ मंगल दीठ पुनि साहसवंत जोधा ॥ काहू कि वातन सहि न सोई ॥ काहू कि वातन सहि न सोई ॥

निर्भयवन वस्तु हीन ॥ ज्ञानी ग्रन्थनके कथ विस्तर भूरि लीने ॥ जाके निश्चय तुला में विराजे ॥ ताकी दृष्टि

ही ॥ जाके तुली महं शशी जानी काल सोहै ॥ ताकी दृष्टि परि पूरन डीठि जो है ॥ ९४ ॥ ताकी महा दृष्टि

खै ॥ ४०॥ क्रोधी महा अल्प द्रव्य असत्य वादी ॥ सो एक ग्राम थिर हू न वसै विषादी ॥ अत्यंत नीच अति संगति नीच ताकें ॥ जो कीट गेह महं चंद जु मंद ताके ॥ ४१॥ छंद ॥ प्रौढ प्रताप जस वाहन वंत ज्ञानी ॥ संग्राम में जय लहै नृप नीतु मानी ॥ जो चंद्रमा धननि के तन में विराजै ॥ जो कौंल नायक कहूं शुभ डीठि साजै ॥ ४२ ॥ सेना धि राज मति वंत महा प्रतापी ॥ पस्मा लयां वर विभूषन जुक्त जापी ॥ जो चंदु चाप में बैठि पियूष वर्षे ॥ ताकों कहूं अवनि नंद नदेखि हर्षे ॥



४१

॥ लक्ष्मी तुरंग वहु भृत्य विनीत सोहै ॥ जाकी सुने सद गिरा कवि कोन मोहै ॥ सो सिल्प कर्म रुचि भूरि सदैव राखै ॥ जो चंदु चाप महु वहु हियो भिलाखै ॥ ४४॥ कंदर्प रूप धन वंत सुसील ज्ञाता ॥ भूपाल ते सु पद पावहि धर्म राता ॥ जो चंद्रमा जु निस में धन राशि गामी ॥ देखै पुरंदर पुरोहित ज्ञानि नामी ॥ ४५ ॥ संतान वंत धन वंत सुकर्म कर्ता ॥ तोखी सुखी अखिल लोक कलेश हर्ता ॥ जो चंद्रमा धनुषि में जनि काल आवै ॥ ताकों जुदा नव पुरोहित देखि पावै ॥ ४६ ॥ वक्ता प्रचंड वहु शास्त्र पढै पढावै ॥ ताकों जहान मति सत्य समेत गावै ॥ सो द्रव्य वंत जस वंत रहै सदा हीं ॥ जो मंद चंद हिलखै धन राशि माहीं ॥ ४७॥ छंद ॥ द्वारिद्र वंत मति हीन रहै सदा हीं ॥ सान्यो रहै दुख समूह मलीन ताही ॥ भूलेकहूं सपन हूं न करै अनंदै ॥ देखै दिवा कर अछेह सनत्र चंदै ॥ ४८॥ स्त्री पुत्र मित्र सुख संपति मान् प्रतापी ॥ संग्राम में जिहि सराहत देखि चापी ॥ जो चंद्रमा मकर राशि हि पाहि सोहै ॥ ताकों मही जय

॥ दोहा ॥ मंगल हिजीव देवं सहित ॥ २२५ ॥ शीत भाग्यवंत जो भानु
सो हिंदु पीत ॥ कुछ कामली भानु तिहि दिढ दीठि दान ॥ २२४ ॥ तिहि
दिढ दीठि दान ॥ तिहि दिढ दीठि दान ॥ २२३ ॥ पति स्थान कलह रतव कं
दिढ व्यथा ॥ पुत्र पुत्र स्वास्थ संबंध समर्थ ॥ इस नानि कंत कुज कलह मंगल
शाह ॥ तिहि दिढ दीठि चंदु भौमि दीठि लाहु ॥ २२२ ॥ तिहि दिढ दीठि चंदु भौमि दीठि लाहु ॥ २२१ ॥ पति स्थान भौम भौम जो वसहि
मंत ॥ बुध विपक्षी भानु जो हिय न कछु तरनि हिंत ॥ बन सयन आदि भावनि
माता विरोध रत समै कर ॥ ताको हिय न कछु तरनि हिंत ॥ २२० ॥
मंत ॥ २२१ ॥ पद दिवीजा को हिय न कछु तरनि हिंत ॥ बन सयन आदि भावनि
मंत ॥ बुध विपक्षी भानु जो हिय न कछु तरनि हिंत ॥ २२२ ॥
शाह ॥ तिहि दिढ दीठि चंदु भौमि दीठि लाहु ॥ २२३ ॥ पति स्थान कलह रतव कं
दिढ व्यथा ॥ पुत्र पुत्र स्वास्थ संबंध समर्थ ॥ इस नानि कंत कुज कलह मंगल
तिहि दिढ दीठि दान ॥ तिहि दिढ दीठि दान ॥ २२४ ॥ तिहि दिढ दीठि दान
सो हिंदु पीत ॥ कुछ कामली भानु ॥ शीत भाग्यवंत जो भानु ॥ मंगल हिजीव देवं सहित ॥ २२५

॥ दोहा ॥ जो नीचहु उपर कामिनी को सनेही
सो कैसे कुज सेय माहीं ॥ ताकी दिनेश सुत देवन होंही ॥ २२६ ॥ जो नीचहु उपर कामिनी को सनेही
दया विहीन हठि चीतन मीतु देही ॥ सर्व सहज सुत कहं निज धाम शाय ॥ देवे सुधा पुर पर्यंत जीवे लिया
य ॥ २२७ ॥ वारा नारत नहि पर्यंत हानी ॥ कोपी विपक्षिन उपर मूर्ति आनी ॥ जो मेष गोहि कुज शा
हकी शनैः ॥ कीप पर्यंत जीवे पुरन चंद्रमा ॥ वसावतसी कोपवारी ॥ चौथी कलह गोहि कुज शा
निश्चयो ॥ २२८ ॥ जो मेष निज मंदिर मे विराजे ॥ ताकी पुरन होहि माने ॥ २२९ ॥ शनैश्चरहि
की उपरत वारहु वारकारी ॥ कांता हरै धनु शत्रु हनै निनारी ॥ सो पुरुष लीजिव पावहि शुक्ल काया ॥ २३० ॥ इति समेत किल कालु शशिसुत दीठी ॥ पावे अनेक आपमानहि
मे मेष लीजिव पावहि शुक्ल काया ॥ २३० ॥ इति समेत किल कालु शशिसुत दीठी ॥ पावे अनेक आपमानहि
शाह ॥ तिहि दिढ दीठि चंदु भौमि दीठि लाहु ॥ २३१ ॥ पति स्थान कलह रतव कं
दिढ व्यथा ॥ पुत्र पुत्र स्वास्थ संबंध समर्थ ॥ इस नानि कंत कुज कलह मंगल
तिहि दिढ दीठि दान ॥ तिहि दिढ दीठि दान ॥ २३२ ॥ तिहि दिढ दीठि दान
सो हिंदु पीत ॥ कुछ कामली भानु ॥ शीत भाग्यवंत जो भानु ॥ मंगल हिजीव देवं सहित ॥ २३३

जा॰ चं॰ नृप को अमात्य जस मान वंत ॥ सुख सहित सैन्य पालै अनंत ॥ भृगु भौन होहिं जो अवनि नंद ॥ देखै
४५ जु ताहि भृगु वंस चंद ॥ १२९ ॥ जा हिर जहान धन वान धीर ॥ पावन विनीत पंडित गंभीर ॥ विन कपट
मीतु विन देहि ताहि ॥ भृगु भौन भौम शनि लखै आहि ॥ १३७ ॥ छंद ॥ विद्या विनोद धन सहित होइ ॥
पर ताप वंत तिहि समन कोइ ॥ कल केलि वंत वन वसै कोइ ॥ बुध गेह भौम रवि जोन चोट ॥ १३८ ॥ तिय र
न सत्य संतोष वंत ॥ सेवै सप्रेम निज भूमि कंत ॥ बुध भौन श्रीनि सुत टिकहि आइ ॥ जनि काल चंद की
डीठि पाइ ॥ १३९ ॥ पढि गीरात काव्य रचिव चन चारु ॥ वोलै

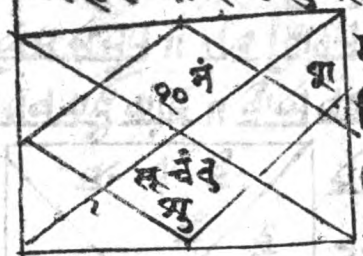




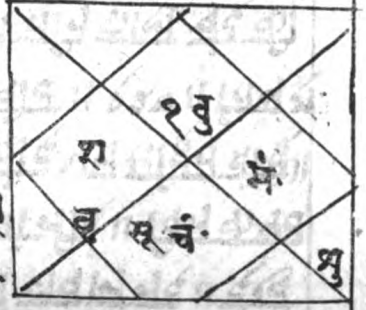
४५ असत्य हिय को असारु ॥ रत दूत कर्म कुज बुद्ध गेह ॥ देखै जु बुद्ध
करि ताहि नेह ॥ १४० ॥ विसनी विदेश गामी अपार ॥ सुख लहै
नेक ताकी नदार ॥ बुध के निकेत जो धर निपूत ॥ ताकों निहारि गु-
रु करहि सूत ॥ १४१ ॥ धन वंत धीर सुख सहित होइ ॥ रमनी असङ्ग
सब कहै कोइ ॥ कुल बृद्ध गेह जोजन मकाल ॥ भृगु देहि डीठि जो अति विसाल ॥ १४२ ॥ रनशूर मलिन आ-
लेस समेत ॥ गउ विपिन मध्य जाको निकेत ॥ गृह चंदनंद कै अवनि नंद ॥ जो ताहि विलो कत होहिं मंद ॥
१४३ ॥ छन्द ॥ रत पित रोग उदंड धीर ॥ मति मंत दंड नायक गंभीर ॥ जो चंद गेह में अवनि नंद ॥ दिन नाथ
नाहि देखै अमंद ॥ १४४ ॥ सिर गदा घात सों सहित होइ ॥ गत वस्तु सो करत कहहिं लोइ ॥ तन मलिन सा-
धु सों नहिं पत्याइ ॥ कुज चंद गेह शशि लखहिं आइ ॥ १४५ ॥ पापी अमित गत चित्त शुद्धि ॥ कुरमा विगु-

जातक भूषण ४५

जाचे धि अति कुबुद्धि ॥ शशि गेह शनि कुज करहिं वास ॥ देखे सुबुद्ध करि दृग प्रकास ॥ १३९ ॥ दृष कोश माद्य शुभ
४६ शील वंत ॥ धन लहै भूरि सो बुद्धवंत ॥ जो चंद गेह मंगल हि पाद ॥ देखे सुरेश गुरु दृग लगाद ॥ १३७ ॥ उर
व्यसन करै वसु खोद देद ॥ अपजसु विसाहि जग मध्य लेद ॥ जो अवनि नंद शशि गेह होद ॥ भृगु



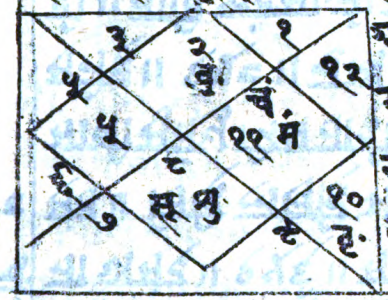
मुदित होद तिहि जोद जोद ॥ १३८ ॥ जल धान्य पाद धन वंत होद ॥ सुंदर मही पति हि कह हि लोद ॥ जो चंद गेह में औनि नंद ॥ ताको अशेष दृग लखहि मंद ॥ १३९ ॥ दुरव सुरव अहि तमी तै जु देद ॥ नग वन विदारि करि सुरव हि लेद ॥ कुज दिवा करहि के गेह माहि ॥ है कै कृपालर विलखहि ताहि ॥ १४० ॥ हिय कठिन चारु की गति समेत ॥ मानै नमात सो हेत चेत ॥ अति निपुन सुकारज मध्य सोद ॥ रवि गेह भौम शशि लखत होद ॥ १४१ ॥ सत काय सिद्ध में नियुन जानु ॥ चल चित्त ताहि लोभी वखानु ॥ सिल्पज्ञ सुकवि सब कहै जाहि ॥ रवि भौन भौम वुध लखहि ताहि ॥ १४२ ॥ सेनाधि नाथ रत दूत कर्म ॥ विद्या प्रवीन वुधिवर सुधर्म ॥ रवि गेह भौम जो जन्म काल ॥ गुरुलखैं ॥ ताहि जो है कृपाल ॥ १४३ ॥

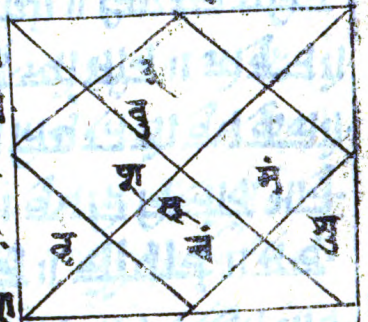


तिय निकर भोग रत अति समृद्ध ॥ सुंदर सवर्ग किन होत वृद्ध ॥ रवि गेह औनि सु तंव सहि आद ॥ भृगु अखिल डीठि सों लखहि ताहि ॥ १४४ ॥ धन हीन वृद्ध कैसो शरीर ॥ पर गेह वसै चिंतित अधीर ॥ जो अवनि सूनुदिन नाथ गेह ॥ देखैं जु ताहि अति सनेह ॥ १४५ ॥ नव कोटि नगर में करहि थान ॥ सठ भाग्य वंत अति पूजमा

जानकी चंद्रका

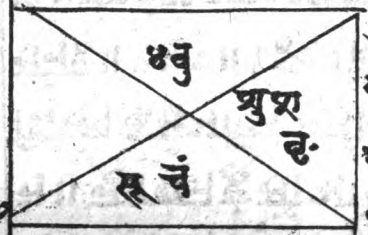
न ॥ गुरु के अगार जो आप होइ ॥ तिहि लखै आइ रवि दृग समोइ ॥ १४६ ॥ पंडित विधि कुल हीन बली
न ॥ नृप राज हूं सों भाषै न दीन ॥ कुज वसत होइ गुरु के निकेत ॥ जो लखै चंद करुना समेत ॥ १४७ ॥ रत
शिल्प कर्म पंडित सुसील ॥ विद्या निधान चित चारु डील ॥ जस वंत होइ कुज जीव गेह ॥ ताकों जु बुद्ध देखै
सनेह ॥ १४८ ॥ हिय रहै वाम चिंता अपार ॥ अरि वर अनेक सों कल हकार ॥ कल है न ताहि जिहिं जन्म पा-
इ ॥ गुरु गेह भौम गुरु लखैं आइ ॥ १४९ ॥ धन भाग्य वंत विषयी उदार ॥ जुत वसन चारु भूषन अपार ॥ गु-
रु गेह अवनि नंद नहि पाइ ॥ भृगु जो अरोष दृग लखहि आइ ॥ १५० ॥ नहिं वसै एक थल अति कुरूप ॥
पर कर्म निरत दारिद्र भूप ॥ गुरु भौन होहिं जो अवनि नंद ॥ तिहिं लखैं आनि सा नंद मंद ॥ १५१ ॥ तनु क्या-
मतनै नित सुख समेत ॥ लागै न वार तिहिं विजय लेत ॥ शनि सदन आइ कुज करहि थान ॥ देखैं अशेष
दृग ताहि भान ॥ १५२ ॥ अवतंस माइ सुत हीन होइ ॥ निज भूमि रहै वास न दोइ ॥ चंचल उदार चित अति
सकाम ॥ आशि कुज हि लखै जो मंद धाम ॥ १५३ ॥ धनु लहै अमत दिशि देश देश ॥ प्रिय उक्ति युक्ति जोवे-
सकेश ॥ धूरत सवीर्य कुज मंद गेह ॥ बुध आनि ताहि देखै सनेह ॥ १५४ ॥ धन धरम

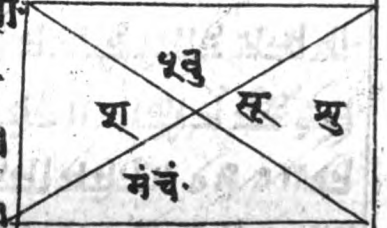




आयु गुन वंत होइ ॥ प्रिय वंधु रवमत राखैं न गोइ ॥ सुंदर जु भो
म बुध के अगार ॥ गुरु लखै ताहि दृग करि उदार ॥ १५५ ॥ सु-
रव भोग्य भाग्य जुत कलह कार ॥ जिय में कृपाल तिय वस उ-
दार ॥ शनि गेह होइ जो अवनि नंद ॥ तिहि लखहि आनि उ

ना अमंद ॥ १५६ ॥ मतिवंत युद्ध प्रिय रिपु समेत ॥ बहु श्रुति उदार तिय सों न हेत ॥ शनि धाम धरासुत जोव संत ॥ तिहि लखहि भानु सुत दृग अनंत ॥ १५७ ॥ अथ बुधो परि दृष्टि फलानि ॥ चौपाई ॥ सच भावी सुबंधु प्रिय ताही ॥ नृप सों गुरुता लहै सदा ही ॥ होइ विलासी जो कुज गेह ॥ बुधहि विलोकै भानु सनेह ॥ १५८ ॥ नृत्य गीत रत पूरन धन सों ॥ कामी सहित भृत्य बंधुन सों ॥ निज तिय रत जो बुध कुज गेही ॥ ताहि चंद्रमा जो दृग देही ॥ धनी नृपति प्रिय सूर अवीन ॥ कल है वहै जल न्यों मीन ॥ जो कुज गेह चंद सुत आवै ॥ अवनि नंद तिहि देखन पावै ॥ १६० ॥ सुखी चतुर सुवचन को भाषी ॥ तिय सुत सहित सुजस अभिलाषी ॥ बुध आवै मंगल के घरै ॥ ता परिडीठि जीव जो करै ॥ १६१ ॥ तिय विलास रत गुन गौरव सों ॥ चारु विनीत प्रीति कर भव सों ॥ अति मति वंत बुद्ध कुज गेही ॥ देखै भृगु अशेष दृग तेही ॥ १६२ ॥ उग्र साहसी कुल को कलही ॥ साधुन छोडि मिलै उठि खलही ॥ जो कुज गेह बुधै करि पावै ॥ मंद अमंद ही ढिजो लावै ॥ १६३ ॥ चौपाई ॥ अति दरिद्र दुख तें तनु जरै ॥ पर उपकार सदा ही करै ॥ सिथिल लख्य भाव बुद्ध भृगु गेही ॥ दिन कर ताहि डीठि जो देही ॥ १६४ ॥ लगि असिद्ध धन पति को मंत्री ॥ सहित प्रपंच निधन बहु तंत्री ॥ दृढ व्रत बुध भृगु के गृह आए ॥ पूरन डीठि चंद के लाएं ॥ १६५ ॥ पावै नरपति सों अपमान ॥ रोगी निहित सोक निधान ॥ बुध आवै निकेत उशना कें ॥ होइ दरिद्र भौम के नाकें ॥ १६६ ॥ गुन सुशील मय पंडित होइ ॥ भूप समान कहै सब कोइ ॥





वुध आवै उशना के ओकें ॥ मुदित जीव जो जीव विलोकें ॥ १६७ ॥ सुललित वेष मदन उत करषी ॥ मो-
हे जुवति वदन छवि वरषी ॥ ललित वसन भूषन तन धरै ॥ वुद्ध लखै भृगु के निज घरै ॥ १६८ ॥ मि-
त्र कलत्र पुत्र औजान ॥ इनसों पीडित कहै सुजान ॥ सुख धन हीन शुक्र ग्रह आवै ॥ जो वुध मंद वि-
लोकन पावै ॥ १६९ ॥ छंद ॥ सील सत्य सों सहित विलासी ॥ मंजु वदन कवहूं न उदासी ॥ लहै भूप सों
वहु धन मानि ॥ वुध निज गेह लखहि शनि आनि ॥ १७० ॥ सुन्दर वपुष कुटिल पर वीन ॥ सदा नृपति
सेवा में लीन ॥ कला वंत अति जग को प्यारो ॥ निज गेही वुध मंद निहारो ॥ १७१ ॥ सूर समत्थ धनी गु-
नवान ॥ नृपसों लहै टहल वहु मान ॥ वली मही सव सरल सुभाई ॥ वुध निज गेह लखै गुन आई ॥
१७२ ॥ रिपु जेता नृप दूत कहावै ॥ कलहु करै तिहिं वुरत मलावै ॥ नीच कामिनी को अभिलाषी ॥ वु-
ध निज गेह देइ भृगु आंखी ॥ १७३ ॥ कारज सिद्धि विजय को धनी ॥ धरै वसन भूषन तन मनी ॥ निज
गृह चंदनंद जो आवै ॥ मंद ताहि जो देखन पावै ॥ १७४ ॥ चौपाई ॥ गूंथे रुचिर सुमन की माला ॥ निपु-
न भांति वनवावै शाला ॥ मनि गन वसन घरी दै जान ॥ शशि निकेत वुध देखै भान ॥ १७५ ॥ कुसव-
पु अति व्यय करै सदांही ॥ तिय सों लहै लाज सजग माहीं ॥ जो वुध आवै सदन पति ताके ॥ पूरन डीठि
चंद के ताके ॥ १७६ ॥ छली चोर प्रिय वक्ता सूर ॥ थोरे सुनै हृदै को कूर ॥ शशि निकेत वसै वुध आहि ॥
अवनि नंद जो देखै ताहि ॥ १७७ ॥ पंडित अमित मही पति मानै ॥ वहु भाषी अनेक विधि जानै ॥
जो वुध शशिनि केन्द्र में आवै ॥ जीव ताहि सव लोकन पावै ॥ १७८ ॥ प्रिय वक्ता सुंदर तन पीन ॥ गीत



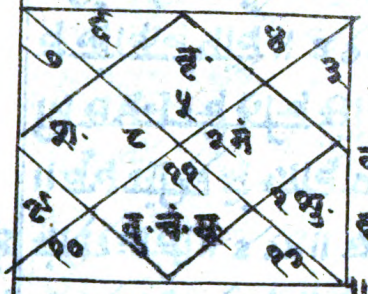
५।

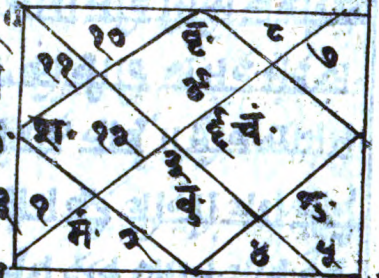
कुल भव तंस ज्ञान की खानि ॥ भूप सुलेख कुसुख की दानि ॥ होइ अनेक नरनि को नाह ॥ बुधै लखै गुरु निज गृह माह ॥ १९० ॥ नरपति को अमात्य कै बकसी ॥ अति मार अमर को अकसी ॥ तस करता सोंधन उपराजै ॥ बुध गुरु गेह डीठि भृगु साजै ॥ १९१ ॥ बन पर्वत कोटन को वासी ॥ गृह कारज में सदा उदासी ॥ कुचि त मलिन अंनवर भवैं ॥ बुध गुरु गेह मंद जो लखैं ॥ १९२ ॥ चौपाई ॥ आरंभै सो करै न काज ॥ होइ सुसील मल्ल सिर ताज ॥ बडो कुटुंबी धनि के गेह ॥ बुधै लखै रवि सहित सनेह ॥ १९३ ॥ जल उपजी वी भीरु अपार ॥ करै प्रसून कंद वै पार ॥ धनी होइ जो बुध धनि धाम ॥ ताहि लखै शशि दृग आराम ॥ १९४ ॥ सूधो सलज सुखी धन वान ॥ चपल वचन भाषी मति वान ॥ जो धनि गेह चंद को नंद ॥ ताहि लखै मंगल सा नंद ॥ ताहि त अन धन वाहन वृंद ॥ होइ ग्राम पुर पति सानंद ॥ मंद सदन में शशि को नंद ॥ लखै ताहि गुरु न जरिअ मंद ॥ १९५ ॥ प्रजा बहुरि उपराजे कामी ॥ पंडित अति कुरूप निर नामी ॥ नीच संग तें अति सुख लेखै ॥ बुध धनि धाम शुक्र जो देखै ॥ १९६ ॥ पापी निपट होइ जन हीन ॥ सुख सों रहित कुटिल मति दीन ॥ ५१

जांतक चंद्रका

जा चं ॥ आवै बुद्ध मंद के ओकै ॥ ताहि मंद जो नेकु विलोकै ॥ १९८ ॥ रोला छंद ॥ अंध गुरो रु परि दृष्टि फला
५२ नि ॥ सत्य हीन हिय भीरु होइ सिगरे जग जाहिर ॥ भाग्यवंत अति धर्म कर्म वंदन में माहिर ॥ गुरु जा·
कें जनि समैं भौम के मंदिर आवै ॥ सो विनहूं नर भानु मान जो देखन पावै ॥ १९९ ॥ अति पर धान विनीत
होइ वनिता अनुगामी ॥ विमल बुद्धि रत धर्म कर्म धन वंत सुनामी ॥ सदा ने आवै जो जीव कहूं जो भौम
आगारै ॥ तिहि परि पूरन डीठि आइ जो चंदु निहारै ॥ २०० ॥ निपट क्रूर मति धूर्त रहै सुख वानि तन के ॥
नृप सेवारत सदा निकर उप राजै बन कै ॥ रहै संग जन भूरि अमर गुरु जो कुज गेही ॥ जिहि परि पूरन डीठि
आइ मंगल जो देही ॥ २०१ ॥ शुभ चरित्र सों रहित परुष भाषै सब ही सों ॥ हर वर बोले वचन आसुरुखा
उप राजै ॥ कुज मंदिर गुरु बुद्ध ताहि जो डीठि समाजै ॥ २०२ ॥ पहिरै तन अवतंस गंध पुहुपन की माला ॥ अ·
५२ मनवसन रुचि स्वच्छ स्वच्छ वनवावै शाला ॥ संजु सुंदरी भोग करै जो लों जग जीवै ॥ कुज निकेत में पाद शुक्र
अब लोकै जीवै ॥ २०३ ॥ क्रोध लोभ सो सहित निपट साहसी निडुर मति ॥ जुवति मित्र सुख हीन अनृत भा·
षी मलीन अति ॥ जो सुरेश गुरु अवनि नंद के मंदिर आवै ॥ ताकौं डीठि अमंद मंद अब लोकन पावै ॥ २०४
॥ रोला ॥ सुभट अनेक नि मध्य विजै देखत ही पावै ॥ वाहन भृत्य समेत नृपति मंत्री सुत गावै ॥ कबहूं कब·
हुं कै जाइ संग आमय की पीडा ॥ जो अवलोकै भानु गुरु हि भृगु पति की नीडा ॥ २०५ ॥ भाग्यवंत शुचि संत
सत्य साहस को भाजन ॥ अति विनीत विनक पर वाज आवतु पर काजन ॥ भृगु सुत के घर आइ वसै जोरे·
जा तक चंद्र का व पुरोहित ॥ तुहि नकिरन जनि समै जोहि देखै जो कोरि हितु ॥ २०६ ॥ सेवा वस करि आसु करै ५२

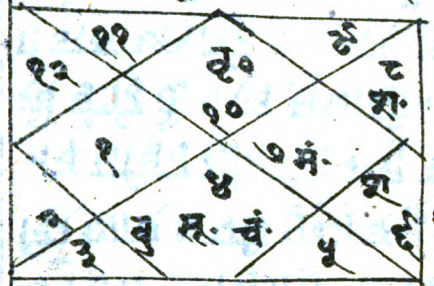
कर तल नृप मानहि ॥ भाग्यवंत सुख सुत समेत उपकारै जानहि ॥ प्रिय वक्ता शुचि होइ जीव जो भृगु निकेत में ॥ औनि सुतैना परै चूक तिहिं डीठि देत में ॥ २०७ ॥ सकल कला पर वीन भूपतें धन उपराजै ॥ मंत्र तंत्र विधि विदित चारु लखि मन्मथ लाजै ॥ भाग्यवंत अति विमल जीव भृगु मंदिर आए ॥ परि पूरन कहूं डीठि चंद्रके प्रास २०८ धन समेत शुभ चरित चारु भूषन रुचि राखै ॥ विभव सहित मति वंत मंजु मृदु बोलन भाखै ॥ जननि समै जो होइ जीव भृगु मंदिर वासी ॥ ताको जो भृगुलखै डीठि के परम सुधासी ॥ २०९ ॥ ते सुख पावै भूरि हो तजे पुत्र दार सें ॥ ग्राम ईश जे चतुर विदित जग जस अपारतें ॥ अमर पुरोहित सदन आइ सोहै उशना के ॥ पर परि पूरन डीठि भानु नंदन के ताके ॥ २१० ॥ रोला ॥ मित्र दार सुत सौख्य सहित नृप को हित कारी ॥ जगत प्रतिष्ठा वंत सु धन तन भूषन धारी ॥ जो सुरेश गुरु आइ जनि समै बुध गृह सोहै ॥ तिहि परि पूरन डीठि कमलिनी नायक जो है ॥ २११ ॥ पर उपकारी होइ धनी गुन गानन को भाजन ॥ छन ही में वस करै वचन रचना सों राजन ॥ ग्राम अधिप वर होइ ताहि मानै अनेक नर ॥ जो बुध गेही जीव ताहि जो लखै सुधाकर ॥ २१२ ॥ सूर जुरें जिहिं समरत हां घायल ह्वै जीतै ॥ अतिवल वंत उदार करै जो चित में चीतै ॥ होइ महा धन वंत गनै नहि कछु कुबेर हि ॥ जो बुध के गृह गुरु सनेह जो मंगल हे रहि ॥ २१३ ॥ मित्र दार सुत सौख्य सहित धनवंत कुसल मति ॥ ज्योतिष





चालक चंद्र

में परवीन शिल्प कर्मन में अति रति॥ मीन केतु नें मंजु होइ मृदु वचन प्रकासी॥ जो बुध देखें आनि जीव बुध मंदिर वासी॥ २१४॥ कृषि करमन में दक्ष महा धनवा वै वापी॥ सधन कामिनी भोग करै जोलों जग जीवै॥ बुध मंदिर में आइ शुक्र अब लोकै जीवै॥ २१५॥ ज्ञानवंत धन वंत लहै नृपतें गरु वार्द्र॥ होइ ग्राम पति सधन रचै रुचि सों फुल वार्द्र॥ चंद नंद के सदन अमरपति को गुरु आवै॥ ताकों डीठि अमंद मंद अब लोकन पावै॥ २१६॥ धन दारा सुत सौख्य जाहि सिर रोज गुमावै॥ श्रमश्च भाग नहि मिलै बहुरि ग्रा पहिं चलि आवै॥ जो कुली रसे जीव आपनो भौन बनावै॥ तिहि परि पूरन डीठि भानु अब लोकन पावै॥ २१७॥ नृप खजान ची होइ निपट सुंदर सुख कारी॥ धन वाहन सों सहित होइ निरमलय सधारी॥ जो सुरेश गुरु आइ करक में बैठक साजै॥ तिहिं परि पूरन डीठि चंदु दीवे को वाजै॥ २१८॥ आछे



आछे वसन चारु भूषन रुचि राखै॥ गुनी सूर परवीन सदा पठिवो अभिलाषै॥ धृत वंतन में गृह निपुन अमर गुरु जो शशि गेही॥ तिहिं पर पूरन डीठि आइ मंगल जो देही॥ २१९॥ नित मित्रन सों मिलै सकल सिध्यै उप राजै॥ विसद वृद्धि अतुलित प्रताप ताके सिर छाजै॥ नृप अमात्य शुभ चरित जीव शशि के गृह आए॥ चंद नंद की डीठि अखिल करुना सों पाए २२०॥ विभव सहित बहु तरुणि भोग रत साहिब रूरो॥ अक्षत किरनि के भौन असुरगुर अभिलाषे॥ तापरही ठि अनेक आनि उमना जो राखै॥ २२१॥ चारु विभूषन सहित मान धन गुन गन पूरन॥ सेनापति

जा·चं ५५ संग्राम मध्य जय पावै तूरन ॥ वहु वात नि विस्तरै घरै हिम कर के आवै ॥ जन्म काल सुरस चिव मंद जो रे खन पावै ॥ २२२ ॥ रोला ॥ अति व्यापार कहोद् अमित नृप को धन धूते ॥ सील वंत जग विदित करै शुभ कर्म बहूते ॥ अमर पुरोहित जो दिनेश के मंदिर गामी ॥ ताकों जो रवि लखे तेज में सोजग नामी ॥ २२३ ॥ जुवति जनन सों रतन हेम रूपो वहु पावै ॥ होद् निपट अभिराम काम पट तर क्यों पावै ॥ बुद्धि वंत जग विदित जीव रवि के गृह आए ॥ परि पूरन जानि समै डीढि हिम कर की पाए ॥ २२४ ॥ मानै सब गुरु लोग विमल गुन गौरव ताके ॥ वनि तन को सिर ताज लहै धन चहूं दिशा के ॥ सत करम नि में निपुन जीव जो तरनि निवासै ॥ आवै जो जनि समै अवनि सुत डीढि प्रकासै ॥ ५० २२५ ॥ जो निकेत निर्मान नाहि में अति पर दीनो ॥ अखिल गुन नि में गुनी रहै सब धनर समीनो ॥ नृप को होद् दिवान जीव रवि सदन सिधारै ॥ तिहि परि पूरन डीढि सुधाकर नंद निहारै ॥ २२६ ॥ अति गुन ज्ञ पद रुचिर अचिर पावै ॥ नर पतितें ॥ जाकें उत पति समै जीव रवि कें घर आवै ॥ ताहि कृपा करि असुर पुरोहित देखन पावै ॥ २२७ ॥ होद् सकल सुख छीन छीन तन कु वचन भाषी ॥ भूलें हूं नहि होद् कवहुं उत्सव अभि लाषी ॥ वात रोग सों रहै सदा पीडित तन जाके ॥ भानु भौन जो जीव भानु नंदन के ताके ॥ २२८ ॥ नृप सों रखै विरोध रहै मीतन सों निस दिन ॥ जग को वैरी होद् क्रूर मति दया धरम विन ॥ जनम समै जो जीव हरषि निज मंदिर आवै ॥ ताकों पूरन डीढि भानु अव लोकन पावै ॥ ५५



जानकी चंद्रका

जा-चं
५६

॥ २२८ ॥



कहि सबसौं व चंद आसारत अति जो निज गे रवे गर्न अखर्व भाग धन को परि पूरन ॥ तरुनि प्रेम रति कथा देइ तूरन ॥ होइ सकल सुख सदन और को कछू न लखै ॥ जोनि जगे ही जीव नंद सों देखै ॥ २२९ ॥ अन सों अंकित संग समर कर मन मैं माहिर ॥ हि कूर सकल सूरन में जाहिर ॥ सब भांति नसौं परुष पै पर उपकारी ॥ ही जीव लहै दृग मंगल धारी ॥ २३० ॥ नृप को होइ दिवान मान धन पूरन दाता ॥ जस ऐ स्वर्य समेत सबै विद्यन को ज्ञाता ॥ निशि वासर हूं चित्त एक राखै उपकारै ॥ नि जनि केत में जीव ताहि जो बुद्ध निहारै ॥ २३१ ॥ अति प्रसन्न मन धनी होइ सब सुख को भाजन ॥ मान सहित ऐश्वर्य गनै ना कछु मन राजन ॥ पंडित अति पर वीन दीन को दया प्रकासी ॥ देखै जो भृगु आइ जीव जोनिज गृह वासी ॥ २३२ ॥ होइ भोग सुख हीन दीन विन धन जग भरमैं ॥ लहै पराभव पूरि शत्रु संगर अब सरमैं ॥ बसै नकवहु आइ ठंसपुर घर अपन मैं निज गृह वासी जीव लखै जो गुरु सपने मैं ॥ २३३ ॥ रो ना ॥ निज कुल को नृप होइ मधुर बैन नि को भाखी ॥ जो उतपति के समैं जीव शनि के गृह आवै ॥ हरषि कमलिनी कंत ताहि जो देखन पावै ॥ २३४ ॥ होइ सुकुल उद्धरन जनक जननी को सेवी ॥ अति उदार धर्म ज्ञ सील मय पै अद्ध मेवी ॥ जो सुर गुरु निज गेह मंदिर को देखै ॥ ताको रजनी कंत कृपा करि करि अवरेखै ॥ २३५ ॥ अखिल अर्थ की सिद्धि होइ नर पति करुना तैं ॥ जाको धन को निकर चल्यो आ वै चहु घातें कीरति वंत अनंत जीव जो मंद अगारै ॥ आवै जो करि कृपा ताहि जो भौम निहारै ॥ २३७ ॥

जातक चंद्रका

५६

जो चं ५५ अति सुसील मय विनय सहित धरमज्ञ कहावे ॥ मधुर वचन भावे अमोल सब के मन भावे ॥ जो आवे सुरनि कर पुरोहित मंदनि केतें ॥ ताकों सुन जरि करै चंद सुत कृपा समेतें ॥ २३८ ॥ गुन समेत धन सहि



त होंइ विद्या समेत मय ॥ जो आवे जनि काल अमर गुरु मंद अगारे ॥ असुर पु रोहित अखिल डीठि कै ताहि निहारे ॥ २३९ ॥ ऊच धाम अभिराम सकल संप ति सोंपूरा ॥ रहे जनम भरि पूरि लहै जग में जसु रूरी ॥ जो उतपति के समे जीवरा नि के गृह सो है ॥ ताहि कृपा करि डीठि अखिल रवि नंदन जो है ॥ २४० ॥ अध भृगो रुपरि दृष्टि फलानि ॥ भ्रवं गमछंद ॥ पावे कृपा करि पूरन तूरन राज ५८ वें ॥ कामिनि भोग करै सुख साज समाजनें ॥ जो अवनी सुत के गृह शुक्र हि जानिकै ॥ देखहि डीठि अशेष दिवा कर आनिकै ॥ २४१ ॥ सात सी चारु जसी लो प्रसिद्ध जहान में ॥ शुक्र हि जो अत लोक हि चहु सनेह में ॥ २४२ ॥ हीन सदा सुख धन सो मान सों ॥ दीन अधीन मलीन रहै विन ज्ञा न सों ॥ आवहि जो भृगु नंद मही सुत के घरै ॥ ताहि निहारे जो कुज पुंज कृपा करै ॥ २४३ ॥ पा वै न सोक लही कल ही सब गा वर्द ॥ सोन कुडुं विनसों मन प्रीति वढ़ा वर्द ॥ बुद्धि पराक्रम सोंवि न चारु कहा वर्द ॥ बहु कहूं कुज गेह सितहि लखि पावर्द ॥ २४४ ॥ पुत्र कलत्र समेत सुखी सब काल सों ॥ कीरति वंत विनीत उदार कृपाल सों ॥ जो डसना कुज मंदित प्रीति वढ़ा वर्द ॥ ताहि कृ पा करि जीव जु देखन पावर्द ॥ २४५ ॥ होंइ सुसीलो जसी लो कुटुं विन पालर्द ॥ चिंता छर्द मन ५७

जालक चंद्रिका

जा-चं ५८



में रहै वैरिन सालई ॥ जो कुज गेह आवहि भृक्र सनेह सों ॥ ताहि सनी चर देखवहि डीठि अलेंह सों ॥ २४६ ॥ रोला ॥ वाहन सों हित मानै सुगंध प्रसून सों ॥ भोग करै निशि वासर वार वधून सों ॥ जो उश्नानिज मंदिर बैठ हि डोलि कै ॥ ताहि लखै दिन नाथ दुवोट्ट ग खोलिकै ॥ २४७ ॥ सील सुधा मय बैन कहै वुधि वंत है ॥ पालैस नेह सदा निज वंस को कंत है ॥ जी महं राखहि प्रीति सदा कुल दानिसों ॥ जो उश्ना श्नि गेह लखै श्शि मान सों ॥ २४८ ॥ पावै कहां सुख पुत्र कलत्र तें गेह तें॥ सूनों रहै हिय साधु तें मित्र सनेह तें ॥ बैठ हि जो उश्ना निज मंदिर भारिकै ॥ ताहि लखै अवनी सुत डीठि पसारिकै ॥ २४९ ॥ सील समेत जुनी छवि जीत हि मारकी ॥ चिन्ता की चोप वढा वहि देखन हारकी ॥ धीरज सत्व समेत लखै सुख पाद कै ॥ जो उश्ना निज गेह लखै वुध आद कै ॥ २५० ॥ वाहन सों गृहनी गृह पुत्र समेत है ॥ मित्र वहो गाथ पाद विराजै सचेत है ॥ जो उश्ना निज मंदिर आ वहि चैन सो ॥ ताहि निहारै जीव कहूं भरि नैन सो ॥ २५१ ॥ दीन सदा धन हीन विना सुख सो रहै रोग समेत मलीन न साधुन को चहै ॥ जो उश्ना निज धाम वसै सुख पाद कै ॥ डीठि परै कहूं ता पर मंद की आद कै ॥ २५२ ॥ रोला ॥ सादर भूपति के अधिकार हि पाद कै ॥ पंडित ताकी कीरति रहै जग छाद कै ॥ होद गुनी सुवि नीत जो वुध के गेह में ॥ आवहि जो उश्ना रनि देखै सनेह में ॥ २५३ ॥ स्याम सरोजते लोचन सुंदर मैंन तें ॥ अंवर अन



५८

बालकृष्ण चंद्रका



चंद्रसमेत रहै चित्त चैन तें ॥ भोगी सदा बुध के घर में भृगु नंद जो ॥ ताहि निहारहि आनि कृपा करि चंदु जो ॥ २५४ ॥ काम कला परवीन सुभाग सों ॥ छीन करै वसु भूरि प्रिया अनुराग सों ॥ जो उशना बुध मंदिर बैठहि रीति सों ॥ ताहि धरा सुत जो अव लोकहि प्रीति सों ॥ २५५ ॥ पंडित वाहन वित्त समेत सदा रहै ॥ होइ सुखी कुल मंडन भूप कृपाल है ॥ कै पतना पति होइ जु बुध गेह में ॥ आवहि जो उशना बुध देखहि सनेह में ॥ २५६ ॥ बुद्धि समृद्धि की वृद्धि लहै निशि सोमहू ॥ कीरति स्वच्छ महै विदिसों सुदिसों चहूं ॥ चित्त में नित्त रहै परि पूरन चैन सों ॥ जो बुध के गृह शुक्र लखैं गुरु नैन सों ॥ २५७ ॥ भीत रहै रिपु सों चित चंचल आलसी ॥ जा सुख तें नित घात बढै कुटुंकाल सी ॥ छोडैं ताहि कुटुंब के जो बुध गेह में ॥ देखहि जो भृगु नंदहि मंद सनेह में ॥ २५८ ॥ नाशि लहै कलही सुखपुंज विनीशिना भीति अरिंदन की लहै भूरि उदासिनी ॥ जो उशना निशि नायक



मंदिर में वसै ॥ ताहि विलोकन कों सविता जुल सै लसै ॥ २५९ ॥ पावै सुत सुख महा लघु वैश में ॥ मात की सौंति सों प्रेम लहै धनु देश में ॥ जो उशना शशि के गृह आवै नंद सों ॥ डीठि लहै परि पूरन जो कहूं चंद सों ॥ २६० ॥ होइ सुखी धन वंत कला पर वीन सों ॥ आसु करै अरि पुंजन मारिकै छीन सों ॥ आइ वसै उशना जहं बैठक सोम की ॥ ना पर डीठि परै परि पूरन भौम की ॥ २६१ ॥ पुत्र कलत्र के दुःख लहै तन छीनता ॥ विघन में पर वीन मिटै नहिं दीनता ॥ होइ महा गुन वंत निशा करके घरै ॥ आवहि जो सित बुद्ध विलोकि कृपा करै ॥ २६२ ॥



चारु चरित्र उदार महा मिठ बोलना ॥ कामिनी सूनु सुरवी चित चातुर लोलना ॥ संपति वंत सदा रहै जो शशि के घरै ॥ २६३ ॥ आवहि जो उशनाधि खना लखिवो करै ॥ २६४ ॥ कीरति मोद विहीन रहै मन दीनता ॥ व्यर्थ पराक्रम सुख की क्षति छीनता ॥ थान लहै न लहै भृगु वैठक चंद की ॥ जो परि पूरन डीठि परै कदु मंद की ॥ २६५ ॥ रोला ॥ है तिय प्रेम अधीन करै धन भोग कों ॥ स्पर्द्ध करै नित चित्त सहै न वियोग कों ॥ जो उशना रवि मंदिर में जनिके समै ॥ ताहि लखै नलिनी पति डीठि सुदेश में ॥ २६६ ॥ शत्रु समान लहै जननी जग आद कै ॥ होद्द सुखी तिय क्रोध को भाजनु पाद कै ॥ जो रवि मंदिर में उसना जनि काल में ॥ ताहि निहारहि चंदु जो डीठि विलास में ॥ २६७ ॥ सेवक भूपति को धन अंव समेत सो ॥ काम कथा मद का नुरहै नित देत सो ॥ जो उशना दिन नाथ के मंदिर आवई ॥ पै अवनी सुत ताहि विलोकन पावई ॥ २६८ ॥ होत हीतें हित राखहि लोभ में भूरि सों ॥ काम तरंग मन ही में रहै भरि पूरि सों ॥ आद वसै उशना रवि मंदिर में कहूं ॥ ताहि निहारन कों हुलसै बुध जो कहूं ॥ २६९ ॥ पुत्र नतें जुवती गन तें सुख कों लहै ॥ भूप अमात्यस वाहन शत्रुन कों दहै ॥ चाकर कों वहु देइ जसी रवि गेह में ॥ जो उशना गुरु देखहि ताहि सनेह में ॥ २७० ॥ होद्द महीप समान समृद्धि समेत सों ॥ कै कुत वाली करै न डरै वहु चेत सों ॥ सूरज के गृह वैठक जो भृगु नंद की ॥ ता



जालंधर का

जा॰चं ६१ पर डीठि परै परि पूरन मंद की ॥ २७२ ॥ रोला ॥ होइ प्रचंड मही पति भाजनु भाग को ॥ मानी धनी कृपा ग्राभिख राग की ॥ वाहन देश बहु जो सित ग्रावई ॥ जो गुरु मंदिर सूरज देखन पावई ॥ २७३ ॥ पाइ के राज सौ मान विराजै जहांन में ॥ भोगी विनीत प्रसिद्ध सुखवान सौ पान में ॥ धीर महाव न वंत जो जीव के गेह में ॥ ग्रावहि जो भृगु चंदु विलोकै सनेह में ॥ २७४ ॥ पुरुष समेत तिय प्रेम भ रयो रहै ॥ होइ स वाहन शत्रु नैं जी में डरयो रहै ॥ चित्त प्रसन्न सदा गुरु गेह में ग्राइ कै ॥ बैठ हि जो उ शना कुज डीठि कों पाइ कै ॥ २७५ ॥ वाहन ग्राछे विभूषन संचर पाइ कै ॥ भूप सो राजै जहान में कीर्ति बढाइ कै ॥ स्वल्प ग्रहारी कहूं उसना गुरु के घरै ॥ ग्रावहि जो शशि मंद की डीठि कहूं परै ॥ ६१ २७६ ॥ हाथी तुरंग महेम विभूषन वंत सों ॥ ग्रम्बर स्वल्प लसै भुव कंत समेत सो ॥ ग्रावहि जो उश ना गुरु गेह ग्रनंद सों ॥ ताहि लखै हित सों गुरु डीठि ग्रमंद सों ॥ २७७ ॥ भोग को सौसुखकर्मको भाजनु होइ सो ॥ ग्रानंद सों रहै उत कर्ष समोइ सो ॥ जो उसना उत पति समै गुरु गेह में ॥ ता हि लखै रवि सूनु जु डीठि ग्रछेह में ॥ २७८ ॥ सीतल होइ सुभाव धनी बल वान सों ॥ संपति वं न कौं तिय भोग ग्रपान सों ॥ जो उशना शनि बैठ हि ग्रानि सयानि की ॥ ता पर डीठि परै जो दिन नाथ की ॥ २७९ ॥ होइ सुमंगल भाजन सुंदर काम तें ॥ प्रेम समेत सदा धन वाहन वाम तें ॥ ग्रावहि उशना कहूं बैठक मंद की ॥ डीठि परि पू रन तापर मंद की ॥ २८० ॥ रोगन सों ग्रमसों तनु ताकों सदा रहैं ॥ होत ग्रनर्थन



जा॰चं ६१

जान्वे ते धन हानि महा रहै ॥ जो भृगु नंद आवै शनी चर के घरै ॥ ता पर पूरन डीठि जु मंगल की परै ॥ २९०
९७ ॥ पंडित होइ विधिज्ञ धनी वल वंत सो शील को भाजन होइ प्रपंची अनंत सो बात कहै मृदु मीठी
जो मंद के गेह में ॥ आवहि जो उशना लखै वुद्ध सनेह में ॥ २८१ ॥ जाकी सदा रुचि गीत वनादु वे
में रहै ॥ वस्त्र सुगंधित माल सदा पहिरो चहै ॥ होइ पवित्र जो मंद के गेह में आवई ॥ जो कहूं शु-
क्र सदा गुरु देखन पावई ॥ २८२ ॥ वाहन शोधन वाम सुपुत्र निपादू कै ॥ सुखकरै जग में जस
को उपजादू कै ॥ बैठ क जो शनि के गृह में भृगु नंद की ॥ ता पर डीठि अछे हयरै कहूं मंद की ॥
२८३ ॥ अथ मंद स्यो परि रव्या दीना दृष्टि फलानि ॥ घनाछरी ॥ गो महिष छेरी ढेरी गाडैं घ-
ने शील है ॥ कृषी में निरत सत कर मन कों करै ॥ होइ भूमि नंदन मंदिर शनी चर जो ता परन जरि
४१ सूरज की जो परै ॥ नीच अनुरागी शील रहित अभागी खल चपल अधम पर धन भूरि सो हरै ॥ दे-
खै चंदु ताहि परि पूरन सप्रेम डीठि आवे मंद जो कहूं अवनि नंद के घरै ॥ २८४ ॥ सत्य धन रहित
अहित पर जन में निशि दिन वातें वहु करै फर फंद की ॥ होइ कुंज मंदिर में सूरज को नंदु परै ता-
परन जरि जो अशेष अवनि नंद की ॥ चोरु सठ कल ही जुवति सुख हीन छीन-
तन करै नित नीच नव नंद की ॥ भूत नै के गेह परै रवि तनै जो ननम समें पावै जो
न जरि चंद तनै की अमंद की ॥ २८५ ॥ नृपति को मंत्री सुख धन समेत होइ नृप-
ति कृपा तै पावै सुख्यता परम अति ॥ होइ कुज मंदिर में तरनि को तनै ताहि देखै



जा॰ चं॰ ६३ सुत जरि जाहि पूजत अमर पति ॥ मलिन सदा विदेशी कलही कलेसी होइ धन विन माने पर तरुनिम॰ नेह अति ॥ मंगल के मंदिर जो तरनितनय आवै सुत जरि ताहि लावै उशना विचित्र मति ॥ २८६ ॥ क॰ वित्त ॥ विद्या में निपुन सभा चतुर धन रहित रल मिलाहि नित भोजन परा एतें ॥ शुक्र के सदन शनिजन म समे जाके पूर पूरन नजरि दिन नायक की पाएतें ॥ भूषन वसन तिय तनय को सुख कारी नृप उप कारी होइ प्रीति उप जाए ते ॥ उशना सनेह आवै ताहि चारु चंद्रमा को नजरि लगाएतें ॥ २८७ ॥ होइ बडो साहु सीस कोप बहु बोले बोल समर में मारहि पचारि सैना पर की ॥ असुर पुरोहित के मंदिर अखिल परै अवनि॰ तनेकी डीठि वरोर सनीर की ॥ तरुनिसों सहास औ विलास रतनि धरनि प्रीति चहै चेत न पुंसक कीनीच न॰ १३ र की ॥ देखैं हिम कर को दुलारो सुनजरि वारै बैठक जु आवै मंद उसना के घर की ॥ २८८ ॥ पर उपकारी पर दुख सों दुखारी साधु जगत को प्यारो निज मनु राखै हरि में ॥ होइ भृगु नंदन के मंदिर तर नित नै जनम समे मे जीव की नजरि में ॥ पावै भूप आदर तें रतन विलासी बली कोन धन वंत दीजै ताकी सर वरि में । तरनि तनै कोनिज मंदिर में देखि वेकों शुक्र अभि लाखै मनु राखै नक सरि में ॥ २८९ ॥ कवित्त ॥ कोही द्रोही पापी सुख सों रहित नीच हिन जाकों हित जाति है मलीन मति ज्ञान की ॥ बुध के निकेत दिन कर को तनय आवै डीठि परि पूरन जो परै मानु भान की ॥ सुंदर सुसील नर पति की दहल पावै वनहू में न ताकों फिकि रिखा न पान की ॥ हिम कर तनै के निकेत जो तरनि तनै सुनजरि परै जो कहू कलानि धान की ॥ २९० ॥ सुमति गंभीर धीर जाहिर ज॰ ६३



जा तक चंद्रका

जा. चं. ६४



हान मान वंत विधि सहित सकल काज को करै ॥ चंद्रमा के तनै के निकेत रवि नंद जो आवनि तनै की सुनजरि नेक जो परै ॥ धनी चारु सुमति विनीत सुवरन लिखवै वैरिन के युद्ध में हथ्या रहु ठि कै हरै ॥ देखै वुध ताहि सुनजरि सों जनम समै रवि को तनै कहूं आवै वुध के घरै ॥ २८९ ॥ गुन गनवंत साधु संगती गुपित धनी पावै नृप दहल वडे वडे उकुर की ॥ चंद्रमा के तनै के निकेत रवि नंदु आवै पावै परि पूरन नजरि सुर गुर की ॥ महा पर वीन जुवति न के सिंगार वे में धरम करम सों भगति करै गुर की ॥ आवै चंद नंद के निकेत रवि नंद जो देखै भृगु नंदन कसरि छोडि उर की ॥ २९० ॥ कवित्त ॥ जननि कलेसी त्रिय सुख विन धरै वसन मलिन तन असन मलिन खाहि ॥ चंद के सदन आवै मंद जो जानि समै देखैं सुनजरि परि पूरन तरनि ताहि ॥ धन उपराजै वंधु जननि कलेश्रा कारी पावै अपमान जव साधुकी सभा में जाहि ॥ जनम समै मंद आवै चंद्रमा के घर ताहि जो निहारै कहै अमृत किरनि जाहि ॥ २९१ ॥ नरवल हीन तन नृप की प्रसन्न नातें पावैं धन समूह सुवसन सों ॥ जनम समैं में मंद चंद के निकेत आवै अवनि को नंदन निहारै तासु तन सों ॥ मीठी वातें कहै पै कठिन औ चपल वुद्धि दंभी अति चतुर विदित तिहूं पन सों ॥ तरनि कोननै जो निकेत आवै चंद्रमा के ताहि जो निहारै वुध आनंद मगन सों ॥ २९२ ॥ भूमि सुत गेह निरत धन वाहन सों विभूषन सहित सुख करै जग आद कै ॥ कुवचन भावी औ कुरूप विन मान होइ रहित उदार तासों छपनि कहाद कै ॥ अमृत किरनि के निकेत जो तरनि तनै ता पर रहै जो उशना



६४

४१

जानकी चंद्र का

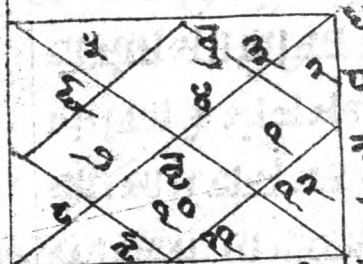
जा.चं. ६५ को डीठि छाड़ कै ॥ २९३ ॥ कु चरित करै धन वाहन विहीन सत जीव भरि देखै दुख ग्रसन वसन को ॥ जनम के समैं ग्रनि सूरज सदन देखै नायकु कहत जाहि क मलिनी केवन को ॥ सुवसन भूषन कलत्र पुत्र मित्र सु ख करै कल कीरति सुभोगी धन को गनको ॥ सूरज के सदन में जो मंद को वदनु देखै वनय तु जो है निशि तिमिर हरन को ॥ २९४ ॥ पुरुष स कोप वचन विन करुन करुन होइ सब रीति जानै समर अपार की ॥ सूरज सद न आवै मंद उत पति के समैं तापर अरोष जो नजरि परै आर की ॥ धन धन सूनु सुख हीन दीन वसन मलीन जिय जाकें कछु सुधि न अगारकी कमलिनी के कंत के निकेन आवै मंद कहूं परै सुन जरि तापै चंद के कुमारकी ॥ २९५ ॥ ग्राम पुर पति सु चरित पर सिद्ध सुत मित्र सो सहित निध ५० रव रहै रोर सों ॥ आवै भानु भोंन में जनम समै भानु सुत अमर पुरोहित निहारै ताकी ओर सों ॥ अन्न धन वाहन समेत सुख करै सब जिय जरत रहै कामिनी के सोर सों ॥ आपने पिता के भोन मंद जो अनंद करै तासों नेकु उशना निहारै नैन कोरसों ॥ २९६ ॥ जगत को मीन जग विदित गंभीर गुर सील को धर मु धनी सदग्रा धनेग्रा की ॥ जीव के निके त जो तरनि तनै आवै कहूं तापर परै जो ने कनजरि दिनेग्रा की ॥ तिय सुत सुख भोगी भारी सु चरित कारी धनी मानी रीति सु निवाहै निज भेस की ॥ जनम समै मे ग्रनि होइ सुरु गुरु गेह परै जो नजरि पूरी भू सुर नरेग्रा की ॥ २९७ ॥ जे नरु चैं कातू तेंदू चरित ग्र मित करै दीरघ विदेशी होइ निपत समीर रवानि ॥ आवै जो सुरेग्रा गुरु गेह में तरनि त

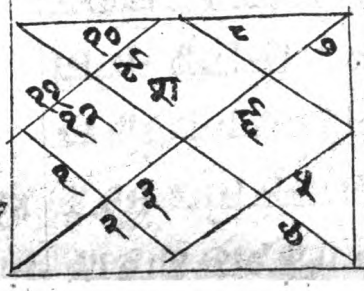




जालंधर का चंद्र ६५

मैं ताहि सुनजरि कहूं मंगल विलोकै आनि ॥ धन गुन वंत चारु नृपति को अधिकार लहै सुचि अंग सुचि करै आचरन जानि आवै मंद गेह नाक नायक पुरो हित के देखैं चंद्रमा को पूत नजरि अशेष ठानि ॥ २९८ ॥ नृप को जो दिवान प्रधान चमूपति बल वान धन वान जाको वचन न टारै टरै ॥ सूरज को नंद सो आनंद सों अमर गुरु गेह आवै तापर जो जीव सुनजरि परै ॥ सुचि बहु काज कर होद है जननि ताके धीर पर देश वासी कबहूं न आवै घरै ॥ मंद जो जनम समै गुरु के निकेत आवै ता पर प्रसन्न है उसना सुनजरि करै ॥ २९९ ॥ कबित्त ॥ पर अन्न भोगी रोगी विक्रमी विदेशी वासी भूले हूं नरु खैं राखै जीमें साधु संग की ॥ उत पति समैं जो में द आपने सदन आवै पैरै पूरन जो नजरि पतंग की ॥ कामी सुत रुनि धनी नामी नितही जननि रुचि राखै राग रंग की ॥ दिन कर को नंदन जो आपने सदन आवै चोप करि चंद्रमा निहारै छवि अंग की ॥ ३०० ॥ क्रूर मति सूर साहसी कृतवंत पर आनद को सदनु महित अभिमान सों ॥ आवै निज मंदिर में तरनि तनै जो कहूं मंगल निहारै ताहि मंगल विधान सों ॥ साहसी समेत सत्व धीरज को धाम अभिराम अति रहै कबहूं न विन जान सों ॥ आपने निकेत मध्यत रनि तनय आवै देखै चंद्रमा को पूत पूरे सन मान सों ॥ ३०१ ॥ सुंदर अरोगल है धन गुन समुदाय नृपाहि रिझाय सो निरखि प्रसन्न करि वासर मही प सुत आवै निज मंदिर में ताहि जो निहारै जो





जा·चं ६७ वसादर जनरि भरि॥ भागवंत कामी निज नियम विहीन यीन सुरवी धनवंत भागी भूपसो रहित ग्रारि॥ मंद निज मंदिर सेग्रावे उतपति समै ग्रानंद सों उसना निहारै नाहि सुन जरि॥ ३०२॥ इति श्री महा राज कुमार ग्रचल सिंहा कृया त्रियाठि ग्रंभुनाथ विनिर्मिता यां जातक चंद्रिकायां दृष्टि फल ध्यायः ६ ॥ ग्रथ संन्यास योगाः॥ राज योग सें जो कहूं परै योग संन्यास॥ राज साज कों मेटि कै जयी होइ संन्यास॥२॥ चारि पांच षट खेट जा पैर एक गृह ग्रादु॥ तपसी निहचै होइ सो कहत सुकवि समुदादु॥३



॥ परैं चारि गृह एक घर तपसी होइ ग्रनंत पुत्र मित्र धन धाम सो सहित कहत हैं संत ॥ ३॥ या के भेद ग्रनेक हैं कहौ सुमै निर धारि॥ ग्राचीन नि को दोरिव मत हिरैं विचारि विचारि॥ ४॥ सू·चं·मं·बु॥ रवि ग्रशि मंगल भारगव एक भौंन में जासु॥ होइ तपस्वी मनुज सो देव सराहत तासु॥ ५॥ सू·चं·मं·बु॥ स्यों हीं रवि शशि सोम सुत बहुरि धरनि को पूतु॥ मिले तपस्या सों सदा रारवै सोनर सूतु॥ ६॥ मंद धरा सुत चंद सुतगे समेत सिन होइ॥ होय तपस्वी मनुज सो कहत सुकवि सब कोइ॥ ७॥ सू·चं·मं·बृ॥ एक भौंन में होइ जो रवि गुरु मंगल चंद॥ सू·चं·मं·ग्र॥ नापस होइ मिले बहुरि रवि शशि नाम जु मंद॥ ८॥ सू चं·मं·ग्र॥ भूमि पुत्र शशि रवि ज रवि करैं एक गृह थान॥ तपसी होइ उदार मति जो नव गृह में भानु॥ ९॥ सू·बु·बृ·ग्र॥ रवि गुरु ग्रनि शशि पूत जो चारयो करैं मिलापु॥ निहि तपसी के दरग्रनैं हरैं ग्रौर को पापु॥ १०॥ मं·ग्र·चं·सू॥ भौम ग्रनी चर चंद्रमा जो सूरज इक धाम॥ तपी धुरं धर होइ

जातक चंद्रिका ६७



सो निहचैं जीतें काम ॥ १२॥ सू·मं·शु·रा·॥ रवि गुरु भूसुत दैत्य गुरु जोमि·लि करैं सनेह ॥ १३॥ मं·चं·बृ·शु·॥ कुज शशि गुरु शनि जो मिलैं जनम समै में शाद ॥ निहचें तपसी होद् सो सब तपसिन को शद् ॥ १४॥ मं·सू·बु·बृ·॥ कुज रवि सोमज देव गुरु मंद शुक्र बुध भानु ॥ सू·चं·मं·शु·॥ रवि शशि कुज सित जो मिलैं तापस योग वखानु ॥ १५॥ शु·मं·शु·बृ·सू·॥ सित कुज शनि गु·रु भास कर मिलैं पंच गृह शाद् ॥ होद् तपस्वी सो वसै गिरि कानन में जाद् ॥ १५ ॥ बृ·मं·चं·बु·शु·॥ देव पुरोहित कुज शशी बुध सूरज को नंद ॥ रवि बुध भूसुत भारगव मिले शनि जो चंद् ॥ १६॥ शु·बु·मं·सू·चं·॥ होद् तपस्वी ब्रह्म वित पूरन ज्ञान प्रकाश ॥ काम क्रोध मद सों रहित गिरि कानन में वाश ॥



जा·चं·

॥ १७॥ चं·बु·मं·बृ·सू·॥ चंद चंद सुत भूमि सुत सुर गुरु औ दिन राज॥ शशि सूरज बुध शुक्र कु-
ज ये मिलि करैं समाज॥ १८॥ सू·चं·मं·बु·शु·॥ जग में ऐसे योग में जनम लहे जो कोइ॥ मुनि सम
तापस जानिये व्रत धारी नर होइ॥ सू·चं·मं·बु·बृ·शु·॥ रवि शशि कुज बुध देव गुरु ये पाचों दूक गे-
ह॥ चं·मं·शु·बु·बृ·॥ शशि कुज शनि बुध देव गुरु ये मिलि करैं सनेह॥ २०॥ मं·चं·शु·सू·शु·॥

शु चं मं बु	चं बु मं बृ सू	सू चं मं बु शु
सू चं बु शु मं	मं चं शु सू बृ	शु चं बृ शु मं
शु सू·शु मं चं बृ	मं बृ·बु·मु शु सू	शु शु बु बृ मं

कुज शशि शनि रवि शुक्र जो विल में ये कै धाम॥ शिष्य
अनेकन सों सहित तपसी होइ ऋषि राम॥ २१॥ भृगु शशि
रवि गुरु शनि कुजो करैं एक गृह वास॥॥ सित रवि शशि
कुज शशि बुधौ येऊ एक अवास॥ २२॥ वली होंहि गृ-
ह जासु कै सि शुनामें तजि भोग॥ होइ तपस्वी दृढ व्र-
ती करै साठ अंग योग॥ २३॥ मं·बु·बृ·शु·शु·सू·॥ कुज
बुध गुरु सित मंद रवि इन को होइ मिलापु॥ सित शनि
गुरु बुध कुज वहुरि मिलै बृद्ध को बापु॥ २४॥ शु·शु·बृ
बु·मं·चं॥ जातक ऐसे योग में जनम लहे जो कोइ॥ नेम
धरम संपन्न सो जसी तपस्वी होइ॥ सू·चं·बृ·शु·॥ सूर
चंद्र वागीश शनि शनि सित रवि शशि चारि॥ रवि शशि

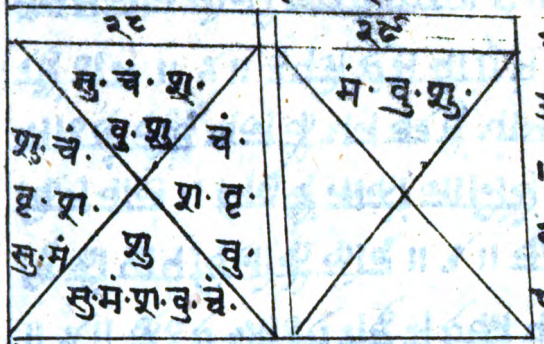
जातक चंद्रिका



गुरु बुध भानु बुध कुज गुरु मिलै पचारि ॥ २६ ॥ सू·चं·रा·बु·॥ होइ दृढ़ तपस्वी पुत्र सो ऐसे योग हि पाइ ॥ अन्न छोड़ि सानंद सो कंद मूल फल खाइ ॥ २७ ॥ मं·बु·शु·रा·॥ कुज बुध शनि गुरु जो कहूं रवि शशि गुरु बुध योग ॥ सू·चं·रा·बु·॥ वल्कल धारी होइ सो छोड़ि वसन सों भोग ॥ २८ ॥ सू·चं·मं·शु·॥ सूरज शशि कुज भानु सुत बुध गुरु पुनि कुज मंद ॥ होइ तपस्वी योगि यहि छत्री रहि तजि जग फंद ॥ २९ ॥ मं·सू·बु·रा·चं·॥ कुज रवि बुध गुरु सोम पुनि कुज रवि बुध सित मंद ॥ सू·चं·मं·शु·शु·॥ रवि शशि कुज शनि भार्गव मिलैं पंच सानंद ॥ ३० ॥ होइ जु ऐसे योग मैं सो व्रत धारी होइ ॥ जाय तपस्विन में गिनो कहत गनक सब कोइ ॥ ३१ ॥ शु·मं·शु·बु·सू·॥ शुक्र भौम शनि जीव रवि शनि बुध गुरु शशि भौम ॥ शु·कु·बु·चं·मं·॥ सित बुध शनि भूमि को नंद होइ सहित जो सोम ॥ ३२ ॥ शु·बु·शु·मं·॥ होइ तपस्वी पुत्र सो ऐसे योग हि पाइ ॥ रहै सदा गिरि बन्न में कहत गनक समुदाइ ॥ ३३ ॥ चं·बु·मं·बु·सू·॥ चंद चंद सुत भूमि सुत सुर नायक गुरु भानु ॥ चं·सू·बु·शु·॥ चंद्र भानु बुध शुक्र ए तीनों पांचों भौम बखान ॥ ३४ ॥ सू·चं·मं·शु·॥ जन्म लग्न में होइ जो एक ठौर ग्रह पांच ॥ मुनि समान सो दृढ़ व्रती होइ छोड़ि जग नाच ॥ ३५ ॥ सू·चं·मं·बु·बु·शु·॥ सूर चंद कुज जीव बुध सहित शुक्र सों होइ ॥ चं·मं·शु·बु·बु·सू·॥ शशि कुज शनि बुध जीव सों सूरज रहै समोहि ॥ ३६ ॥ अथ मं·सू·



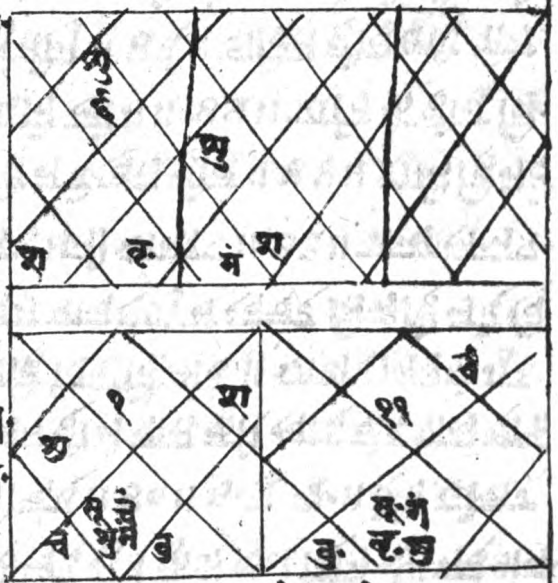
जा·चं ७१ चं·शु·बु·शु·॥ कुज रवि शशि शनि बुध सितौ दुन सौं होदू मिलापु॥ तपी होदू शिष्यन साहित करै योग तप जापु॥ ३७॥ भृ·चं·बृ·गु·सू·मं·॥ शुक्र दूदु गुरु मंद रवि धरनि तनै दूक ठादू॥ शु·सू·मं·शु·बु·चं·॥ सित रवि भूसुत मंद बुध चंदु मिले चित लादू॥ ३८॥ वली होदू उत पति समै वाला पन मैं योग॥ करै आठ अंगन सहित वरणत पंडित लोग॥ चं·शु·बृ·बु·॥ चंद मंद गुरु चंद सुत कुज बुध सित सौ मंद॥ मं·



बृ बृहस्पति भारगो सहित होदू जो चंद॥ ४०॥ मं·बु·शु॥ ऐसे खेचर जो परै जती होदू दूक आक॥ कानन ही मे वास करि खादू कंद फल साक॥ ४१॥ चंद जीव जो लगन में तिनहि विलोकै मंद॥ अथवा नवएं गुरु करै बहु तीरथ सानंद॥ ४२॥ नवम पाव शुभ खेचर तिनहि न देखै पाप॥ दीक्षित होदू मनुष्य सो राजस धनी अमाप॥ ४३॥ जन्म लग्न पति निकौं जु गृह देखत होदू न कोदू॥ जनम लगन पति जो कहू शनि हि न देखत होदू॥ ४४॥ शनि हि न देखै लगन पति उपजै ऐसो योग॥ तपी होदू दिक्षन सहित कहत सयाने लोग॥ ४५॥ शनि के होदू त्रि· भाग में जनम लगन पति जौनु॥ मंगल शनि के अंश में देखत होदू जु तौनु॥ ४६॥ जटिल होदू दूहि योग मे पाखंडी विन सीख॥ मुंडन मे तत पर सदा क्रोधी बहो बरबीख॥ ४७॥ चारि पांच षट् खेट के परै जतीज ग होदू॥ तिन मैं सूरज आदि दै फल भाषत बुध लोदू॥ ४८॥ वैशान सर्वि जो वली खपरै धारी चंद॥ होदू कपाली भौम तें हंडी बुद्ध अमंद॥ ४९॥ जती जीव भृगु चक्र धर लगन शनी चर होदू॥ कहत योग तं ७१

जा·चं·

जा·चं ७२ न्यास हैं याही विधि सब कोद्॥ ५०॥ इतिश्री महाराज कुमार श्रचल सिंहात्मजया त्रिपौंठ
श्रीभुनाथ विनिर्मितायां जातक चंद्रिकायां संन्यास योग नवमः प्रकाशः॥ ६॥ श्र
थारिष्ट योगाः॥ श्रठएं वृश्चिक मेषके परै बृहस्पति श्राद्॥ श्र
नि सूरज भू नंद नीता हि लखे चितु लाद्॥ १॥ शुक्र न देखै लगन
कों उपजै ऐसा योग॥ सो बालक जम लोक कों जाद् कहत कवि लोग
॥ २॥ छठए श्राठए गेद् में एकौ पाप जु होद्॥ शुभ न विलोकै ता·
हि कों पाप विलोकै कोद्॥ ३॥ कहत सयाने ज्योतिषी सुधा पियै
किन बाल॥ निहचैं ताकों जानियै प्रथम वर्ष में काल॥ ४॥ छठें
श्राठएं होद् बल कै धन बर हैं धाम॥ कै धन श्रठएं होद् कै शत्रु वा
रहैं ठाम॥ ५॥ उपजे ऐसे योग मे कहत सुबुद्धि प्रकास॥ जाय जा
तयम लोक सो छठै श्राठएं मास॥ ६॥ छठें श्राठएं खेट शुभ ताकों साधु
लखैन॥ वक्री होय कै पाप गृह ताहि लखै भरि नैन॥ ७॥ उपजै ऐसे योग में ताकों करौ न सोक॥ मास
भरे में जाद् गो सो बालक यम लोक॥ ८॥ छठें श्राठएं जो शशी मरै वर्ष में बाल॥ क्रूर विलोकै ताहि
जो होद् होत ही काल॥ ९॥ देखत होद् जु शुभ श्रशुभ चारि वर्ष में काल॥ सो पहुंचै जम लोक कों भा
षत गुनी रसाल॥ १०॥ तन तें गनिये शुक्र कों जौने घर में होद्॥ तितनी वरषन में मरै कहै सुकविस·



७२
जा·चं·

जा.चं ७३

व कोद्व ॥ लगन सातएं आठएं वरहें जो सित भानु ॥ सहित पाप शुभ खेटन हिं देद्व दृष्टि को दानु ॥ १२ ॥ कंटक बर्जित साधु गृह उपजै ऐसे योग ॥ सो बालक निहचैं मरै कहत सयाने लोग ॥ १३ ॥ वक्री शनि कुज भौन मैं रिपु आठएं सुख धाम ॥ वली भौम देखैं जु तिहि दूजी वर्ष विराम ॥ १४ ॥ सूरज शशि शनि सों सहित एक भौन में होद्व ॥ मरै जातनवएं वरष कहत सयाने लोद्व ॥ १५ ॥ भौम दिवाकर मंद जो आठएं छठैं आवास ॥ मास भरे में सो करै शमन पुरी में वास ॥ १६ ॥ केतु होद्व जानखत को तामैं उपजै बाल मास दूसरे जानियें निहचैं ताको काल ॥ १७ ॥ पाप गृह जो लगन पति होद्व पाप के भौन ॥ पाप विलोकै सहित जो मरै अंचभो कौन ॥ १८ ॥ शुक्र होद्व रवि शशि भवन व्यय मृति रिपु सुभखेट ॥ छठीं वरष निहचैं मरै यह है योग समेत ॥ १९ ॥ छठे आठएं करक को होद्व शशी को नंद ॥ नाश करै चौथी वरष लखत होद्व जो चंद ॥ २० ॥ शनि मंगल की राशि में दशा रजा के भानु ॥ पाप विलोकै ताहि नौ तूरन मीचु वखानु ॥ २१ ॥ लगनाधिप को लगन कों पाप विलोकत होद्व ॥ सहित होद्व पीडा करै कहत सयाने लोद्व ॥ २२ ॥ सिंही सुत सुख भौन में ताहि विलोकै पाप ॥ बोद सदंद सदं वरष जानि लेहु संताप ॥ २३ ॥ छठें आठएं सुभ खचर केंद्र त्रिकोणी पाप ॥ क्रूर विलोकैं आठदं वरष होद्व संताप ॥ २४ ॥ छीन चंद्रमा लगन में क्रूर विलोकैं आद्व ॥ सो बालक निहचै मरै अज वृष कर्क विहाद्व ॥ २५ ॥ होद्व आठएं लगन पति पाप विलोकै ताहि ॥ सो सुत चौथे मास में शमन सदन कों जाहि ॥ २६ ॥ लगन राशि पति बारहें छठैं आठएं गेह ॥ राशि भ्रमिनि बीते वरष बाल जाद्व यम गेह ॥ २७ ॥ रवि समेत जो राशि पति होद्व आठएं भौम ॥

८३

७३

जातक चंद्रका

न्यास हैं याही विधि सब कोद्द ॥ ५० ॥ इतिश्री महाराज कुमार श्रचल सिंहाज्ञया त्रिपाठि
श्रभुनाथ विनिर्मितायां जातक चंद्रिकायां संन्यास योग नवमः प्रकाशः ॥ ९ ॥ श्र
ष्टारिष्ट योगाः ॥ श्रठएं वृश्चिक मेषके परै बृहस्पति श्राद्द ॥ श्र
नि सूरज भू नंद नोता हि लखे चितु लाद्द ॥ १ ॥ शुक्र न देखे लगन
कों उपजे ऐसा योग ॥ सो बालक जम लोक कों जाद्द कहत कवि लोग
॥ २ ॥ छठए श्राठए गेद्द में एको पाप जु होद्द ॥ शुभ न विलोकै ता·
हि कों पाप विलोकै कोद्द ॥ ३ ॥ कहत सयाने ज्योतिषी सुधा पियै
किन बाल ॥ निहचैं ताकों जानियै प्रथम वर्ष में काल ॥ ४ ॥ छठें
श्राठएं होद्द बल कै धन वर हैं धाम ॥ कै धन श्रठएं होद्द कै शत्रु वा
रहैं ठाम ॥ ५ ॥ उपजे ऐसे योग मे कहत सु बुद्धि प्रकास ॥ जाय जा
तय मलोक सोछठै श्राठएं मास ॥ ६ ॥ छठें श्राठएं खेट शुभ ताकों साधु
लखैन ॥ वक्री होय कै पाप गृह ताहि लखैं भलैनैन ॥ ७ ॥ उपजै ऐसे योग मे ताकों करौ न सोक ॥ मास
भरे में जाद्द गो सो बालक यम लोक ॥ ८ ॥ छठें श्राठएं जो शशी मरै वर्ष में बाल ॥ क्रूर विलोकै ताहि
जो होद्द होत ही काल ॥ ९ ॥ देखत होद्द जु शुभ श्रशुभ चारि वर्ष में काल ॥ सो पहुंचै जम लोक कों भा
षत गुनी रसाल ॥ १० ॥ तन तें गनिये शुक्र कों जोने घर में होद्द ॥ तितनी वरषन में मरै कहै सुकवि स·

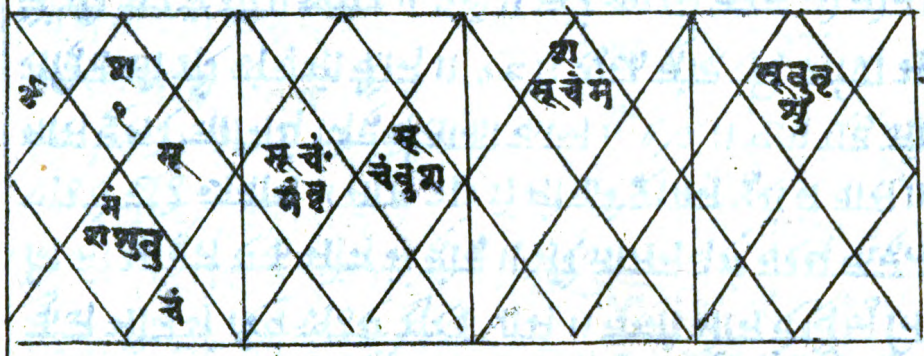
जा.चं ७२

व कोद्द ॥ लगन सातएं आठएं वरहें जो सित भानु ॥ सहित पाप शुभ खेटन हिं देद्द दृष्टि को दानु ॥ १२ ॥ कंटक बर्जित साधु गृद्द उपजै ऐसे योग ॥ सो बालक निहचें मरै कहत सयाने लोग ॥ १३ ॥ वक्री शनि कुज भौन में रिपु आठएं सुख धाम ॥ वली भौम देखें जु तिहि दूजी वर्ष विराम ॥ १४ ॥ सूरज शशि शनि सों सहित एक भौन में होद्द ॥ मरै जातनवएं वरष कहत सयाने लोद्द ॥ १५ ॥ भौम दिवा कर मंद जो आठएं छठें आवास ॥ मास भरे में सो करै शमन पुरी में वास ॥ १६ ॥ केतु होद्द जानखत को तामें उपजै बाल मास दूसरे जानियें निहचें ताको काल ॥ १७ ॥ पाप गृद्द जो लगन पति होद्द पाप के भौन ॥ पाप विलोकै सहित जो मरै अंचभो कौन ॥ १८ ॥ शुक्र होद्द रवि शशि भवन व्यय मृति रिपु सुभखेट ॥ छठीं वरष निहचैं मरै यह है योग अमेट ॥ १९ ॥ छठें आठएं करक को होद्द शशी को नंद ॥ नाश करै चौथी वरष लखत होद्द जो चंद ॥ २० ॥ शनि मंगल की राशि में दशा रजा के भानु ॥ पाप विलोकै ताहि तौ तूरन मीचु वखानु ॥ २१ ॥ लगनाधिप को लगन कों पाप विलोकत होद्द ॥ सहित होद्द पीडा करै कहत सयाने लोद्द ॥ २२ ॥ सिंही सुत सुख भौन में ताहि विलोकै पाप ॥ बोद सदंद सदं वरष जानि लेहु संताप ॥ २३ ॥ छठें आठएं सुभ खचर केंद्र त्रिकोणी पाप ॥ क्रूर विलोकैं आठदं वरष होद्द संताप ॥ २४ ॥ छीन चंद्रमा लगन में क्रूर विलोकैं आद्द ॥ सो बालक निहचै मरै अज वृष कर्क विहाद्द ॥ २५ ॥ होद्द आठएं लगन पति पाप विलोकै ताहि ॥ सो सुत चौथे मास में शमन सदन कों जाहि ॥ २६ ॥ लगन राशि पति बारहें छठें आठएं गेह ॥ राशि भ्रमिति बीते वरष बाल जाद्द यम गेह ॥ २७ ॥ रवि समेत जो राशि पति होद्द आठएं भौम ॥

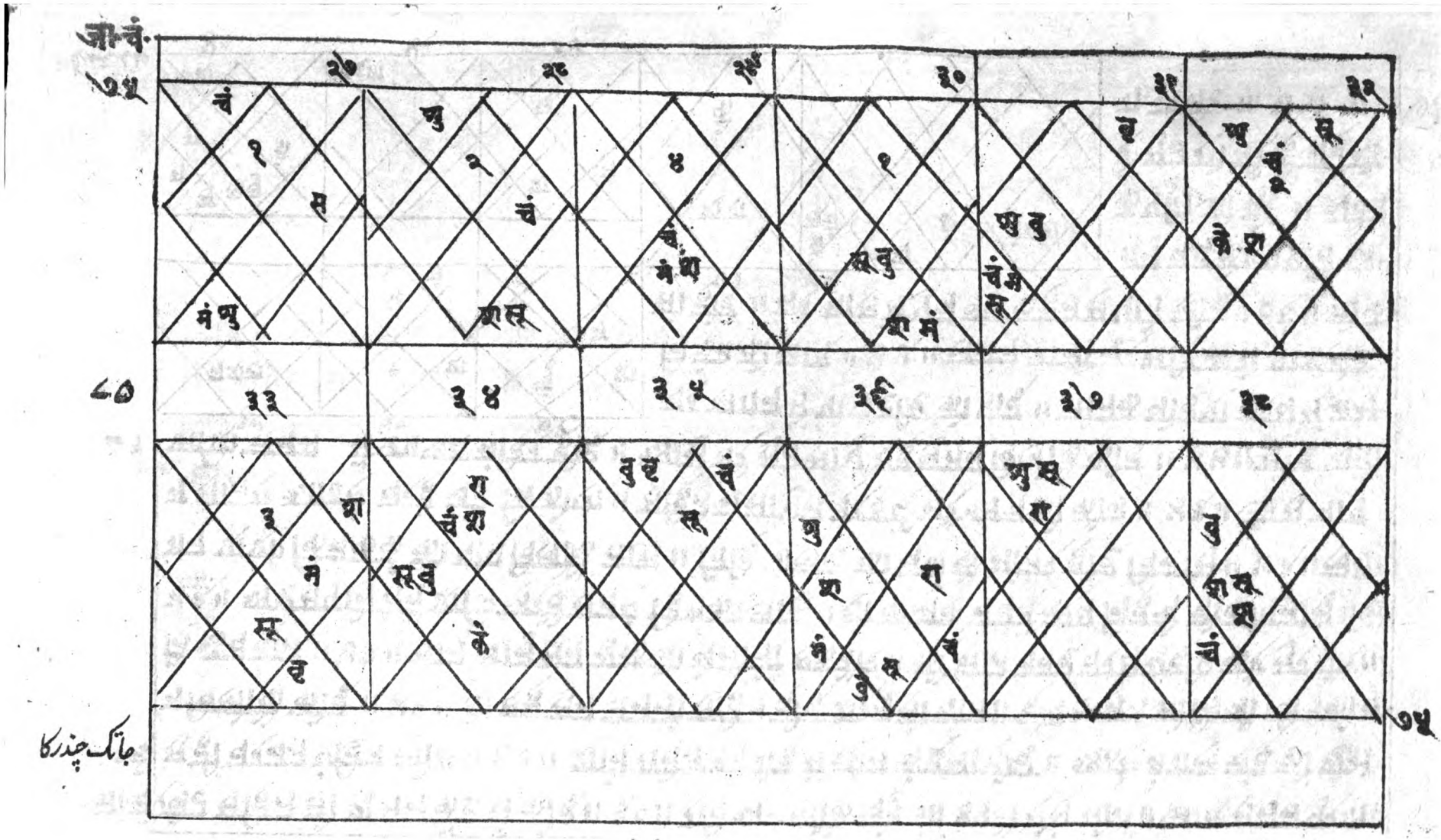
८३

जातक चंद्रका ७३

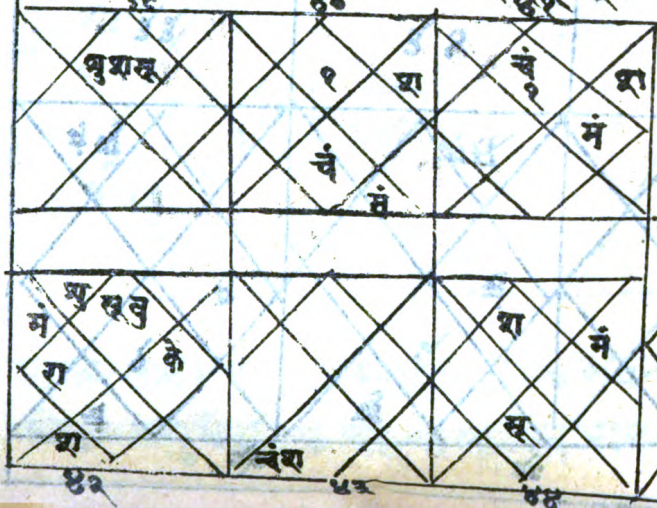
शुक्र विलोकैं ताहि कों मरै अचं भव कौन ॥ २६ ॥ होइ लगन पति सातएं जाके पाप समेत ॥ एक मा-
सभें जाइ गेा सो जम राज निकेत ॥ २७ ॥ पाप सहित जोएपि पति होइ आठए ठाम ॥ निहचै एके मासमें सो
जैहै यम धाम ॥ २८ ॥ रवि एपि मंगल पांच एंसु भन विलोकै कोइ ॥ सो बालक नव ईवरष यम पुरवा-
सी होइ ॥ २९ ॥ चौथे आठए बारहें करै जु पाप विलासु ॥ छीन चंद जो लगन में मरै सु अर्भक आसु ॥ ३०
॥ आठएं गुरु शनि भौन में पाप लखै तनु भाव ॥ मरै ग्यारहीं वरष कहि यामें नहीं उपाव ॥ ३१ ॥ पाप सहि-
त एपि लगन में आठएं मंगल जासु ॥ जनम ग्रहन दिन जानि सो बालक होइ विनासु ॥ ३२ ॥ लगन
आठएं पाप जो छीन चंद व्यय भावं ॥ कंटक साधुन ताहि कों आसु हनै जम राव ॥ ३३ ॥ जन्म होइ अलि



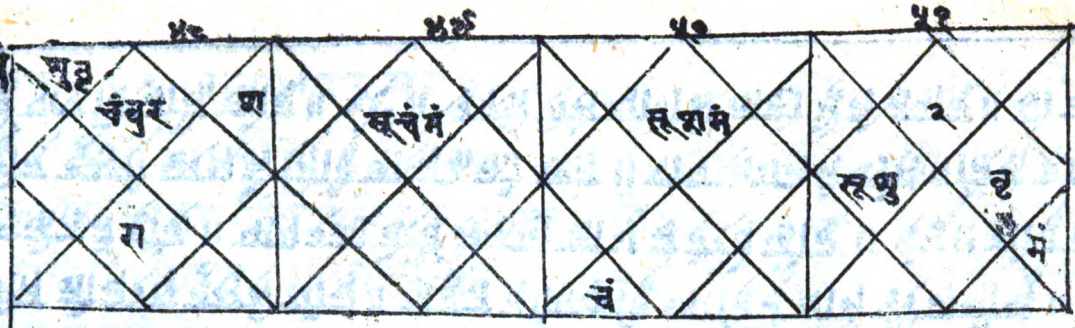
कर्क में पूर्व भाग खल खेटा साधु होइ पर भाग
में यह है योग अमेट ॥ ॥ ॥ वज्र मुष्टि जाकों
कहैं जे पंडित सरदार ॥ निहचै थोरे दिनन में ज
म पुर जाइ कुमार ॥ ३४ ॥ लगन सातएं चंद्रमा
शुभन विलोकै कोइ ॥ पाप खेट सों सहित जो
मीच आसु ही होइ ॥ ३५ ॥ छीन चंदु जो बारहें
लगन आठए पाप ॥ सुभन होहि कंटक भवन लहै मीचु की साप ॥ ३६ ॥ पाप त्रिकोणी केंद्र में साधुन देखै
कोइ ॥ तनु में रवि कै चंद्रमा सो विन प्रानन्हि होइ ॥ ३७ ॥ लगन बारहें सातयें आठएं जो शशि होइ ॥ पाप


जा.चं.
७५
२७
२८
२९
३०
३१
३२
चं
१
स
मं पु
पु
२
चं
श सू
४
चं
मं श
१
सू बु
श मं
बु
पु बु
चं मं
सू
पु
सू
चं
के श
८०
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३
श
मं
सू
ह
रा
चं श
सू बु
के
बु ह
चं
सू
शु
श
रा
मं
चं
शु स
रा
बु
श सू
पु
चं
७५
जातक चंद्रका

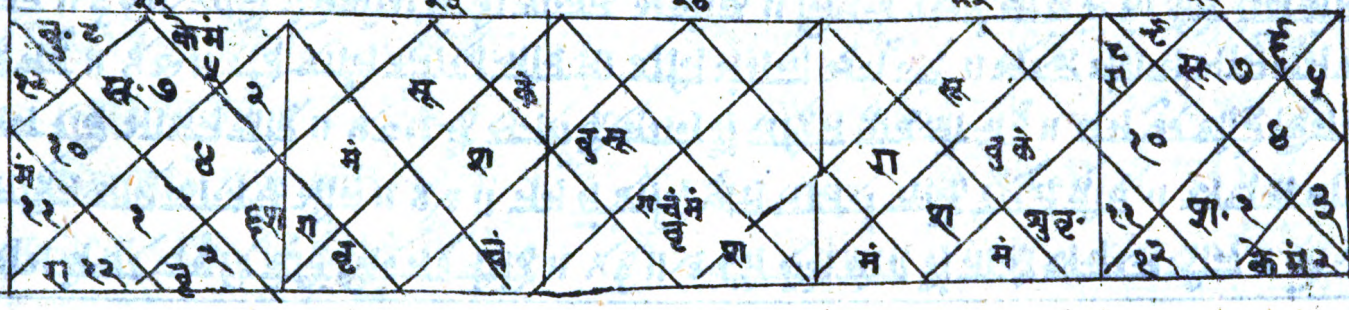
खेट सहित जो शुभन केंद्र में कोद्रु ॥ ३८ ॥ रवि शब लोकै चंद्रु जो उपजै ऐसे योग ॥ जाद्रु समन पुरुषा-
सु हीं वरनत पंडित लोग ॥ ४० ॥ शनि समेत तनु गेह में छीन चंद्रमा होद्रु ॥ शठएं मंगल चंद्र को शुभ
न विलोकै कोद्रु ॥ ४१ ॥ तौ वह सुत जननी सहित होद्रु शस्त्र सो घात ॥ हौंय वरत जो तिथी जिनकी म-
ति शव दात ॥ ४२ ॥ भानु भानु सुत शुक्र जो ये तीनों एकठौर ॥ मरै जात नवर्द्रु वरष यदपि करै सुर गौर ॥
४३ ॥ शष्टमपनि तन शनि लरवै सतएं हिमकर जासु ॥ सो बालक नवर्द्रु बरष निहचै होद्रु विनासु ॥ ल-
गन शशी किन कर्क को पाप विलोकै तासु ॥ तिहि बालक को बर्ष के भीतर होद्रु विनासु ॥ ४३ ॥ लग-
न सातएं शाठएं बरहें चंद्र त्रिकोण ॥ सहित न साधुन देखवर्द्रु मरै पंचभो कौन ॥ ४३ ॥ जोस पाप
शशि लगनम में उपचय मंदिर होद्रु ॥ शासु मरै सुत साधु गह युतन विलोकै कोद्रु ॥ ४४ ॥ होद्रु शनी



चर लगन में पाप दृष्टि को पाद्रु ॥ जातक षोडश बरष में बभ-
नि केत को जाद्रु ॥ ४५ ॥ लगन शनी चर सहित जो पापखेट
सो होद्रु ॥ मरै मास मैं पुत्र वह कहत सयाने लोद्रु ॥ ४६ ॥ जो के
तनु यद कोण पति को-
क पति जो खेट ॥ छठै ॥
रै सुत सो मरै है महयो-
ग समेट ॥ ४७ ॥



संख्या राशि प्रमाणतें जानितिहूं कौं लेहु ॥ लग्न महीना वासरो क महींतैं कहि देहु ॥ ४८ ॥ चंद्र चंद्र सुत सौं सहित होइ कमलिनी कंत ॥ पाप लग्नतें तो ग्यारहीं होइ धर्ममें अंत ॥ ४९ ॥ छीन चंद्र कुज मंद रवि करै लगन मैं वासु ॥ कै छठई सतई बरष निहचै होइ विनासु ॥ रवि शनि मंगल लग्न मैं छठें सातएं चंदु ॥ लग्नेश नगर निहचै मरै बरष आठई नंदु ॥ ५० ॥ लग्नलग्न पति को कहूं लग्नेश मृत्यु पति देह ॥ संवत राशि प्रमानतें जाइ जात जम गेह ॥ ५१ ॥ छठें आठएं बारहें पापु लग्नन को वास ॥ पाप केंद्र नव पांचये सिगरे करैं विलास ॥ ५२ ॥ भानु होइ तनु भावमें उपजे ऐसो योग ॥ जम पुर गामी होइ सो कहत सबाने लोग ॥ ५३ ॥ चौथे आठएं सातएं छेठ परै जो आइ ॥ चंद्र होइ दूजे पाप के बीच कहत कवि राइ ॥ ५४ ॥ उपजे ऐसे योग मैं रोग किम कै तिहि कौंन ॥ थोरे दिन के बीच में सो देखे जम भौंन ॥ ५५ ॥ पाप सात ऐं आठएं लेहि पाप की डीठि ॥ तिन को



जो चं ७८ सभ वेचर बहुरि देहिं निरंतर पीठि ॥ ५६॥ उपजै ऐसे योग में ताको अचरज कौन ॥ सो बा लक जननी सहित जाइ काल के भौन ॥ ५७॥ नन में शनि कुज सातएं जाके सूरज होइ ॥ अथवा शनि कुज सातएं नन रवि भाषत कोइ ॥ ५८॥ के सतएं के लगन में सहित होइ जो चंद ॥ यम पुर थोडे दिननमें जाइ बसैव हू नंद ॥ ५९॥ रवि शनि मंगल जीव जो शनि मंगल भृगु नंद ॥ सूरज मंगल भानु मुन सहित होइ जो चंद ॥ ६०॥ उपजै ऐसे योग में जो बालक भूलोक ॥ निहचै पचई बरष में सो जैहै यम लोक ॥ ६१॥ लो पित सूरज किरन सों छंद्र भौन वृष चंद ॥ ताको पूरन दीठि सों देखै मंगल मंद ॥ ६ ॥ अथवा होइ स-



मेत जो बरष दूसरी मीचु ॥ कहत वशिष्ठहि शादि दै यामें फेरै न बीचु ॥ ६३॥ जो अठएं कुज चंद्रमा लग न केत तें होइ ॥ पाप खेट देखैं सकल साधु न देखै कोइ ॥ ६४॥ सोइ दीसवां चे कहत परम सयाने संत होइ दूसरी बरष में निहि बालक को अंत ॥ पाप लगन में असत पति के याही संसा होइ ॥ कैहिम करत बार ७८ हैं पाप विलोकै कोइ ॥ ६५॥ उपजै ऐसे योग में ताको दैने उपाइ ॥ सो बालक नवईं बरष निहचै यम पुर

जीतेन्द्र का

जा-चं
७४ जादू ॥ ६७ ॥ सतएं सिंही सूनु को देखैं सूरज नंद ॥ साधुन देखैं बारहीं वरष परै जमफंद ॥ ६८ ॥ राहु
सिंह आलि कुंभ को ताहि विलोकै पाप ॥ सो बालक सतहैं वरष सहै समन की ताप ॥ ६९ ॥ केतु उदय उ-
ल का पतन अस निवात निर्घात ॥ शिव श्लेषा जनम सो नहि जीवै सो जात ॥ ७० ॥ छीन चंद्रमा पाप यु-
त नाहि विलोकै राहु ॥ स्वल्प दिननमें सुत करै यम पुर को अवगाहु ॥ ७१ ॥ अस्त खगन पति को कहूं ल
खै स्वल्प पति देह ॥ संवत राशि प्रमाण तें जादू जात यम गेह ॥ ७२ ॥ नागानंद ६ नेदस १३ बहुरि वा-
दस २२ इंद्री ५ एक १ धृति १८ वारिधि ४ नेदस १३ बहुरि बीस २० कहै सविवेक ॥ ७३ ॥ एकविंस दस
अंश लौं मेषादिक राशि होइ ॥ निहचै तीनी वरष में नाश कहै कवि कोइ ॥ ७४ ॥ इति श्रीमहाराज
८१ कुमार अचलसिंह हूया त्रिपाठि शंभुनाथ विनिर्मितायां जातक चंद्रिकायां अरिष्ट वि-
चारो नाम प्रकाशः ॥ ९ ॥ अथ चंद्रारिष्ट भंगः ॥ जिन देव इन एक हूंगनि अरिष्ट के योग ॥
अब अरिष्ट नाशक कहैंतेई पंडित लोग ॥ १ ॥ पूरन चंद हिजो लखै सबै साधु सा नंद ॥ अथवा शशिनि
ज मित्र गृह निरखै साधु अमंद ॥ २ ॥ छीन होइ जो आपने उच्च भौन में होइ ॥ शुभ डीठि सों साधु गृह
नी निलखै को होइ ॥ ३ ॥ परै योग ऐसो कहूं करै अरिष्टहि भंग ॥ जैसे पाप कलाप कों नाशै गंग तरंग
॥ ४ ॥ छठै सातएं आठएं होइ चंद नें साधु ॥ पाप विना सज्जन कहत मिटै अरिष्ट अगाधु ॥ ५ ॥ होइ जु-
साधु त्रिभाग में सुभ खेचर जुत चंद ॥ मिटै अरिष्ट ज्यों हरि भजन मिटै पाप को फंद ॥ ६ ॥ शुभ के द्वादश
भाग में पूरन हिम कर होइ ॥ तौ अरिष्ट को योग यह छिन में जात विछोइ ॥ ७ ॥ निशा जन्म सित पक्ष में

जानकी चंद्रका

जो चं
८०
चंद्रहि देखे साधु ॥ कहत सयाने चंद्र कृत मिटै अरिष्ट अगाधु ॥ ८ ॥ जनम अंधेरे पाखदिन चंद्रहि देखै पाप ॥
लेत बचाइ अरिष्टतें ज्यों बालक को बाप ॥ ९ ॥ चंद्र क्रूर की राशिमें लखै ताहि दशीस ॥ अथवा तासों स-
हित शशि करै अरिष्ट हि बीस ॥ १० ॥ वली लगन पति होइ जो लखैं साधु औ मित्र ॥ सब अरिष्ट मिट जात
है पंडित कहत विचित्र ॥ ११ ॥ तनु मंदिर में लगन पति सबै विलोकै ताहि ॥ मिटै अरिष्ट समूह सब पंडित
कहत सराहि ॥ १२ ॥ पूरन शशि वृष कर्क को वर्ग आपने होइ ॥ मित्र भौन में साधु गृह ताहि विलोकै कोइ ॥ १३ ॥ पाप साधु जुत होइ नहिं मिटै अरिष्ट समाज ॥ ज्यों उन मत गजराज कों दलै दपटि मृगराज ॥
१४ ॥ शशि ने दशएं जीव जो वृष भृगु वरहैं गेह ॥ चौथे व्यय दश ग्यार हैं लगन प होइ सनेह ॥ १५ ॥
पाप ग्यारहें होइ जो चंद्रहि देखै साधु ॥ कहत सयाने ज्योतिषी मिटै अरिष्ट अगाधु ॥ १६ ॥ वली लगन
पति कों सबै शुभ अवलोकै आइ ॥ कहत सयाने ज्योतिषी तब अरिष्ट मिटि जाइ ॥ १७ ॥ सप्त मेंशपरमो
च्चमैं कै निज घर में होइ ॥ कै दिनेश के अंश में हिम कर रहै समोइ ॥ १८ ॥ शुभ देखै निशिको जनम मि-
टै अरिष्ट अपार ॥ जरत नवासे ज्यों परत न बजल धर की धार ॥ १९ ॥ अग्नि अश्विनी पुष्य को वर्ग उन-
मीचंद ॥ वली त्रिपुष्कर जो गजन करै अरिष्ट हि मंद ॥ २० ॥ जो शशि मेष कुलीर के केंद्र भौन में होइ
शुभ अवलोकै ताहि औ देत अरिष्ट हि खोइ ॥ २१ ॥ दूजें तीजें पुष्य के चरन चंद्रमा जासु ॥ कै रोहिनि
के दूसरें करै अरिष्ट विनासु ॥ २२ ॥ इति श्री महाराज कुमार अवधसिंह कृपया त्रिपाठि श्री-
भुनाथ विनिर्मितायां जातक चंद्रिकायां चंद्र कृत अरिष्ट भंग प्रकाशः ॥ १२ ॥ अवल ८०

जातक चंद्रिका

जा-चं ८१ पाप वल साधु जो जम्म होइ शुभ राशि ॥ ताहि विलोकै सुभ खचर सबै अरिष्टहि नाशि ॥ १ ॥ हो-
इ सबै शुभ वर्ग में खेचर साध असाधु ॥ कहत सयाने ज्योतिवी मिटै अरिष्ट अगाधु ॥ २ ॥ तनु ती-
जैं षट ग्यारहें शुभ अव लोकित राहु ॥ अथवा मस्तक उदय सब मिटै अरिष्ट उमाहु ॥ ३ ॥ नी-
ल जल दरश रहित रवि वहै सुमंद वयारि ॥ होइ मुहूरत विमल जो सकै अरिष्टहि टारि ॥ ४ ॥ सा-
तौं रिखि शोकल सभव आठो उदय जो होइ ॥ जैसे वादव तूल को देइ अरिष्टहि खोइ ॥ ५ ॥ अज
वृष कर्कट राशि को होइ लगन में राहु ॥ तौ अरिष्ट उर श्वासुहीं उप जो दीरघ दाहु ॥ ६ ॥ रिपु तीजे
औ ग्यारहें केतु करै जो थान ॥ तौ अरिष्ट को दल मलन होइ कहै सब जान ॥ ७ ॥ भृगु सुत जीव
८१ ससांक सुत जो त्रिकोन के भौंन ॥ कहत जात जे ज्योतिवी तौ अरिष्ट भय कौंन ॥ ८ ॥ छठें तीसरें ग्या-
रहें जाके तुंग पतंग ॥ कहत ज्योतिवी होत है तव अरिष्ट को भंग ॥ ९ ॥ त्रि ३ षट ६ आय ११ द-
श १० होइ जो एक राशि के सर्व ॥ याहू में मिटि जात है योग अरिष्ट अखर्व ॥ १० ॥ जाकें उत पति
के समें जो अनेक सुभ योग ॥ तौ अरिष्ट को डरु नहीं कहत सयाने लोग ॥ ११ ॥ जो वुध तें होती
त्रि यह एकांतर गत होइ ॥ के अनेक ग्रह कहत हैं देत अरिष्टहि खोइ ॥ १२ ॥ स्वगृही चौथे जो
व को देखे पूरन चंद ॥ तौ अरिष्ट को होय यह होत छिन कमें मंद ॥ १३ ॥ सवैखेट शुभ अंस में
कोन्यों घर मैं वास ॥ तव अरिष्ट को दोय यह निहचै होत विनास ॥ १४ ॥ के चौथे के दूसरे एक एक
जा-चं चंद्रका तें होइ ॥ सहित होइ खर भानु सो देत अरिष्टहि खोइ ॥ १५ ॥ चौथे साधु वली खचर अठए ८१

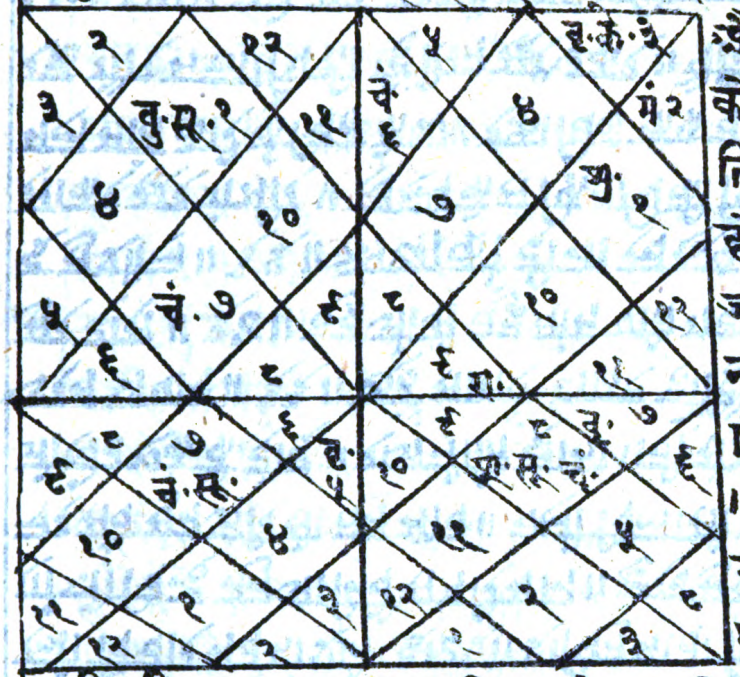
जा.चं ४२ स्वचरन कोदू ॥ ताको जीवन जगत में तीस वरष लों होदू ॥ २६ ॥ जो गुरु अपने गेह में कै त्रि
भाग निज नाह ॥ भावत सत्रादूस वरष आपुक विन के नाह ॥ २७ ॥ उच्च बृहस्पति लगन में दृ

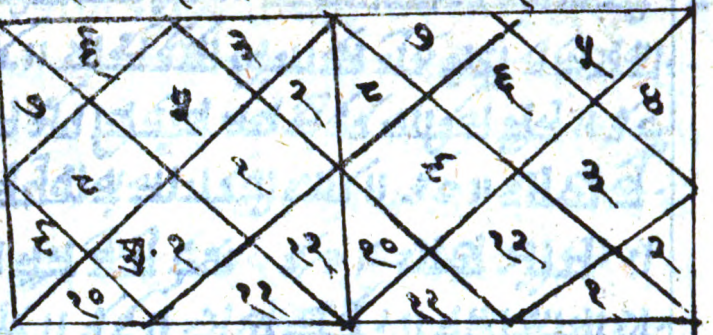


गु सुन कंटक भौन ॥ सौ जीवे सत वर्ष लों या में अचिरज
कौन ॥ २८ ॥ वली उच्च अग्नि लगन में सुभ खेचर निज गे
हू ॥ साठि वरष लों तासु की रहें निरंतर देहू ॥ २९ ॥ मूल
त्रिकोणी साधु गृह लगन उच्च गुरु जासु ॥ निहचैं आय
बयानिये अस्सी वर्ष लों तासु ॥ ३० ॥ लगन आठवों अग्नि
८४ रहित स्वगृही खल खग होदू ॥ वली और गृह होदू तो आयु वर्ष सत होदू ॥ ३१ ॥ कंटक नवग
साधु गृह जो सरीर के भौंन ॥ लगन आठएं चंदु जो लखै न पापी जौन ॥ ३२ ॥ तब जीवै सत्तरि
दरष जो उपजै दूह योग ॥ जातक ग्रंथ विचारि कै कहत सयाने लोग ॥ ३३ ॥ उच्च त्रिकोणी
तिज रहां जो चौथे शुभखेट ॥ अस्त रहित वर गोतमी यह नृपयोग अमेट ॥ ३४ ॥ इति श्रीम
हा राज कुमार अचल सिंह कृत्या त्रिपाठि शंभु नाथ विनिर्मितायां जातक चंद्रिकायां
सर्व ग्रहारिष्ट भंग प्रकाशः ॥ १३ ॥ राज योग गृह भाव को जो अरिष्ट फल आदू ॥ देत शु-
भा शुभ आपनी खेट दशा कौं पादू ॥ १ ॥ उच्च त्रिकोणी दत्यत्र योज्यम् ॥ जब दूत की आवे
दशा तब ही ये फल देत ॥ कहत विमल दैवज्ञ सब जे हैं बुद्धि निकेत ॥ २ ॥ लाभ तीसरें रिपुभव- ८७

जालंधर का

जा·चं·मय देह ॥ २८ ॥ सिंह राशिमें जनम जो शुक्र विलोकित होइ ॥ सहित सोक संताप सो कहैं आंधरो को-
इ ॥ २९ ॥ जो सूरज को राशि लखै राशि हि शशी को नंद ॥ सो
बहु जीवी ज्योतिवी होइ कहित धनवंद ॥ ३० ॥ चंदहि





औजनि लगन
कों लखैं बालप-
नि जौन ॥ योग
होइ जो जनि समै कहिये जारज तौन ॥ ३१ ॥ चंद सहित
जो भानु कों डीठि देहि नहिं जीव ॥ बहू जारज कहत हैं जि-
नकी बुद्धि अतीव ॥ ३२ ॥ सूर सोम इक भौनमें मिलें पाप
तिहि कोइ ॥ जीवन देखे कहत कवि सोऊ जारज होइ ॥ ३३
॥ भानु चतुष्पद राशि के बली हितनु के ओर ॥ जमलयो-
ग याकों कहैं सुकविनके सिरमोर ॥ ३४ ॥ मेष मकर को प्र-
थम दल वृष म सिंह औ चाप ॥ इन्हैं चतुष्पद कहत हैं जि-
नकी बुद्धि अमाप ॥ ३५ ॥ द्विपद कन्यका मिथन तुल कोद सलिल्थिक कर्क कुंभ मीन मृग उदक दलज-
ल चर कहत मतर्क ॥ ३६ ॥ इति अर्द्धाध्यायः चतुर्दश प्रकाशः ॥ १४ ॥ अथ तन्वादिद्वादश

दोहा नवासा स्वामी के पास मासा स्थिर नहीं ॥ दोहा सुन तीनों दोहू ॥ ५५ ॥

कवि सिरदार ॥

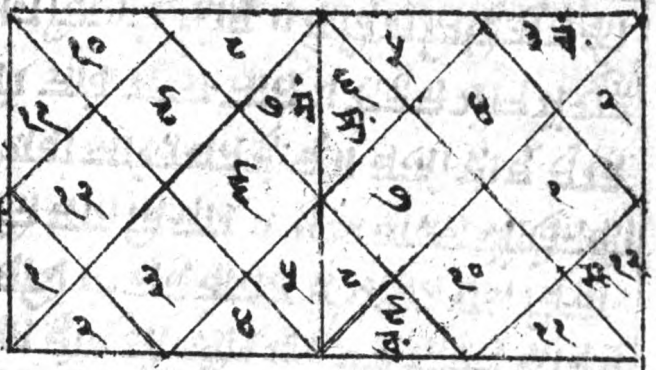
॥ ६६ ॥ छठे वली बुध भौम जो परै लगन में आनि ॥ जाहिर तस्कर होइ सो सब औगुन की खानि ॥ ६७ ॥ कुंभ मीन धन मिथुन में करैं पाप गृह वास ॥ तिहि बालक को वज्र सों निहचै होइ विनास ॥ ६८ ॥ मृत्यु भौनमें शुभ खचर होइ कै देखै आइ ॥ होइ सुमति तीरथ करै कहत सुकवि समुदाइ ॥ ६९ ॥ जाकै होइ त्रिभागमें चंद सून तनु भाव ॥ जनम होइ किनि भूप घर होइ नीच को राव ॥ ७० ॥ जो रवि तें शनि दूसरें दशमें हिमकर जासु ॥ सतमें भूसुत होइ तौ छीन करे वर नासु ॥ ७१ ॥ चंद मध्य देपा पके अर्क सूनु तिय गेह ॥ विकल सदा ताकी रहै कास स्वास सों देह ॥ ७२ ॥ शशी सूरके अंस में सूर शशी के अंस ॥ अथवा एक हि ठौर में लक्ष्मी करै विध्वंस ॥ ७३ ॥ धनि धन रिपु कुज आठएं रवि बर हैं शशि वासु ॥ वली होइ तौ वात तें ताकों होइ विनासु ॥ ७४ ॥ होइ सोम सुतकर्क को मकर राशि को मंद ॥ सोजातक चोरी करै देइ दंड को छंद ॥ ७५ ॥ पंचम तीजे ग्यारहें पापन देखे संत ॥ अवनवि नासै सातएं गेह विनासै दंत ॥ ७६ ॥ शुक्र भौम धन बारहें परै विनासै कान ॥ दृग दोषी हिमकर करै भाषत बडे सयान ॥ ७७ ॥ द्यूतितन भाव विचा रः ॥ अथ धन भाव विचारः ॥ स्वर्गादिक धावें सकल संग्रह कोस अपार ॥ क्रय विक्रय धन भावतें पंडित करत विचार ॥ ७८ ॥ भानु भानुसु त भूमि सुत सहित होइ धन गेह ॥ अथवा देखैं धन



जा-चं ६२



जननि नाश होत ही होइ ॥ ३ ॥ पाप खेट व्यय लगन में होइ सातएं गेह ॥ साधु खेट जो दूसरें करैं कुटुंबय खेह ॥ ४ ॥ ग्रंथ सुत भाव विचार: ॥ विद्या मंत्र विनीतता गर्भ स्थिति सुत नीति ॥ एसि गये सुतभावतें कहत सुकवि करि प्रीति ॥ ५ ॥ जा के पंचम भाव को सहित विलोकैं साधु ॥ होत योग संतान को पंडित कहत अगाधु ॥ ६ ॥ निज स्वामी सों सहित जो अथवा लरिवयत भाव ॥ होत लाभ संतान को कहत महा कवि राव ॥ ७ ॥ पाप खेट पंचम भवन सहित विलोकत होइ ॥ तब न लोभ संतान को कहत सयाने कोइ ॥ ८ ॥ राशि भृगु बुध मंगल करैं दुस्व भाव में थान ॥ कहिए थोडी वैस में तब ताके संतान ॥ ९ ॥ एतीनों जो कहूं धनुय राशि के होइ ॥ आदि अंत हूं में नहीं कहत सयाने कोइ ॥ १० ॥ जैं देखैं सुत भाव को अचर डीठि पसारि ॥ ते उपजैं सुत कन्यका पंडित कहत विचारि ॥ ११ ॥ लगन जौन सुत भाव में ते संख्या संतान ॥ जातक ग्रंथ विचारि कै भाषत पंडित जान ॥ १२ ॥ होइ आपनी राशि में उच्च मित्र के गेह ॥ तौ कुल नायक होइ सुत नहिं यामें संदेह ॥ १३ ॥ अस्तनी चरि सु गेह में होइ



९२

बालचन्द्रका

जा-चे ६३ वहुरि वलहीन ॥ कहत सुक विनिज बुद्धि सौं उपजै जातक दीन ॥ १४ ॥ लगन कुंडली मेंरविचर ग्रंसा होइ दूसमान ॥ कहत सुकवि जिय जानियै तव दूने संतान ॥ १५ ॥ नारी ग्रह सौं कंन्यका पुरुष षेट सो पूतु ॥ तेई कहत विचारि कै जिन कै जोतिष कूतु ॥ १६ ॥ एक पूतु रविदेत है मंगल तीनि विचारि ॥ देत वृहस्पति पांच हैं कहत सुकवि निरधारि ॥ १७ ॥ है कंन्या ग्रासि चारि वुध षट सित सोरी सात ॥ कोउ पंडित कहत हैं जिन की मनि ग्रव दात ॥ १८ ॥ जाकें पंचम भौन मे रवल खेचर की राशि ॥ सहित होइ खल खेट जो वरवैं डीढ्रि काशि ॥ १९ ॥ देखैं ताहि न साधु ग्रह जाकें ऐसो योग ॥ होत विना संतान सो कहत सयाने लोग ॥ २० ॥ इस सैं राशि भृगु सातएं चौथे खेचर पाप ॥ लहै न सो संतान कों कीहे जतन समाप ॥ २१ ॥ शुक्र इंदु के वर्ग सों सहित होइ सुत गेह ॥ ताकों भृगु ग्रो चंद्रमा निरखत होइ सनेह ॥ २२ ॥





सुता होइ सम वर्ग तें विधन वर्ग तें पूतु ॥ जातक मत ग्रव लोकि कै कहत सुकवि करि कूतु ॥ २३ ॥ जो रवि ग्रहीं शनि पाचएं ताहि विलोकै चंद्र ॥ योग होइ जाके सुयह तव कहिएं रस नंद ॥ २४ ॥ जनम समैं जो पुरुष कै याही विधि बुध होइ ॥ तीनि पुत्र ताकें कहत परम सयाने लोइ ॥ २५ ॥ भानु सूनु के वर्ग में जो उपजा सुत गेह ॥ रजनी नायक शनि पुनि तासों मिलै सनेह ॥ २६ ॥ लखै भानु सुत योग में उतपति जाकी होइ ॥ ताके उपराजै ननुज विना विवाहे जोइ ॥ २७ ॥ शनि को गन सुत भाव में बुध भौं लखि पत होइ ॥ सूरज भूसुत ताहि को देखत होइ न कोइ ॥ २८ ॥ उपजै ऐसे योग में लहै क्षेत्रभ ६३

सुतनाशहोय

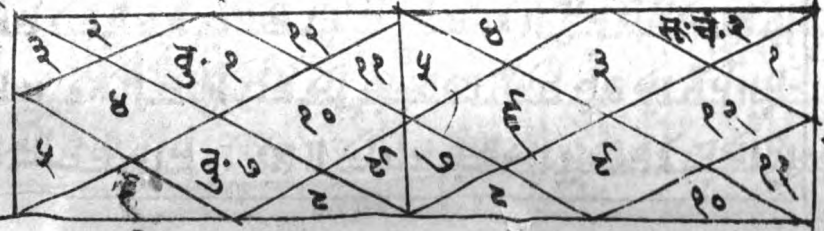


जा चं ६४

वपूत ॥ बुध को गन ग्यानि जो लखे सऊ कहत करि कूत ॥ २९ ॥ नव अंशग सुत भवन में जेते पाप समेत लखत होंदू जै गर्भ तें प्रगट पतन करिदेत ॥ ३० ॥ भूनंदन सुत भौंन में भृगु सुत जीव लखैन ॥ तौ सुत जेते कपजै जाहिं समन के ऐन ॥ ३१ ॥ रवि दूषन हरि वंस तें तम को कं न्यारान ॥ गो कपिला नें केत को मिटै दोष कहि जान ॥ ३२ ॥ मंग-



लमंद षडंग के सुने सुसंतति होत ॥ ज्योतिष ग्रंथ विचारि कै कहत कविन के गोत ॥ ३३ ॥ अथ रिपुभौंन विचारः ॥ क्रूर कर्म रिपु रोग औ चिंता संकवखान ॥ मातुल वर्ग विचारि सब शत्रु भौंन तें जान ॥ ३४ ॥ १८ जाके खल खेचर सहित लखियत जो रिपु भाव ॥ नाश होन ताके दुखद कहत कविन के राव ॥ ३५ ॥ शुभ खेचर रिपु भाव को सहित विलोकत होंदू ॥ सो रिपु सों संकित रहै कहत सयाने कोंदू ॥ ३६ ॥ अथ सप्तम भावः ॥ शास्त्र मंत्र व्यापार पुनि जाया बुद्धि प्रयान ॥ जानत सप्तम भाव ते जो जाहि जगजान ॥ ३७ ॥ त्रिलवन वांसा में लगन जो सतएं सुभ होंदू ॥ बाला पन तें तिय लहै कहत सु कवि सब कोंदू ॥ ३८ ॥ शुभ अवलोकै सहित जो जाके जाया गेह ॥ कै शुभ ग्रह की राशि जो सतएं होंदू सनेह ॥ ३९ ॥ युवति लाभ या योग में बाला पन में होंदू ॥ होंदू जु यह उलटो कहूं लहै कष्ट सों जोंदू ॥ ४० ॥ छ-ठें बारहें लगन में होंदू दिवा कर चंद ॥

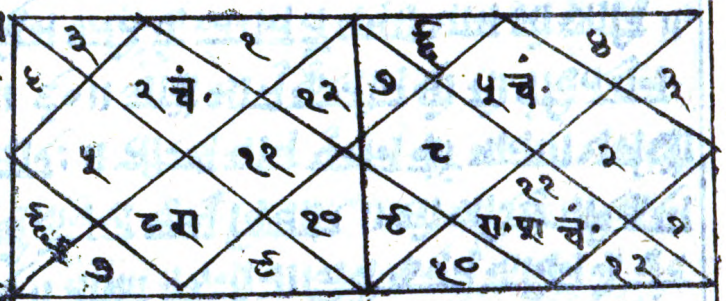


६४

बालापन में स्त्रीप्राप्तहोय

जानकीचंद्रका

जा·चं ताके एक वखानिये नारी एकै नंद ॥ ४१॥ जन्मजास गंडांत में लगन भारगव होद ॥ लग्न शनीचर
६५ जो परै वंध्या को पति सोद ॥ ४२॥ शशुभ सातएं वारहें पचएं जाके सोम॥ वनिता सुत सोरहित तिहि
कहैं कविन के खोम ॥ ४३ ॥ शनि मंगल को वर्ग जो जाके जाया गेह ॥ शनि औ मंगल जो कहूं ताकों
लखै सनेह ॥ ४४॥ जाकों ऐसे योग में होद जगत शवतार ॥ सो निज नारी सौं सहित करै सदा विभिचार
॥ ४५॥ शुभ दृष्टन वुध भारगव जाके जाया भौंन ॥ लहै वृढार्द नारि तौ यामें शचि रज कौंन ॥ ४६॥ शुक्र
सोम गुरु सोम सुत विषम राशि के होद ॥ जाया मंदिर में परैं लहैं सुदरी जोद ॥ ४७॥ तीनि होद शथ-
वा जुगुल कै एकै दून मांह ॥ मिलै खेट शनु रूप तिय कहत कविन के नाह ॥ ४८॥ हिम कर तेंकै खग-
९० ननैं जावैं सतएं रहु ॥ प्रथम मरै तिय ताहि की किये वनै फिरि व्याहु ॥ ४९॥ जाके शति औ चंद्रमा हो-
द सातएं धामारहै सदा तिहि पुरुष कैं घर शन व्याही वाम॥

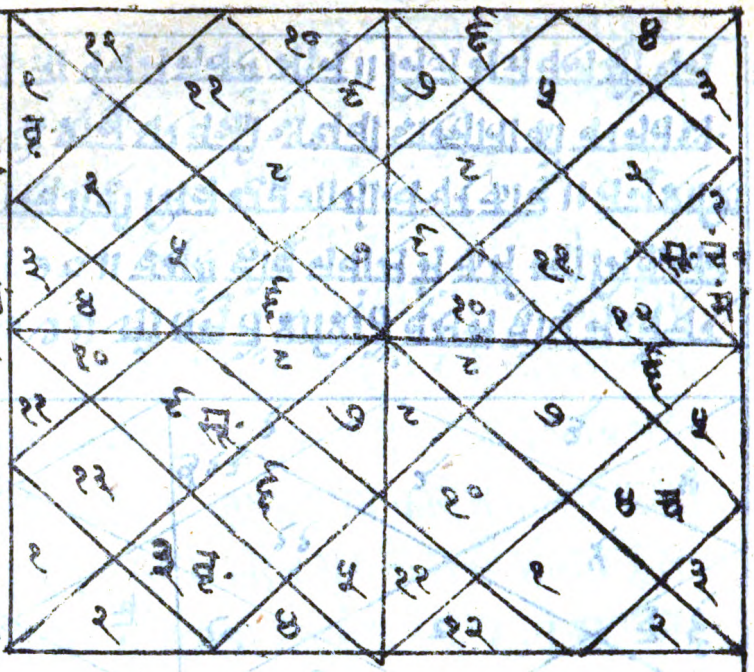


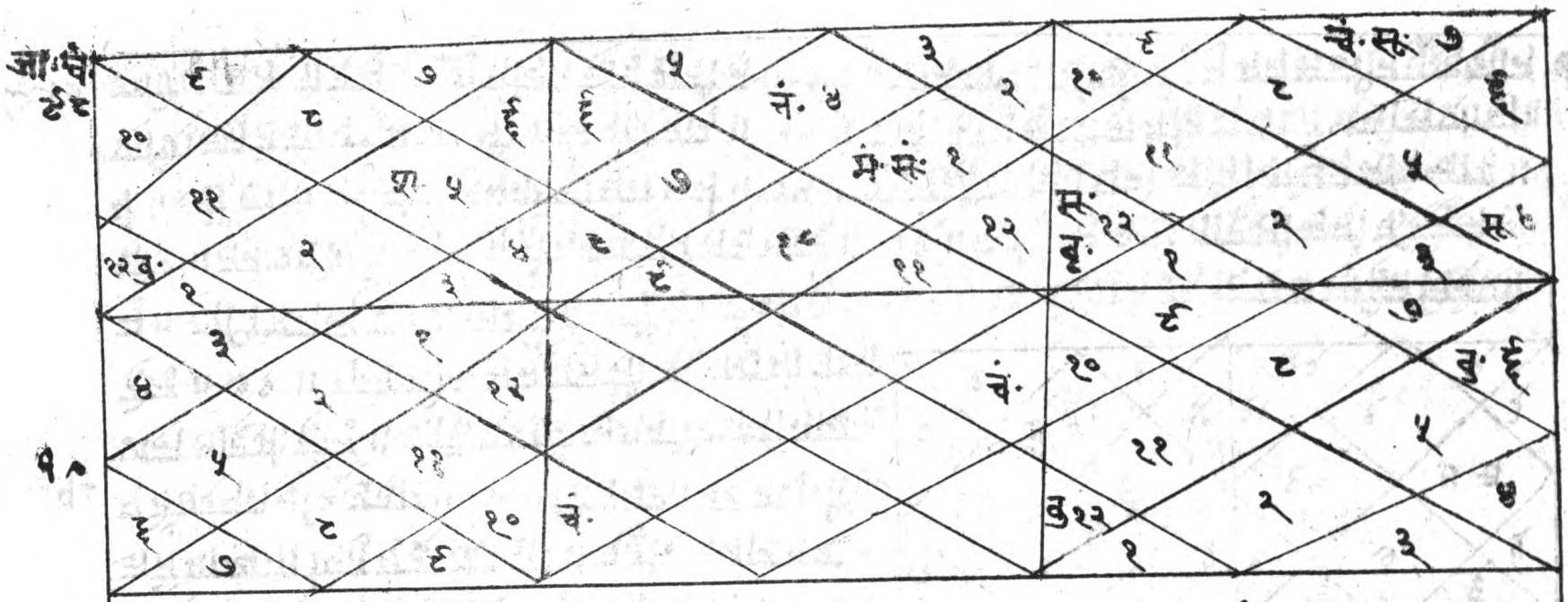
५०॥ सप्तमेंश नव मांस मैं तुल्य होद दुहु ठौर ॥ एक मिलै
तिय जो कहूं लखै नारि गृह शौर ॥ ५१॥ सप्तम पति रवि
भौम के शंशौं ही में होद ॥ एक नारि तव हूं मिलै कहत सया
ने कोद ॥ ५२॥ जो कहुं जाया भौंन में होद सोम सुत भा-
नु ॥ जातक ग्रंथ विचारि कै एकै नारि वखानु ॥ ५३ ॥ शुक्र वर्ग जो सातएं शुक्र विलोकै ताहि ॥ तौ वहु
नारी भाखिये सत कवि कहत सराहि ॥ ५४॥ शुक्र विलोकै साधु गण जाके जाया गेह ॥ तव हूं वहु वनिता ६५

जा·चं
६५

केहरि ॥ चली सोहबे सो भागजुत होइहै कीरति सार
सिंहाई ॥ ६५ ॥ नवम मीन जो नवम पति सुथली नी
छिद्र जो कोई ॥ भाग भीनु जुत जो लगै भाग चहै दिं
गो वनिता हो नेम ॥ ६४ ॥ साथ्यु एवं उच्चारि दस ज्ञानि
विधि रीत तो भाग पराये देस ॥ पंडित कहैं विचारि
भाग्य भीन माको कहैं पंडित राज सराहि ॥ ६५ ॥ सो
निज ध्यासी सो सहित सुथना लखिये सहि ॥ ताको
भाग्य देस सम कहत सयाने कोइ ॥ ६६ ॥ यासों
मैं कहत सुकवि सिरदार ॥ सत्य भीन मैं जानिये केवल सत्य विचार ॥ सो
॥ ६८ ॥ सुथा सो भाव विचारि ॥ सत्य भीन मैं जानिये केवल सत्य विचार ॥ सो
वान ॥ सोसुर वक्ता प्रबल पंडित करत बखान ॥ ६९ ॥ हिम करते के लगन तें नवम भाव जो आदि ॥
भाग ॥ क्रिया सील कवि नवम तें कहत सहित अनुराग ॥ ७० ॥ जाकें भानु छिलीन सो सो पंडित गुन
सीस ॥ तीरथ यात्र पुरान को अवगा धर्म दिशि

॥ ६६॥ होद स्व गेही भाग्य पति नाहि लखें शुभ खेट॥
कुल को भूयन होद सो लीने भागु समेट ॥ ६७ ॥ भाग्य
भौन में रवि कुजौ पूरन चंद समेत ॥ वंस नीति सोसचि-
वताकें नृप तादृ लेत ॥ ६८ ॥ होद स्वगेही तुंग कें नव-
ग्रंखेचर कोद् ॥ लखित होद जुत साधु सो सपन मही प
ति होद ॥ ६९॥ अथ दशम भाव विचार:॥ राज्य रा-
जतैं मान्यना पितु मुद्रा व्यापार ॥ वहुरि पयादे दश—
म तैं वरनन वुद्धि उदार ॥ ७० ॥ हित वक्ता वहु उद्यमी कु-
शल साहसी होद् ॥ जाकें दशएं लगनतैं रजनी नायक
होद् ॥ ७१ ॥ सत्वाधिक मनु राजसी वहु उद्यमी वखा-
नु ॥ अति प्रसन्न शशि लगन तें जाकें दशएं भानु ॥ ७२ ॥ आवेटी निर्दय विषय साहित विदेशी
होद् ॥ तनु शशि तें दसएं मही नंद कहत सव कोद् ॥ ७३ ॥ अर्थी सिलपी साहसी सदा करै दुज क-
र्म ॥ जो दसएं तनु चंदतें बुधनटहो दूस धर्म ॥ ७४ ॥ नृपवल्लभ वक्ता धनी अति विचित्र मति चारु ॥
शशि तनु तें जो दसम गुरु सो पावै परिवारु ॥ ७५ ॥ दाता साधु सुशील मति सुयशी धनी सुशील ॥
शशि तनु तें जो दसम भृगु पंडित होद सुडील ॥ ७६ ॥ दीन अपजसी छीन तनु मन मलीन दुख छीन





॥ तनु शशि तैं जो दसम शनि सो नर सदा अधीन ॥ ७७ ॥ जो तनु तैं शशि तैं दसम होइ नरवेचर कोइ ॥ दशम राशि को अंशपति तव ताको फल होइ ॥ ७८ ॥ दसएं होइ नवांस में कर्म स्वामि केखेट ॥ होइ सर्व कवि वर कहत ताकी वृत्ति अमेट ॥ ७९ ॥ तुंगस्वगेही मित्र गृह गार्मा खेचर कोइ ॥ तनु शशि तैं दसए भवन परैं शमित फल होइ ॥ ८० ॥ होइ नीच के शत्रु घर वक्री अथवा अस्ताताको वरनत अ-ल्प फल कवि को विद्या करि कल्प ॥ ८१ ॥ होइ स्वगेही तुंग जो पंचम नवएं भानु ॥ निज भुज बलसौं धनु

लहै पंडित कहत वखानु ॥ ८२ ॥ लग्न दूसरें ग्यारहें साधु बेद को थान ॥ तव भाषत भूषन सहित
जे जाहिर जग जान ॥ ८३ ॥ अथायु भाव विचारः ॥ लाभ होइ नृप चौर तें पर धन हरन अनेक ॥
बैठे बांधे अरि नगर सदा सहित अविवेक ॥ ८४ ॥ लाभ भौंन में सहित रवि अथवा देखत होइ ॥ व-
ल निर्वल क्रम जानिकै कहैं सयाने लोइ ॥ ८५ ॥ औषधितें औ सलिल तें सदा जीविका तासु ॥ धन
सों तिय गज वाजिसों पूरन रहै अवासु ॥ ८६ ॥ लाभ गेह में होइ शशि अथवा लखैं सप्रेम ॥ छीन होइ
तौ छीनता पूरन तें अति छेम ॥ ८७ ॥ हेम आभरन रतन जुत कुशल साहसी होइ ॥ यहै जानिये भाव
फल कहैं सयाने लोइ ॥ ८८ ॥ धनीसाहसी उद्यमी व्यापारिन को यारु ॥ पंडित धनी सुशील अति धरैं
वंस को भारु ॥ ८९ ॥ लाभ भौंन बुध राशि जो सहित विलोकै ताहि ॥ ज्ञाता गीत कवित्त को सत कवि
कहत सराहि ॥ ९० ॥ साधु संगही भूप हित मसकारी धनवान ॥ लाभ भौंन गुरु के लखैं होत कहै स-
व जान ॥ ९१ ॥ तिय जनतें बहु सुख लहै भूषन वसन अपार ॥ सहित विलोकत होइ जो उशना
लाभ अगार ॥ ९२ ॥ नील वसन महिषी उरद पसमी वसन अपार ॥ सहित विलोकत होइ शनि
जो ग्यरहैं दर वार ॥ ९३ ॥ होइ राशि शुभ बेध को लाभालय में जासु ॥ सहित विलोकत होइ शुभ
सदा लाभ कहि तासु ॥ ९४ ॥ अथ व्यय भाव विचारः ॥ हान दंड व्यय हानि औ बंदि मोक्ष ए
पांच ॥ ए सब द्वादश भौंन तें कहत मनीषी सांच ॥ ९५ ॥ भानु बारहैं होइ जो अथवा निर्वल सोम
॥ अरथ हरै ताको नृपति सहित जु देखैं भौंन ॥ ९६ ॥ अथवा दोऊ बारहैं दिन कर निर्वल चंद ॥

मन हरिहि समित तुला चरीस के सौहि रवि ॥ तनु भौम होइ जो जनम क्रोधी सो सब कहत कवि ॥ १ ॥

जानें ॥१॥ धन विहीन तन दीन छीन मति सों विन वाहन ॥ मन को होइ कठोर होइ वर नत ज्यों पाहन
२०२ ॥ साधु संग तें रहित बंधु कुल हीतिय को पुनि ॥ पर गृह तें जीविका कहत देव छ वहे गुनि ॥ सोध
रहित मन सपने कहूं देव दर सतीरथ गमन ॥ जाके उत पति के समै जो दिनेश संपति भवन ॥ २ ॥
प्रिय वक्ता धन वंत सूर संगर को जेता ॥ वाहन वसन अनेक सहित जन गन को नेता ॥ अनु चर सहि
त अनेक होइ पै बंधु विरोधी ॥ जसी महा बल वंत धीर अरि जन पर क्रोधी ॥ पुनि होइ प्रतापी विक्र-
मी बड़ो साहसी वीर वर ॥ सब कहत जान जो जनि समें होइ दिवा कर सहज घर ॥ ३ ॥ धन वाहन सों
हीन जन नि सुख नेकु न पावै ॥ गुप्त कोप सों सहित पिता को द्रव्य चुरावै ॥ वसै न थिर ह्वै ग्राम चि-
१०१ तु रावै विदेश पर ॥ जाके जामें रहै मात्र को सहित सदादर ॥ नहि होइ तेयुता के हियें द्रव्य सकल जा
ने अपन ॥ सब कहत ज्योतिषी वनि समें सुख मंदिर जाके तपन ॥ ४ ॥ शिव दुर्गा सों हेतु सदा रावैं
निज मन में ॥ स्वल्प होइ संतान सदा सुख पावै तन में ॥ क्रिया वंत जग विदित मंत्र विद्या में जाहिर
॥ अति नीछन मति होइ सकल कविता में माहिर ॥ पुनि कोप वंत अत्यंत मन सदा प्रमादी ॥ बहु-
मदन ॥ सब कहत जानि जिय जानि जो भानु मान नंद सदन ॥ ५ ॥ जीते शत्रु समूह हूह करिकै र-
न अंगन ॥ धैधन मान अनेक करै सब राजी मंगन ॥ बड़ो धनी सौ सत्व सुख निसों पूरन दिन दिन
॥ बड़ो जसी बल वंत सो जसी पै मातुल विन ॥ कै क्षपति होइ मंत्री प्रबल कुल अनु मान विचार व-
र ॥ इमि कहत गनक गनि जो जनम समै दिवा कर शत्रु घर ॥ ६ ॥ सदा रहै धन हीन छीन मनकी २०२

जा-चं
१०२

स्थिरहित अति ॥ ग्रसित रहै भय रोग सों अरु कुशील पति सदा भूप के रोष रहै सब दुर्बल अंगन ॥ नि
तवैरी मन रहै चहै निज तिय को संगन ॥ साहस विलास निद्रा सहित हीन साधु संगति रहित ॥ सब क-
हत दरिद्र प्राचीन मत तरुनि गेह जो रवि सहित ॥ ७ ॥ छोट छोट नैन चैन मन नेक न पावै ॥ बुद्धि सुबु-
द्धि सों हीन ज्ञान नीर नहिं आवै ॥ रोग वंत धन हीन छीन अति सकल क्रिय निसों ॥ चिंता व्यापित र
है सदा अति दुर्बल तन सों ॥ पुनि सो विदेश वासी मनुज चोरन सों धन होद छति ॥ सब कहत जान
द्यमि जानिकै मृत्यु भौंन जो जल जपति ॥ ८ ॥ धर्म कर्म सों हेतु सदा राखे उदार अति ॥ पुत्र मित्र सुख
सहित साधु पूज क विशाल मति ॥ मातृ वर्ग सों वैर सदा निज जीमें राखे ॥ क्रिया वंत सो होद शस्त्र वि-
द्या अभि लाखै ॥ पुनि विरित बंधु वैरी जगत जिहि अहार में नहिं तृपति ॥ सब कहत संत जाके जन-
मनवम भौंन वासर नृपति ॥ ९ ॥ सुख संपति समेत रहै वहु वाहन पूरन ॥ जो निज मन में धरै करै सो
कारज तूरन ॥ नर पति कृपा समेत रहै कामिनि सुत को सुख ॥ सदा जु वासों प्रीति रहै निशदिन प्रस-
न्न मुख ॥ तन रतन जटित भूषन धरहि तात मात ताकों तृ सहि ॥ दिन करन होद जाके जन मद समभौं
न दिन कर वस हि ॥ १० ॥ गीत कला परवीन वीन नैं कुशल मनो हर ॥ असन वसन धन लहै भूप सों
धरम धुरंधर ॥ महा वली पुनि होद शत्रु करि वर पंचानन ॥ दीवो दीवो छोडि करै मुख जाके आनन ॥
भाखै मृषा न भूलें कहू करि राखे जगनि जव सम ॥ द्यमि कहत जान जाके परै भानु भौंन एका दशम ॥
११ ॥ लोचन तेज विहीन छीन डरु जाकें नेको ॥ होद चचाकों दुखद रहित डर विरति विवेको ॥ तन को

जा-चं
१०२

जेता होइ शत्रु सब निज वस राखै ॥ हीन चैन चित परुष वैन कहिवो अभि लाखै ॥ नृप दंड होत जाको खरचु कहत सुकवि या विधि वरनि ॥ जग जन्म काल जाकें परै व्ययनि कैत मे जो तरनि ॥ १२ ॥ अ-
थ चंद्र भाव फलम् ॥ अति प्रवीन धनवंत काम कवि जीतन वारो ॥ भोगवंत गुन वंत वंस को भूष-
न भारो ॥ सो बालक बल वंत होइ सब सुखकी आकर ॥ लगन परे अज वृषभ कर्क को होइ निशा
कर ॥ पुनि करै गुंगु बौरा बधिर अन्य राशि को नखत पति धन हीन छीन आधीन अति होइ ही-
न सुख मंद मति ॥ मोदक छन्दः ॥ चारु सुखी धनवंत सनंदन ॥ भूप समान जसी जग वंदन।
॥ जानहि सो तिय मोहन की विधि ॥ जो धन मंदिर होइ कला निधि ॥ २ ॥ विक्रम सों धन को
उप राजहि तापस दान दया सों विराजहि ॥ सो दरको सुख दानि उजागर होइ जु तीसरें भौंन नि-
शा कर ॥ ३ ॥ होइ धनी धन वंत सवाहन ॥ पुत्र कलत्र सों प्रेम निवाहन ॥ राखहि सो सुर भू-
सुर सों रति ॥ जो सुख मंदिर होइ निशा पति ॥ ४ ॥ इंद्रिय जित सुशील अति संपति ॥ सत्य
समेत प्रसन्न महा मति ॥ होइ सुखी सब कारज लायक ॥ पंचम गेह में जो निशि नायक ॥
५ ॥ निर्दय क्रूर कपी खल सालस ॥ कोप समेत रहै रिपु केवस ॥ मंद अहार वखानिये ता
कर ॥ जो रिपु गेह मैं होइ निशाकर ॥ ६ ॥ ओज समेत मनोज को आगर ॥ हो अभिमानी
जग त में नागर ॥ तीव सलोभी सु भोजन में रति ॥ जो तिय भौंन में होइ निशापति ॥ ७ ॥
चोर अराति महीपति सो नित ॥ चिंतित चित्त रहै सो विनावित ॥ रोग समेत अ में जित हीं

जा चं
१०४

नित ॥ जो शशि आठएं होइ कदा चित ॥ ८ ॥ वेद पुरान सुनै कर तीरथ होइ कुटुंबि नि कौं ज्यौं भगी-
रथ ॥ सो धन पुत्रक लत्र स कीरति ॥ जो नवएं घर होइ निशापति ॥ ९ ॥ भूप कृपा तैं वढै दिन हीं
दिन ॥ संपति ताहि न छोडि सकै छिन ॥ कीरति सत्व संतोष सचा कर ॥ जो दशएं घर होइ निशा
कर ॥ १० ॥ भोगी महा गुनवंत सवाहन ॥ सूर धनी नग नेगु मराहन ॥ भूप समान सु होइ महा-
मति ॥ जो ग्यरहैं घर होइ निशापति ॥ लोचन रोग समेत विनाहि न ॥ संकित हीं रहै वैरि सौं नि-
त ॥ रोग को भाजनु होइ रिनी अति ॥ बारहैं भौंन में जावें निशापति ॥ ११ ॥ अंध भौम भाव फ-
लम् ॥ भुजंगप्रयात ॥ लहै घाय कौं अंग में दिग्ध रोगी ॥ विदेशी सदा पुत्र कांता वियोगी ॥ गु-
मानी वडो साहसी उग्र नामी ॥ छमा नंद जो जन्म में लग्न गामी ॥ २ ॥ दरिद्री महा चिन्त चिंता
धिकारी ॥ कुवैसी कृपा हीन विद्या पहारी ॥ म हामूढ भूलेन हीं धर्म ताकें मही सूनु जो दूसरें भी-
न जाकें ॥ ३ ॥ महा विक्रमी साहसी जंग जेता ॥ मही पाल को भीतु दाता रनेता ॥ सुखी सर्वदा
बंधुसौं वैरु साजे ॥ धरा सूनु जो तीसरें भौंन भ्राजे ॥ ४ ॥ दुखी नातु वैरी विरोधी विदेशी ॥ विना
जान सौं निर्वली सो कलेशी ॥ हिये जाति द्वै ना दया ने सताकें ॥ धरा सूनु पाता ल के भौंन जाके
॥ ५ ॥ विरोधी कफ व्याधि वाता धिकारी ॥ लहै शत्रु तें मित्र तें दुःख भारी ॥ मनी षा विना भूरि
आहार ताकें ॥ धरा नंद जो नंद के भौंन जाके ॥ ६ ॥ महा दाहु भोगी वली शत्रु हंता ॥ सुखी सा
हसी बुद्धि को पार गंता ॥ हिये में सदा शुद्ध संतोष ताकें ॥ इला सूनु जो शत्रु के भौंन जाकें ॥ ७ ॥

जाक चंद्रका

१०४

जो चे १०५ अनर्थी महा व्यर्थ चिंता धिकारी ॥ सदा शत्रु संकास हे चित्त भारी ॥ दुखी होइ सो कर्क सा नारि तावैं ॥ परे भोम जो भामिनी भौन जावैं ॥ ७ ॥ करै साधु निंदा दुखी नैन रोगी ॥ बड़ोनी च कर्मा अधर्मी वियोगी ॥ करै द्रव्य को नाश सो बाप हूको ॥ परे आठवें भौन जो सूनु भूको ॥ ८ ॥ दया हीन सो बंधु वैरी अराता ॥ हिये मेर है युद्ध के रंग राता ॥ महीपाल सों मान औ भूमि पावै ॥ महीसू नु जो भाग के भौन आवै ॥ ९ ॥ धनी साहसी सो अलंकार धारी ॥ महीपाल सों चित्त संतोष कारी ॥ जुरे जंग में शत्रु के छंद मोहै ॥ धरा नंद जो कर्म के भौन सोहै ॥ १० ॥ लहै हेम भूपाल नैं वस्त्र रीतैं ॥ करै बीज की आगितें शत्रु तातैं ॥ सुखी सर्वदा होइ वामा विलासी ॥ धरा सूनु जो लाभ के भौन वासी ॥ ११ ॥ सदा गोत सों मीत सों वैर नाने ॥ सदा नैन रोगी वृथा क्रोध ठाने ॥ सदा द्रव्य सों हीन चिंता लपेटा ॥ १०५ परे बारहैं भौन नैं भूमि बेटा ॥ १२ ॥ अथ बुधभावफलम् ॥ नाराच छन्दः ॥ उदारता समेत साधु सर्वदा सुखी रहै ॥ विनीत नीति में प्रवीन कीर्ति चारुता लहै ॥ कला ज्ञ गीत ज्ञ होइ वैद ई सदा कर रै ॥ शरीर भौंत चंदनं द जन्म काल जो परै ॥ १ ॥ सुगोल मंजुडील सुद्ध बुद्ध सों सदा रहै ॥ समेत पुत्र मित्र सों अनेक संपदा लहै ॥ सुखी सदा कला समेत दीह दुःख कों हरै ॥ मृगांक सूनु दूसरें विशाल भाग्यतें परै ॥ २ ॥ विनीत भोग वंत साहसी उदार उद्यमी ॥ स्वमित्र वैश्य चित्त को महीप सोलहै जिमी ॥ करै स्वहस्त शत्रु हू कृपा समेत चेत में ॥ शशांक सूनु राजमान तीसरे निकेत में ॥ ३ ॥ धनी गुनी सवाह मित्र पुत्र सों सुखी रहै ॥ सुगीत नृत्य में प्रवीन वीन सों दुखी रहै ॥ सुवस्त्र शस्त्र भूषणादि सों जाके छंदका १०५

महीप सौं सिरै ॥ श्रीपाल के सहजी कहूं पताल मैंवसै ॥ ४ ॥ सुमित्र पुत्र सौं सुखी सहां विचारनं
प्रवीन ॥ मंत्र चार मैंसु जान खान पान मैंन दीन ॥ सुवर्न पारखी बड़ी गुनी सुवीर ता समेत ॥ श्रीश्री
क हेतु जी निराज मीन पाचरैं निकेत ॥ ५ ॥ रोग शंग सर्वथा न दीन कोंकरैं ॥ विवाह में महा
सखी सदा श्रमाति सौंडरैं ॥ शचीरतुंद साहसी श्रयो कहां जहां नहीं ॥ छहैं निकेत बूड़ जी पहैं
संपदा कहां ॥ ७ ॥ मुधीन्द्र नंदि की जती मनोज कांति की पती ॥ सत्य विनय वान सौं
सुवर्ण कांतिनी यतीत सर्वथा ॥ श्रीश्रीक सहजी मनोज मैंन की ॥ ८ ॥ सखी
दिया जहां ॥ ९ ॥ विशाल भाग्यवंत हैं दीन दुःख को हरैं ॥ श्रीश्रीक सहजी विद्यावान भाग्यवंत
जसी जगी ॥ विनीत विवेकवंत चारु भोग वंत मानसी ॥ १० ॥ विलास हास सौं समेत जेत वार प्रात्रु जीन
सकाल काम मैंन ॥ ११ ॥ सखी सुनंद सौं रहैं समीप ज्यौं रहैं
भाग्य के निकेत श्रीनि जी पहैं ॥ १२ ॥ सखी सुनीति सौं रहैं
हसै महा बली उदंड हानि ॥ प्रतापी पुंज श्रीपती जी की
सखी सुनीति सौं रहैं ॥ १३ ॥ सखी सुनीति सौं रहैं
सखी सुनीति सौं रहैं ॥ १४ ॥ सखी सुनीति सौं रहैं
सखी सुनीति सौं रहैं ॥ १५ ॥ सखी सुनीति सौं रहैं

जा-चं १०७ व फलम् ॥ त्रिभंगी छंद : ॥ नर पति सम लायक जन सुख दायक खल कुल घायक सुख कारी ॥ विद्या वर धारी गुन अधिकारी सतमख कारी धुर धारी ॥ अति सुंदर दाता धनी सभ्राता ज्ञाता त्राता तिहुपन में ॥ निज कुल को वोहित जग जन को हित देव पुरोहित जो तनु में ॥ सुंदर अति भोगी देहु निरोगी तिय संयोगी दरवारी ॥ द्विज वृत्ति परम मे राज धरम मे कवि तक रस मे सुख कारी ॥ तन सहित विभूषन वैरि विदूषन निज कुल भूषन सु विलासी ॥ कोकिल सम कूजै तिहि जग पूजै जो गुरु दूजे गृहवासी ॥ २ ॥ उपकार न माने वैर हिठाने दया न आने सो मन में ॥ जिय रहित सुजन तासहित कृपन ता रहे निधन ता तिहुपन मे ॥ सुत मित्र विरोधी तियसों क्रोधी रहे निरोधी रोगन सों ॥ गुरु सदृज भवन में रहैं जनम में खलता मन में निर धन सों ॥ ३ ॥ वाहन वहु जाति न भांति निभाति नि पांति नि पांति निलखि हरषै ॥ धन कों धन पति सों जाहिर अति सो करि वर गति सों चितु करषे ॥ पापन सो न्यारो नर पति प्यारो कीरति वारो अति आतुर ॥ करुना वहुते ही संत सनेही जो सुख गेही सुर पति गुर ॥ ४ ॥ सुंदर वर पंडित गुन गन मंडित कीर्ति अखंडित जग ताकी ॥ वहु सुत उपजावै जग मन भावै संपति पावै वहु धांकी ॥ दिन दिन सुख वाढै रहे उकाढै अरि पुर डाढै कारी संगर ॥ पूजै सुमन स गुर कारज आतुर जाकें सुर गुर पंचम घर ॥ ५ ॥ कल ही जग जन सों साल सतन सों व्याकुल मन सों सदा रहै ॥ सद्रीत उदासी अति उप हासी वैन प्रकाशी नैन कहे ॥ अरि जन सों संकित रहै कलं कित व्रण तन आंकित अति दुर्मति ॥ दिसि देश निभर्मय करै अधर्मय - १०७

जा-चं १०८

जा-चं १०८ जोरिपु घर्मय वाचस्पति ॥ ६ ॥ विद्या वर पूरन विनई कूर नरन में सूरन धरिद पढै ॥ निज कुल भव भंजन तिय मन रंजन दारिद गंजन दुरव कपटै ॥ मंत्री नर वर को सेवक हर को सतक विधर को संपति पुर ॥ छ- वि जौन वदन में सोन मदन में मदन सदन में जो सुर गुर ॥ ७ ॥ जाहिर दूतन मैं दुरबल तन में दुरित कथन में मनु राखै ॥ निरधन अवि चारी अति अपकारी नाहि जुवारी जग भारखै ॥ पितु गेह वियोगी साल सरोगी सुर पुर भोगी कदुमीतै ॥ अस्तम गुरु जाकै भू भरता के डरन डरातें तनु वीतें ॥ ८ ॥ सब धरम कस्म की राति शरम की भूप मरम की सब जानै ॥ विद्या अधि कारी वद्ध व्रत धारी हित हित कारी मति ठानै ॥ करुना जिय आनै देव उ दानै अति सन मानै सुर भूसुर ॥ ते कथा श्रवण में नेति गमन में नव १०८ म भवन में जो सुर गुर ॥ ९ ॥ निज कुल को भरता जग जस करता सब दुरव हरता फुर भाखै ॥ ताकौं कुछ दूरन धन सौं पूरन भागन तूरन करि राखै ॥ राज समाजै तत परकाजै भूप समाजै कर तल करि ॥ सुं- दर अति कामी जग में नामी जो गुण गामी अंवर धर ॥ १० ॥ बहु धन उपराजै सुरवद मभाजै देह पराजै फु- ल मंडल ॥ अति वल है नीको निनिज ही को मनो मही को आखंडल ॥ जग विदित कृपा निक मति परि- मानिक मञ्जुल मानिक मोतिलर्से ॥ लाभालय यजा के गुरु गुरुना के विटप लता के वन ठिलमे ॥ शविन कारन दा पी जड मति पापी उर संतापी अपकारी ॥ निर्लज्ज दुखारी पर धन हारी विदित विहारी परनारी ॥ आलसको भाजनरत पर का जन जीमें लाजन कदु परसै ॥ सुर पति गुरजाकै अति मन नाके पर वनिता के सुख परसै ॥ अ- घ भृगु भाव फलम् ॥ गीतिका छन्दः ॥ मति मंजुल लित कलानि सों ॥ मृदु बानि सों जग मन हरै ॥ सवि १०८

जाचक-चंद्रिका

जो चै
१०४ लास सुंदर तियन के अभि लाष परि पूरन करै ॥ धन मान भूपति सौं लहै दुखदंद दीन नि कों हरै निज वं-
स वारि जहं ससो तनु गेह भृगु सुत जो परै ॥ १॥ बहु शस्त्र शास्त्र समेत अति धनवंत धनपति कौं हसै ॥ त-
न पीन छीन कलेश सुंदर मीन के तन सौं लसै ॥ रन दक्ष राज स स्वक्ष भक्ष कुरक्ष पाल स्ववंस कों भृगु नंद
जो धन भौंन में अवतंस सो अवतंस को ॥ २॥ कृस अंग द्रव्य विहीन दीन मलीन तन मन सौं रहै ॥ अति कु-
पिन दुर्मति रहित संतति पुरुष बोलनि कौं कहै ॥ निज बंधु संगन सो लहै रन रंग का तरता करै ॥ रति तिय
न की खुसना करै घर तीसरे उशना परै ॥ ३॥ सुख वस्त्र शस्त्र समेत वाहन प्रीति साहन सौं करै ॥ धन वं-
त धीरज वंत दुःख असंत संतनि के हरै ॥ आनंद दिन दिन सौं करै भृगु नंद जो सुख घर परै ॥ कवि कहत
१-५ पंडित राज वेजिन की गिरान कहूं हरै ॥ ४॥ बहु वित्त वंत कवित्त में रुचि मित्त मन रंजन जसी ॥ पसु अन्न
वाहन पुत्र सौं रूपवन्न सुंदर साहसी ॥ निसि घोस जाको मन रहै रत भूमि पाल सनेह में ॥ जनि काल में जा-
के परै भृगु नंदनंदन गेह में ॥ ५॥ तन छीन हीन मनोज सौं श्रम दान ताकी सुख लहै ॥ रुज ग्रसित अति भु-
ज वलन ता के कुजन सौं बहु दुख लहै ॥ दृक जीभ सौं ताकी कहौं रिन की कथा अब कौन में ॥ सब कहत -
ज्योतिष पारगो जो भारगो रिपु भौंन में ॥ ६॥ बहु कुशल केलि कलानि में मृदुबानि सौं जग मन हरै ॥
की देहु वाहि अनेक संपति नेक जो जापर डरै ॥ परवीन हास विलास में गति मीन कर जल केलि को ॥ भृ-
गु सातएं सोम धुप सो पुर बहु सुवरन वेलि को ॥ सठता समेत अखर्व गर्व निसंक सो निशि दिन रहै ॥ अति
पुत्र मित्र कलत्र चिंता अनल सो तन मन दहै ॥ महिषा लहै महि पाल सौं महिमा रहै जस पूरि है ॥ भृगु- १०८

जा॰ चं॰ आठएं जाके परै ताके विराजत भूरि है ॥ ८ ॥ गुरु देव पूजन में प्रवीन पुरान वेद कथा सुनै ॥ भुव लोक
११० में चहुं दिशि रहै जसु चंद सो जाको उनै ॥ धन मान ज्ञान समेत पुनि वरवेष सो पर दुरव हरै ॥ जनिका
ल में भृगु नंद जो नवएं निकेत न में परै ॥ ९ ॥ बहु भाग्यवंत अनंत मान विराज मान महा धनी ॥ सुख
होहि भूरि अनेक वाहन संपदा घर मैं घनी ॥ निसि द्यो सता के दार दार कसानु रागहि ऐं बसै ॥ सब कह
त पंडित जो परै भृगु नंद जाकें गृह दसै ॥ १० ॥ निज भृत्य पोषक सानुराग संगीत नृत्य विधान में ॥ ध
नवंत ताको जसु मढै चहुं दिस नि में विदिशानि में ॥ सत कर्म धर्म अनेक सों सविवेक चाहै चित्त में ॥ जि
न के परै रतपति सर्में भृगु नंद लाभ निकेत में ॥ ११ ॥ शुभ कर्म धर्म विहीन दीन विरोध साधुन सों करै ॥
११० सदता समेत न हेत सों रत चेत में न कृपा धरै ॥ परतरुनि के विभि चार में रत चित्त में न विचार है ॥ दुखदं
द पीडित सो रहै भृगु नंद जाकें बारहैं ॥ १२ ॥ अथ ग्रहानि भाव फलम् ॥ मालिनी छन्दः ॥ शनि
तनु गह गामी होइ सो उच्च होय कै ॥ तिहि सब नृप वन्दै चाय सों पाय छैकै ॥ अपर लगन गामी होय जो जन्मजा
के ॥ तिहि कहत अलक्ष्मी सो बसै भौंन ताके ॥ १ ॥ व्यसन रति विदेशी वंस सो वैर ठानै ॥ निर धन कटु भाषी गाइ
विप्रै न मानै ॥ शनि मलिन विकारी जानियें कर्मता के ॥ धन भवन विलासी भानु को सूनु जाके ॥ २ ॥ नर पति अ
धिकारी श्री तुरंगाधि कारी ॥ अति बल धनु धारी शत्रु सेना पहारी ॥ नर निकर सहार्दू जे बसैं गामता कै सहज
सदन गामी भानु को सूनु जाके ॥ ३ ॥ मलिन तन विषादी वात पित्ताधि कारी ॥ निरबल बहु वादी निर्धनी धूतु भारी ॥
जननि जनक वैरी क्रूर कर्मानि कामी ॥ जनम समय जाकें मंद पाताल गामी ॥ ४ ॥ कुशब पुबद रिद्री साधु सों वैर रावै ॥ ११०

जा॰ चं॰ चंद्रका

तिहि गनक गुरू जे हीन संतान भाषैं ॥ जहु मति नहि आवै विप्र के देव काजै ॥ शनि जन्म समै जो पाचयें भौंन राजैं ॥ ५ ॥ रिपु नगर उजारै जोर सौं जंग जीतै ॥ बहु गुन बहु ज्ञाता चित्त चिंतन चीतै ॥ विमल सुजस चाहै ताहि राजा सराहै ॥ शनि रिपु गृह गामी नौ कहां दीन ताहै ॥ ६ ॥ सरु जतन दरिद्री कर्कसा नारि पावै ॥ नहिं सुर गुरु पूजा भूलि हूं चित्त आवै ॥ नहिं निरत पर स्त्री को पियेगा सु नामी ॥ शनि जन्म समैं जो कामिनी गेह गामी ॥ धन रहित कृशांगी आलसी रोग भोगी ॥ सुजन जन वियोगी धूर्त्त कर्म प्रयोगी ॥ मन मलिन लपेटे दादु सों शंग नाके ॥ जनम समैं राजै आठएं मंद जाकें ॥ ७ ॥ गुन वरनृप सेवी योग शास्त्र अभिलाषी ॥ सुत जुवति वियोगी सील वित्सत्य भाषी ॥ सुहृद अनुज वैरी सर्व था दीन संगी ॥ दिन कर सुत जाकें धर्म के भौंन रंगी ॥ ८ ॥ बुधि वर नृप मंत्री साहसी जंग जेता ॥ विनय विभव सालीओ जशी नीति नेता ॥ बहु मति जिय जानौ मा पिता को सनेही ॥ दिनकर सुत जाकें जन्म में कर्म गेही ॥ १० ॥ थिर धन बहु जीवी लै करै हाथ हाथी ॥ रिपु निकर नितांपी होद सो भूप साथी ॥ रुज रहित न आवै जी दया दीन ताके ॥ जनि समय विराजै ग्यारहैं मंद जाकें ॥ ११ ॥ मति निठुर न लज्जा जाति छैनेक जी में ॥ भर मति दिशि चारो देह बीते मही में ॥ रिपु निकर निहंता हीन संपत्ति ताकें ॥ जनि समै विराजै बारहैं मंद जाकें ॥ १२ ॥ अथ राहु भाव फलम् ॥ पद्धटिका छंदः ॥ बानी अडोल रिपुजेत वार ॥ पर काज निरत उद्यत उदार ॥ हिय छैन जाद निज नारि हेत ॥ स्वर्भानु होद तनु के निकेत ॥ १ ॥ क्रोधी कुटुंब को अरि समान ॥ जाके विचार दाया न दान ॥ पर विभव देखि उर होत साल ॥

कौन हानि नित नित अधि काहूं ॥ चौर अगिनि जल भीति रहै जिय में नित छाहूं छाहूं रहै हिय
फिकिरि नारि पुत्रन की ताकै ॥ वात पित्त मय होइ केतु तन मंदिर जाकै ॥ १ ॥ भाषत कवि उतप-
ति समैं केतु होइ धन गेह ॥ तौ वह हियै कुटुंब सों भूलि न मानै नेह ॥ भूलि न मानै नेह गेह विन संप-
ति ताको ॥ नृपसों रहै डरात गात अति दुर्बल वाको ॥ वाको वदन सरोज सदा निंदा अभिलाषत ॥ वी-
तै नाको जन्म मूढ वैनन कों भाषत ॥ २ ॥ उतपति में जो तीसरें केतु परै जो आइ ॥ तौ संगर में
अरि निकर देखत ताहि पलाइ ॥ देखत ताहि पलाइं बंधु चाकर भय कारी ॥ दुष्ट बुद्धि तन रुक्ष हो-
इ विक्रम बहु धारी ॥ बहु दुख धारी होइ प्रमादी बादी मति में ॥ परै तीसरें केतु भौन जाके उत पति में ॥
३ ॥ वाहन ताकों नहि जुरै परै सुरद्रुम मे केतु ॥ सो नहि मानहि भूलिहूं मात पिता सों हेतु ॥ मात पिता-
सों हेतु नहीं नीरे धनु आवै ॥ जनक भौन में वासु एक छिन ने कुन पावै ॥ पावै सुख नहिं एक होइ माया
अब गाहन ॥ छली क्रूर मति हीन छीन तन निर्बल वाहन ॥ ४ ॥ नंदन घर में जनि समै परै केतु जो आ-
इ ॥ हीन होइ संतान सों किए अनेक उपाइ ॥ किए अनेक उपाइ बुद्धि विन ताको जानौ ॥ छल बल
जोरे अर्थ कलह मय ताको मानौ ॥ माने ऊपर प्रीति हिये छोवै छल छंदन ॥ छषी कर्म में दक्ष केतु
जाके गृह नंदन ॥ ५ ॥ जाकें उत पति के समै रिपु निकेत में केतु ॥ सो वर वैरी वधुनि के सुख समूह हरि ले-
तु ॥ सुख समूह हरि लेतु होत तीछन मति ताकी ॥ लहै राज सन मान रहित रोग निद पुवा की ॥ वाकी
कीरति चहूं ओर फैलै वसुधा के ॥ अंतन सो सुख लहै केतु रिपु मंदिर जाके ॥ ६ ॥ जाया मंदिर में कहूं

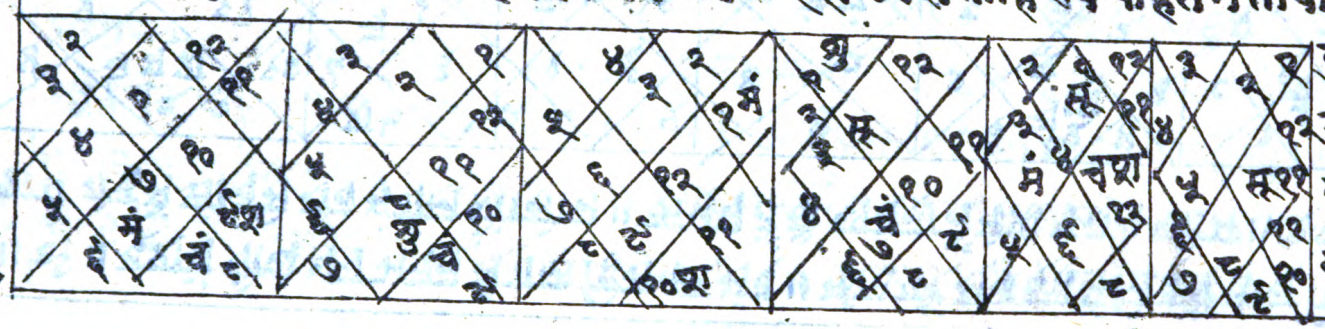
जा पंचमी कौनु परे जो शाद ॥ सो जगपति छठमि सुखी होइ बड़ी धन पाइ होइ बड़ी धन पाइ ॥ गहे चाही वहि जानी होइ महीपति मिलि
गीतनि रहै होइ परतिय की रंता ॥ चंपक की होइ समान सहित बहु गुन को गायन ॥ सुंदर सुखी सदा होइ

मीनी जगजाहिर बड़ी कीन स्यारहि धरम ॥ विद्या वनविनीत सो मही वली कीरत ॥ भोगी नहिं नहिं सो होइ नरहरि को हरषि ॥ ॥ ९० ॥
की ॥ भोगी नहिं नहिं सो होइ नरहरि को हरषि ॥ ॥ ९० ॥
हिताल पाप सकल ॥ ॥ जगजाहिर बड़ी कीरत ॥ विद्या वनविनीत सो मही वली कीरत ॥ भोगी
कहै कान संपति घर मैं नाहि ॥ बड़ी होइ धनवंत मंत्र हरि नीकी जाकि ॥ ८ ॥ नाश्रे सकल कलेश्या को कि
तुरंग के मौन ॥ ताके धन के भाग की कथा कहौं मैं कौन ॥ कथा कहौं मैं कौन ॥ समित संत मैं मरुव पाव
= तेरी विनती ही होइ गरुड़ मनि तिहि जनु गावै ॥ दान क्रिया तप हीन करै नहिं तीरथ वासै ॥ महाबली
जो सिंह शत्रु की वरसै नासै ॥ ७ ॥ हाथ में जाके कैद मैं शत्रु अधीन को दंड ॥ तासो एक घरी कहै
= तेरी विनती ही होइ गरुड़ मनि तिहि जनु गावै ॥ दान क्रिया तप हीन करै नहिं तीरथ वासै ॥ महाबली
जो सिंह शत्रु की वरसै नासै ॥ ७ ॥ हाथ में जाके कैद मैं शत्रु अधीन को दंड ॥ तासो एक घरी कहै
कहै कान संपति घर मैं नाहि ॥ बड़ी होइ धनवंत मंत्र हरि नीकी जाकि ॥ ८ ॥ नाश्रे सकल कलेश्या को कि
तुरंग के मौन ॥ ताके धन के भाग की कथा कहौं मैं कौन ॥ कथा कहौं मैं कौन ॥ समित संत मैं मरुव पाव
की ॥ भोगी नहिं नहिं सो होइ नरहरि को हरषि ॥ ॥ ९० ॥
मीनी जगजाहिर बड़ी कीन स्यारहि धरम ॥ विद्या वनविनीत सो मही वली कीरत ॥ भोगी नहिं नहिं सो होइ नरहरि को हरषि ॥ ॥ ९० ॥
की पुत्र वियोगी ॥ तिन दिन दुनी लाभ जनक जननी हित कारी ॥ कारी मुरव होवि की ॥ ९१ ॥ वपन रीती होइ की वारं
राम धनी सदि ॥ ॥ तेज वंत गुन ज्ञान जनक जननी हित कारी ॥ कारी मुरव होवि की ॥ ९१ ॥ वपन रीती होइ की वारं
= तेरी विनती ही होइ गरुड़ मनि तिहि जनु गावै ॥ दान क्रिया तप हीन करै नहिं तीरथ वासै ॥ महाबली
जो सिंह शत्रु की वरसै नासै ॥ ७ ॥ हाथ में जाके कैद मैं शत्रु अधीन को दंड ॥ तासो एक घरी कहै
कहै कान संपति घर मैं नाहि ॥ बड़ी होइ धनवंत मंत्र हरि नीकी जाकि ॥ ८ ॥ नाश्रे सकल कलेश्या को कि
तुरंग के मौन ॥ ताके धन के भाग की कथा कहौं मैं कौन ॥ कथा कहौं मैं कौन ॥ समित संत मैं मरुव पाव
की ॥ भोगी नहिं नहिं सो होइ नरहरि को हरषि ॥ ॥ ९० ॥
मीनी जगजाहिर बड़ी कीन स्यारहि धरम ॥ विद्या वनविनीत सो मही वली कीरत ॥ भोगी नहिं नहिं सो होइ नरहरि को हरषि ॥ ॥ ९० ॥
की पुत्र वियोगी ॥ तिन दिन दुनी लाभ जनक जननी हित कारी ॥ कारी मुरव होवि की ॥ ९१ ॥ वपन रीती होइ की वारं
राम धनी सदि ॥ ॥ तेज वंत गुन ज्ञान जनक जननी हित कारी ॥ कारी मुरव होवि की ॥ ९१ ॥ वपन रीती होइ की वारं

होद् सब पूजै पायन ॥ १२ ॥ इति श्री महाराज कुमार अचल सिंह कृत्या त्रिपाठि शंभु नाथ वि-
निर्मितायां जातक चंद्रिकायां भाव फल प्रकाशः ॥ १६ ॥ अथ गृह मृत्यु विचारः ॥ अठएं
दिन कर आदि दै कोऊ गोचर होद् ॥ क्रमतैं मीचु वखानिये कहत सयाने लोद् ॥ १ ॥ अनल सलिल
करवालतैं ज्वर आमयतैं नाश ॥ कुधोतयौतैं कहत हैं पंडित राज प्रकाश ॥ २ ॥ चर थिर द्यंगज आठएं
परैं भौनमें आद् ॥ तौ विदेश निज देशमें पंथमी चुहै जाद् ॥ ३ ॥ जो विनाश के गेह में परैं न खेचरको-
द् ॥ देखन वारे जोवली ताही को फल होद् ॥ ४ ॥ पित्त वहुरि कफ पित्त कहि अरु त्रि दोषतैं जानि ॥ अ-
ष्मै वात पुनि वात तें रवितें मीचु वखानि ॥ ५ ॥ सहित नदे खैं जो कहूं अष्टम गृह को कोद् ॥ वाद् सबोंको
त्रिलव पति ताही को फल होद् ॥ ६ ॥ अथ मेषादीनां त्रिलव फलम् ॥ प्रथम त्रिलव जो मेष को ११५
याप विलोकैं वाहि ॥ जीव गरल के पित्ततें मीचु वखानत ताहि ॥ ७ ॥ होद् दूसरो जल जतैं केतव हो-
द् विनाश ॥ सर सरिता तें कूप तें तीजे कहत प्रकाश ॥ ८ ॥ मीचु ऊंट तें शत्रु तें रुष के पूरन अंस ॥
चोर हुतासन पित्त तें कहत सुकवि अवतंस ॥ ९ ॥ होद् तीसरो त्रिलव जो वृषभ राशि को यार ॥
ऊंचे थल वे गिरिमरै पंडित कहत उदार ॥ १० ॥ प्रथम त्रिलव जो मिथुन को कास स्वास तें मीचु ॥ दू-
जे वृषतें गोत्रतें मरैं परै नहिं वीचु ॥ ११ ॥ गजतें पर्वत पतन नैं कै कानन में होद् ॥ मीचु मिथुन के तीसरे
कहत सु पंडित कोद् ॥ आप चयान ने कंट तें कर्क प्रथम द्रेक्कान ॥ दूजे विष अति सार ते मीचु वखान-
त जान ॥ १३ ॥ के प्रमेह तें गुल्म तें जीह रोग ते जानि ॥ त्रिलवती सरें कर्क के पंडित कहत वखानि ॥

॥ ॥ ॥

नाशे अंग ॥ ३०॥ गजतें बूडै नावतें होइ जलोदर ताहि॥ तीजे में उप दंशतें मरै कराहि कराहि ॥ ३१॥ अथ योग मृत्यु विचार दोहा॥ चंद बीच है पाप के रुधिर कोपतें अंत ॥ सोरवन रोगाकु वामतें भाषत बड़े महंत ॥ होइ चंद जो आठएं है शुभ ग्रह के बीच ॥ तपन हुतासन तें कहत ता- की कवि वर मीच॥ के त्रिकोन के आठएं अशुभ खेट को वास ॥ पाप लखे अहि पास तें तिहि को हो- इ विनास ॥ १॥ यहै योग जो त्रिबल में जाके होइ प्रचंड ॥ चंदी॥खाने में कहत ताको होइ विखंड ॥ २॥ भानु मीन के लगन में मदन स पापी चंद ॥ अज को भृगु निज नारितें निहचें होइ निकंद॥ ३ ॥ अन्य मत॥ छीन चंद शनि कर्म में चौथें रवि के भौम ॥ तनु त्रिकोन में पाप जुव मंद शूल तेशौ म ॥ ४॥ अन्य योगाः॥ दशएं कुज रवि सुख भवन लखे छीन शशि मंद ॥ कहत सुकवि वर कछ तें निहचें होइ निकंद ॥ ५॥ छीन चंद कुज मंद रवि मृति तन के सुख भौन ॥ होइ गदा तें मीचु तो यामें आचरज कौन॥ दशम नवम तनु पाचएं दूखेचर में होइ ॥ भांति भांति कूटे मरै कहत सयाने कोइ ॥ ७ ॥ चंदु बीच है पाप के रुधिर कोपतें अंत ॥ देखे मंगल ताहि रवि कहत न ताको तंत ॥ ८॥ होइ चं- दु जो आठएं है शुभ ग्रह के बीच ॥ पतन हुतासन तें कहैं ता- की कवि वर मीच॥



जन्मपत्रिका

ग्रहस्पष्ट

ग्रहस्पष्ट

त्रिकोन के धाम ॥ सूरज मंगल मंद शशिशुक्रम सों करै अराम ॥ १८ ॥ उपजै ऐसे योग में ताकी वरन-
वमी चु ॥ पर्वत तें कै भीति तें गिरै परै नहि वीचु ॥ १९ ॥ चौथे सप्तम दशम नौ भू सुत सूरज मं-
द ॥ भूप कोपतें जानिये ताको होइ निकंद ॥ २० ॥ अस्यान्य योगाः ॥ कुज घर को रविकुज
सदन चंदु मंद आवास ॥ मारग मूत पुरीष को मूदें होइ विनास ॥ २१ ॥ सूरज मंगल सातएं सुख
शनिनै धन मंद ॥ वरनत जातक जान सब खग ते होइ निकंद ॥ २२ ॥ सुख सप्तम जो कर्म में मंग-
ल सूरज मंद ॥ गुदा रोग कृमि शस्त्र तेना को होइ निकंद ॥ २३ ॥ रवि कुज शनि शशि तनुतनुज
अठएं नवएं धाम ॥ गिर वरतें गिरि असन तें ताको होइ विराम ॥ २४ ॥ इति श्री महाराज कु-
मार अचल सिंहा इया त्रिपाठि शंभुनाथ विनिर्मितायां जातक चंद्रिकायां मृत्यु वि-
चारो नाम प्रकाशः ॥ १७ ॥ धनी पुत्र युत पर उपकारी ॥ उग्र सुशील वंत धुर धारी ॥ धर्मक-
र्म रत नृपको यार ॥ सुर पूजक गुन सहित उदार ॥ १ ॥ अल्प स्वल्प भोजन रुचि होइ ॥ दीरघ सं-
त विलोचन कोइ ॥ आसु प्रसन्न सूर अति कामी ॥ दुर्बल जानु बडो जग नामी ॥ २ ॥ सेवक को
दयाल अरु दाता ॥ सिर व्रण अंक विप्र को त्राता ॥ होइ होइ तरुनी को कंत ॥ संगर भीरु चपल
मति वंत ॥ ३ ॥ प्रथम वर्ष सत दूं तेरह में ॥ ज्वर प्रकोपतें जी मे सह में ॥ सो रही सत्र ही जव पुनि आवै
॥ तव विस्फोटक रोग सतावै ॥ ४ ॥ बादु सर्दु तें दूसर्दु माह जल तें भय भाषत कवि नाह ॥ वरष प-
चीसे में संतान होइ रतोंधी कहत सुजान ॥ ५ ॥ वरष वतीसे वहुरि जव आवै ॥ लागे घाउ अंग हु-

जा-चं
१२०

रव पावै ॥ कारज कहत रोसु जिय धरै ॥ जैवे कों विदेश मन करै ॥ ६ ॥ मानी आसु गमन छस अंग ॥ शुभ लक्षण समेत उत मंग ॥ जो शुभखेट विलोकहि चंद हि ॥ नवति वर्ष लों करैं आनंद हि ॥ ७ ॥ कातिक असित पक्ष जब आवै ॥ नौमी बुध श्लेषा पावै ॥ आधी राति मरै नर सोइ ॥ जो जानि चंद मेष को होइ ॥ ८ ॥ अथ वृष ॥ पुष्टतें जविन सुबुधि विहीन ॥ कामी क्रूर वक्र परवीन ॥ चिर जीवी लघु कचउ-
पकारी ॥ मात पिता गुरु भक्त विचारी ॥ ९ ॥ सभा चतुर नर पति को संगी ॥ चतुर चित्त पर दुख को भंगी ॥ पीडा प्रथम वर्ष में होइ ॥ तीजें में देखै भय कोइ ॥ १० ॥ सातें नवें वर्ष जब आवै ॥ तब विसूचिका तें
दुख पावै ॥ रुधिर वमन दशवें में जानौ ॥ बरहीं में तरु पतन बखानौ ॥ ११ ॥ होइ सर्प भय षोडश दूं-
११० में ॥ उनइस वें बहु पीडा जीमें ॥ जल भय वर्ष पचीसें लागै ॥ तीस बतीस विद्या जिय जागै ॥ १२ ॥ क-
फी सहि कुसुभ बुद्धि अपार ॥ नवति वर्ष जीवै सुकुमार ॥ नवमी माघ पक्ष उजियार ॥ नखत रोहिणी
अरु भृगु वार ॥ तादिन देहत जै नर सोइ ॥ जाकें वृष के हिमकर होइ ॥ १३ ॥ अथ मिथुन ॥ पंडित
चतुर प्रीति निरवाहै ॥ सील वंत मधु भोजन चाहै ॥ क्षीन वाक अति चंचल लोचन ॥ कामी अति कुटुं-
ब दुख मोचन ॥ ऋतु हली रति निशि दिन भावै ॥ वैस आदि बहुते सुख पावै ॥ १४ ॥ मध्य वैस में मध्य-
म रहै ॥ अंत वैस में बहु दुख लहै ॥ करै ब्याह है गुरु सुख कारी ॥ संतति स्वल्प बहुत गुनु धारी ॥ १५ ॥ व-
र्ष पांचवें तरुने भीति ॥ षोडश वें रिपु करै अनीति ॥ अष्टादशी रोग रुज होइ ॥ विषयी रहै विथा सो
होइ ॥ १६ ॥ बरष आठतीसै जब आवै ॥ मीचु समान कष्ट तब पावै ॥ सत्य धर्म रत भोगी दाना ॥ १२०

चालक चंद्रका

कामी सुभग गीत गुन ज्ञाता ॥ २८॥ शास्त्र पारंगत ना शुभ भाषी ॥ असी आयु होत हिं लिखि राखी ॥ माधव बुध समेत द्वादशी ॥ शीतल पक्ष हस्त को शशी ॥ मरै मध्य दिन में नर सोइ ॥ मिथुन राशि को जो शशि होइ ॥ २९ ॥ अथ कर्क: ॥ उपकारी बहु संग्रह कारी ॥ सहित पुत्र गुन वंत उदारी ॥ माता पिता साधु को भक्त ॥ सदा रहै तरुनी आसक्त ॥ प्रथम भाग में धन सों हीन ॥ मध्य भाग में सुख सों लीन ॥ ३० ॥ तीरथ ने मकरै पुनि अंत ॥ कहत सयाने पंडित संत ॥ मधि लिलाट मेरखा एक ॥ वाम अंग सिखि भीति अनेक ॥ ३१ ॥ माथ विथातें पीडित रहै ॥ बहु तिय बहु भार्इ सब कहै ॥ प्रिय वक्ता ताकें बहु मित्र ॥ नीको धाम रचै तिहि चित्र ॥ ३२ ॥ पहिली वर्ष अंग दुख पावे ॥ लिंग विथा तीसरी सतावें ॥ दूक तिसर्इ भुजंग भय व्यापै ॥ वत्तिसर्इ ज्वरसों तनु तापै ॥ ३४ ॥ वर्ष पचासी कै छानवैं ॥ तौलों जियै अरिन को दवै ॥ माघ मास नवमी उजियारी ॥ शुक्र सहित रोहिणी विचारी ॥ ता दिन देहु तजै नरसोइ ॥ कर्क राशि को जो शशि होइ ॥ ३५ ॥ अथ सिंह: ॥ असन वसन धनसों परिपूरन ॥ धरिइ पेट संगर में सूरन ॥ ३६ ॥ पंडित सकल कला परवीन ॥ चहैं विदेश जल हि ज्यों मीन ॥ पिंग नैन तन महा विलास ॥ संतति स्वल्प क्रोध को काल ॥ ३७ ॥ निडर शत्रु हंता सिर रोगी ॥ पहिली वर्ष भूत भौ भोगी ॥ पंचर्इ वर्ष अगिनि भय होइ ॥ सतर्इ ज्वर भाषत सब कोइ ॥ ३८ ॥ कहि विसूचिका पंद्रहर्इ में ॥ विषयी होइ सर्प भय जी में ॥ एक वीस में पीडा जानि ॥ आठ वीस अपवाद बखानि ॥ ३९ ॥ वत्तिस में पीडा बहु होइ ॥ रहै अंग में वात समोइ ॥ होइ सुशील कृपन फुर बोला ॥ जसी युद्ध में होइ अडोला ॥ जो चंद्रहि शुभ खेचर देखैं

जानकी चंद्र का

जो पाप होइ ॥ ४२ ॥ अथ द्वादशी शुक्ल ॥ द्वादशी शुक्ल कहै सुनो भाई ॥ कौन कर्म हित होती भाई ॥
पहिले पहर मरे नर सोई ॥ दीर्घ आयु अरोगता होई ॥ ४१ ॥ माघव शुक्ल द्वादशी पाई ॥ पहिले पहर मरे नर सोई ॥ दीर्घ आयु अरोगता होई ॥
तर तर्पण तिल दीजै ॥ एक सहस्र पितर सुख लीजै ॥ ४० ॥ अथवा
तहँ पितर शरीरनि मद्य जानु ॥ अथवा जौ तिल दीजै ॥ एक सहस्र पितर सुख लीजै ॥ ४० ॥ अथवा
दीजै ॥ धेनी विप्र पूजा चित धरै ॥ ३९ ॥ सर्व तहाँ नरकनि को मानु ॥ सं-
कला कृष्ण तृप्त होय ॥ होइ नारि तेहि भरतार ॥ ३८ ॥ पिता भक्ष मद्य रासी होइ ॥ संतति वधू स्वरूप
हुई कहै ॥ भोगी धेनी मृत्य दुख दई ॥ मही विच्छेदन तिहि जगी गाव ॥ वाणी कूप तड़ाग खनाव ॥ पंडित
पर गनि कहत सयाने कोइ ॥ जन्म काल कन्या शशि होइ ॥ ३७ ॥ शुभ तुला ॥ मानै जगु संप्रदेवं
सर्प भीति पुत्रहि नहिं होई ॥ एक सहस्र सतई वरते पाप ॥ होइ तीसरे चंचनसे घात ॥ ३५ ॥ चारि साधु ग्रह सं-
दिन वसुह ॥ तिसरे चर्म गृगिनि भेजानि ॥ पूर्व लोचन व्यथा वखानि ॥ ३४ ॥ नवहँ तेरहँ ज्वर होई
का सुत मूसर पुत्र ॥ धर्म धाम तिहि सम नहिं होई ॥ ३३ ॥ कन्या स्वल्प सहित सुत ॥ कंठ लिंग तिल से
शशि होइ ॥ ३२ ॥ शुभ कन्या ॥ सबहि धनी सज्जन उपकारी ॥ भक्ति विदेशी बहु गुन धारी ॥ शिव व-
स्थित पंचमी सकाम ॥ मध्य धोय सेवा को शीश ॥ ३१ ॥ यह मत भाषत मुनिवर कोइ ॥ सिंह राशि कोजो
१२३

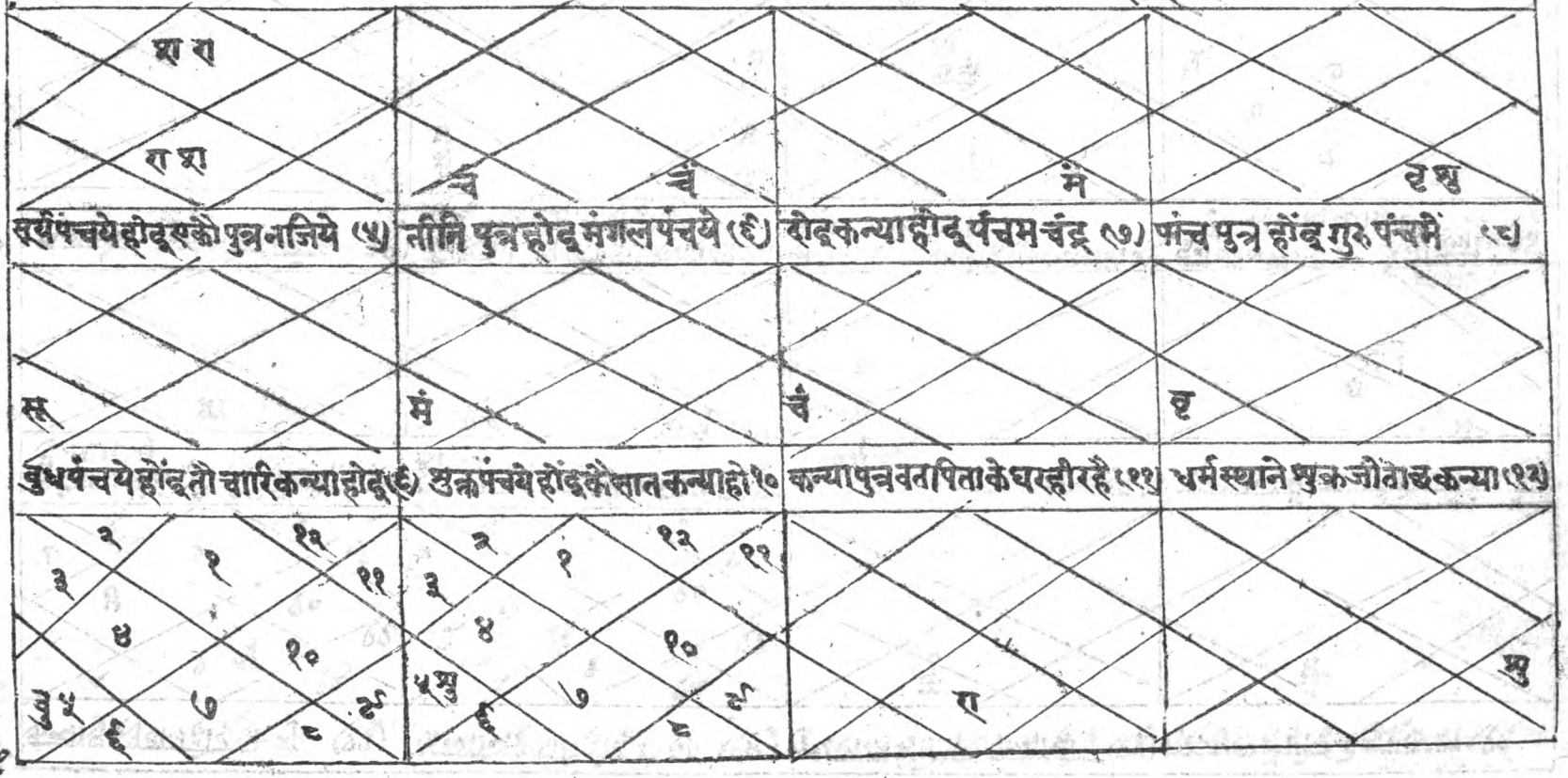
जा-चं १२७ अंग भय पुनि पैंतीसै ॥ ५५॥ नव्वे वरष जियै पुनि सोद्द ॥ सावन सित दशमी जब होद्द ॥ नखत ज्येष्ठा औ भृगुवार ॥ मरै मकर शशि कहै उदार ॥ ५६ ॥ अथ कुंभराशिः ॥ दाता मधुरान्न को भोगी ॥ धर्मकर्म रत साधु संयोगी ॥ प्रिय वक्ता सुचि क्षीन शरीर ॥ संतति स्वल्प कहै सब धीर ॥ ५७ ॥ कामी द्रव्य हीन तिय होद्द ॥ वाम दृस्त में लहु सुन होद्द ॥ पीडा पहिली वर्ष बखानि ॥ सिखि भैपंचद्दं वरही जानि ॥ ५८ ॥ अठाईसए उरग गन्न भीति ॥ अथ वांत स्कर करै अनीति ॥ असी बरष दस ऊपर जियो ॥ भादौं सुकल मंद चौथियो ॥ भरणी नखत पहर द्वै गए ॥ मरै मयंक कुंभ कौं भए ॥ ५९ ॥ अथ मीनः ॥ मानी धनी विनय युत भोगी ॥ मात पिता गुरु भक्त अरोगी ॥ रूपवंत सुर भक्त उदार ॥ सुचि सुगंध प्रिय सा लंकार ॥ ६० ॥ जल भैवर्ष पाचद्दं माद्द ॥ अठद्दं ज्वर भाषत कविनाद्द १२४ बादसद्दं में बहु दुख पावै ॥ पूरव चौदि समाद्द सिधावै । मरै कृतिं गुरु के दिन सोद्द ॥ संध्या मीन राशि शशि होद्द ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ ग्रंथ रीति लखि हम लिख्यो यह निजमति विचार ॥ मिलै अनमिलै सोजु फल जानै ईश उदार ॥ ६३ ॥ इति श्री महाराज कुमार अचल सिंह ज्ञया त्रिपाठि शंभु नाथ विनिर्मितायां जातक चंद्रिकायां चंद्र कृत निर्जान नाम प्रकाशः ॥ १८ ॥ अथ सूर्य नक्षत्र विचारः ॥ दोहा ॥ भानु भतें जनि नखत सोंगनि कीजै दूक और ॥ देहु तीनि उतमंग में कहत सुकवि सिर मौर ॥ १ ॥ तीनि वदन द्वै कंध में देहु बाहु में होद्द ॥ हाथन में द्वै पंचद्दु दि- कहत सुकवि सब कोद्द ॥ २ ॥ एक नाभि द्वक लिंग में पुनि षट दीजै जानु ॥ होद्द चरन में दीजियै पंडित १२४

जालंधर चंद्र का

करत बखानु ॥ ३ ॥ भूप होइ उत मंग मैं वदन मधुर रस स्वादु ॥ धनी कंध मैं बाहु बल विलसै भू-
बहु पादु ॥ ४ ॥ चोर होइ कर मैं परै हृदय होइ धनवंत ॥ होइ नाभि शुभ लिंग में कामी होइ अनंत
॥ ५ ॥ भूमें भरमें चतु दिशा परै जानु जो आइ ॥ थोरे दिन पाइन जिये कहत सुकवि समुदाइ ॥ ६
॥ दोहा ॥ गुनौ एक सो बीस सों नखत घटी गत जौन ॥ लीजै भानु खनंद को वर्ष जानिये तौन ॥ ७
॥ बाकी बारह सों गुनो नवति भागु पुनि लेहु ॥ वर्ष तर धरि राजये मास ताहि कहि देहु ॥ ८ ॥
शेष गुनो पुनि तीस सों नवति भाग पुनि लेहु ॥ बडे बडे कवि कहत हैं ते बासर कहि देहु ॥ ९ ॥
बहुरि शेष गुनि साठि सों लै बाही को भागु ॥ तिन को घटिका कहत हैं कनक सहित अनुरागु ॥
१० ॥ बहुरि शेष गुनि साठिसों लै बाही को भागु ॥ शेष १२० भानु में सोधिके आयु जानि जियजा-
१२५ गु ॥ ११ ॥ इति आयुर्दाय विचारः समाप्तः ॥ अथ दशा विचारः ॥ जातक मत लिखि-
ज्योतिषि नवर नीरसा अनेक ॥ सरल जानि मैं योगिनी वरनी सहित विवेक ॥ १२ ॥ प्रथम मंगला
पिंगला धान्या कहत विचारि ॥ बहुरि भ्रामरी भद्रिका उल्का पुनि निरधारि ॥ १३ ॥ सिद्धा कहिए
सातईं बहुरि संकटा नाम ॥ कहत जानि जामल मतौ जिनकी मति अभिराम ॥ १४ ॥ एक दोइ त्रि-
य चारि सर षट मुनि वरषैं आठ ॥ मंगलादि परिमान यहु कहत सुकवि जनि पाठ ॥ १५ ॥ सोम सू-
र्य गुरु भूतनय बुध शनि शौ भृगु राहु ॥ मंगलादि स्वामी सबै भाषत सहित उछाहु ॥ १६ ॥ जनम
होइ जा नखत में तासें तीनि मिलाइ ॥ आठ भाग सौं शेष जो मंगलादि है जाइ ॥ १७ ॥ दिवसा

निहंति दंपत्योरेकेनास्त्यत्र संशयः॥ १०॥ लग्नेव्ययेचतुर्थेचपंचमेसप्तमेग्रहाः॥ पतिवंध्या भवेन्नारी नरो वंध्यो भवेत्सतिः॥ ११॥

पति म्रियते वर्ष सातये ७ (१) पति म्रियतेवर्ष आठयें ८ (२) गर्भजाद्दुखीरहैस्त्रीका ग्रह (३) संतान नजिये (४)



सूर्यपंचयेहोंद्पुत्रनजिये (५) तीनि पुत्रहोंद्मंगलपंचये (६) दोदकन्याहोंद्पंचमचंद्र (७) पंच पुत्र होंद्गुरुपंचमें (८)

बुधपंचयेहोंद्तौ चारिकन्याहोंद्(९) शुक्रपंचयेहोंद्कौसातकन्याहो(१०) कन्यापुत्रवतपिताकेघरहीरहै (११) धर्मस्थानेशुक्रजोतोछकन्या (१२)

जातक चंद्रका

कन्यासुरूपवानहोवै ल० शु० (१३) कन्याअहंकारीहोवै मं० ल० (१४) बुधलग्नमेंतोवंशकन्याहोवै (१५) गुरुलग्नमेंहोवैतोशुद्धकन्या (१६)



शनिलग्नमेंहोवैतोदरिद्रिनीहोवै दुर्भगाहोवै (१७) एकस्थानमेंएकग्रहपरैतोधिनवैसुपुत्र कष्टितरहै (१८) दूनस्थानमेंएकग्रहपरैवोवापसुर दोनोमरैं (१९) दूनस्थानमेंएकग्रहपरैतोस्त्री रंडाहोवै (२०)



१२८ कुलदोषकरैकुचालिनीहोवै (२१) दूनस्थानमेंमंगलकर्कराशिमा होवैतोदूच्छाचारीहोवै (२२) लग्नकेसातयेपापग्रहहोवैअथवा चंद्रमाकेसतयेस्त्रीदुःखरहै (२३) दूनघरमेंनवग्रहपरैतो स्त्री पुरुषसोनोवंध्याहोवै (२४)



इतिश्रीमहाराजकुमारश्रचन्नसिंहाज्ञयात्रिपाठिशंभुनाथविनिर्मिता जातकचंद्रि- १२९
का समाप्तः॥
लि० वैजनाथगुर्जरब्राह्मण॥ संवत् १९३२॥

जातक चंद्रिका

